सेन्ट्रलाइट CENTRALITE

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

केवल आंतरिक परिचालन के लिए

खंड / Vol. 47 अंक - 01

जून 2024 / June 2024

विशेष आकर्षण
माननीय कार्यपालक निदेशक
श्री एम वी मुरली कृष्णा
जी का साक्षात्कार
प्रश्न मंच एक – इनाम अनेक

विशेष आकर्षण:
पर्यावरण रक्षा
भविष्य की सुरक्षा

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2024 के अवसर पर दिनांक 21 जून 2024 को केन्द्रीय कार्यालय मुंबई में आयोजित योग दिवस कार्यक्रम में योग करते हुए माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम वी राव, कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही, श्री एम वी मुरली कृष्णा एवं श्री महेन्द्र दोहरे.

योग प्रशिक्षकों को सम्मानित करते हुए माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम वी राव.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही गृह-पत्रिका
A Quarterly House - Journal of Central Bank of India

प्रकाशन तिथि - 14 अगस्त, 2024 • खंड / Vol. 47 - 2024 • अंक - 1 • जून / June 2024

.. न हि ज्ञानेन सदृशं ..

संपादक
पॉपी शर्मा

संपादक मंडल
वास्ती वेंकटेश
एस. के. गुप्ता
एस. एच. अय्यूबी
राजीव वार्ष्णेय

संपादकीय सहायक
संजय भट्ट
अनिता धुर्वे

Editor
Poppy Sharma

Editorial Board
Vasti Venktesh
S. K. Gupta
S. H. Ayubi
Rajiv Varshney

Editorial Assistant
Sanjay Bhatt
Anita Dhurve

ई-मेल / E-mail
centralite1982@gmail.com

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं से बैंक का सहमत होना आवश्यक नहीं है.
Articles Published in this magazine does not necessarily contain views of the Bank.

विषय-सूची / CONTENTS

माननीय प्रबंधक निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश 4
माननीय कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही का संदेश 5
माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम. वी. मुरली कृष्णा का संदेश 6
माननीय कार्यपालक निदेशक श्री महेंद्र दोहरे का संदेश 7
संपादकीय 8
माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम वी मुरली कृष्णा जी का साक्षात्कार 9
अवसाद (डिप्रेशन -Depression) एक मानसिक स्वास्थ्य समस्या 12
मंज़िल 14
प्राचीन से नवीन बैंकिंग की ओर 15
योग से निरोग 16
ईएसजी : पर्यावरण रक्षा भविष्य की सुरक्षा 17
ईएसजी: पर्यावरण रक्षा भविष्य की सुरक्षा 19
योग दिवस: केन्द्रीय कार्यालय मुंबई 20
पर्यावरण रक्षा भविष्य की सुरक्षा 21
पर्यावरण संरक्षण का अर्थ है पर्यावरण की गुणवत्ता में सुधार 23
''उम्र'' 25
हरित क्षितिज: टिकाऊ विकास के लिए ईएसजी का महत्व 26
पदोन्नति 29
संगठन की सामूहिक शक्ति 30
ईएसजी (ESG) : परिवर्तन के पथ पर बेहतर पहल 32
कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईएसजी का महत्व वर्तमान एवं भविष्य 36
सेवानिवृत्ति 38
प्रकृति को संजोना क्यों आवश्यक है 39
अरूणाचल प्रदेश के प्रमुख दर्शनीय स्थल 42
धन-शोधन निवारण एवं आतंकवादी वित्तपोषण पर रोकथाम 45
क्या है डिजिटल हाउस अरेस्ट? घर पर होंगे कैद और साफ हो जाएगा आपका बैंक अकाउंट 46
अभिनंदन 47
मातृभाषा में शिक्षा का महत्व 48
व्यापार में भाषा - भाषा से व्यापार 49
माउंट आबू: राजस्थान का हिल स्टेशन 51
ESG 53

डिज़ाइन, संपादन तथा प्रकाशन : सुश्री पॉपी शर्मा, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, चन्दरमुखी, नरीमन पॉईंट, मुंबई - 400 001 के लिए तथा उनके द्वारा उचीथ ग्राफिक प्रिंटर्स प्राईवेट लिमिटेड. आइडियल इंडस्ट्रीयल इस्टेट, मथुरादास मिल्स कंपाऊंड, सेनापती बापट मार्ग, लोअर परेल, मुंबई - 400 013.
Designed, Edited and Published by Ms. Poppy Sharma for Central Bank of India, Chandermukhi, Narimanpoint, Mumbai - 400 001
Designed and Printed by him at Uchitha Graphic Printers Pvt. Ltd. 65, Ideal Industrial Estate, Mathuradas Mills Compound, Senapati Bapat Marg, Lower Parel, Mumbai - 400 013.

माननीय प्रबंधक निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम मैं आप सबको आगामी पर्वों हेतु हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं साथ ही हमारे बैंक द्वारा वर्ष 2024-25 की पहली तिमाही अर्थात जून 2024 के दौरान दर्शाए गए शानदार प्रदर्शन एवं ऐतिहासिक परिणामों के लिए भी हार्दिक बधाई देता हूं.

भारत का प्रथम पूर्ण स्वदेशी बैंक सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया देश का एक अग्रणी व्यवसायिक बैंक है जो निरंतर सर्वश्रेष्ठ ग्राहक सेवा प्रदान कर रहा है साथ ही पर्यावरण संरक्षण के प्रति भी अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है. इसके तहत हमने काफी समय पहले अपने कार्यालयों का पूर्ण डिजिटलीकरण किया था, जिससे कागज पर हमारी निर्भरता काफी हत तक कम हो गई. इसके अतिरिक्त हम अपनी गृह पत्रिकाओं को ई-पत्रिकाओं के रूप में प्रकाशित कर रहे हैं, ताकि कागज के उपयोग को कम किया जा सके.

हम अपने मूल्यवान ग्राहकों को सेन्ट मोबाईल, नेट बैंकिंग, यूपीआई, सेन्ट एम-पासबुक जैसे प्लेटफार्मों के माध्यम से कभी भी, कहीं भी, बिना शाखा में गए उनकी बैंकिंग सेवाओं की आवश्यकतों को पूरा करने के लिए अपनी डिजिटलीकृत बैंकिग सेवाएं प्रदान करते हैं, जो न केवल ग्राहकों को सुविधा जनक हैं बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी सकारात्मक योगदान करती है.

चूंकि प्रत्येक सेन्ट्रलाइट हमारे बैंक के स्वर्णिम गौरव को फिर से प्राप्त करना चाहता है, अत: उत्कृष्ट ग्राहक सेवा प्रदान करना आवश्यक है जो कि शीर्ष पर पहुंचने का आधार भी है. हमारी प्रगति एवं एक बेहतर बैंक को बेहतरीन बैंक में बदलने के लिए व्यवसाय बढ़ोतरी अत्यंत महत्वपूर्ण है. प्रत्येक सेन्ट्रलाइट को अधिकतम व्यवसाय प्राप्त करने के लिए कोई कसर नहीं छोड़नी चाहिए. इसके अलावा मैं सभी सेन्ट्रलाइट से कागज, प्लास्टिक, बिजली और पानी के उपयोग को कम करने और पर्यावरण संरक्षण में योगदान करने का आग्रह करता हूं.

हमने वर्ष 2028 तक स्कोप ६ में नेट जीरो हांसिल करने की भी घोषणा की है.

''पर्यावरण संरक्षण में योगदान दें
कागज का प्रयोग कम से कम करें.''

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(एम.वी. राव)
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

आप सभी को आने वाले पर्वों के लिए मेरी मंगलकामनाएं.

सर्वप्रथम हमारे माननीय एमडी एवं सीईओ सर के कुशल नेतृत्व में बैंक द्वारा जून 2024 तिमाही में दर्शाए गए शानदार कार्यपरिणामों के लिए मैं आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूं.

अब हमारा बैंक निरंतर उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए विकास के पथ पर तेजी से आगे बढ़ रहा है. बैंक निरंतर तकनीकी अपग्रेडेशन कर रहा है जिससे हमारे ग्राहकों को सुविधा हो. हमारा बैंक यह भी प्रयास कर रहा है कि हमारे ग्राहकों को अधिकतम बैंकिंग कार्य डिजिटल रूप में उपलब्ध हो जिससे वे 24ङ7 कभी भी कहीं से भी निर्बाध बैंकिंग सेवाएं प्राप्त कर सकें. डिजिटल सेवाओं का एक लाभ यह भी है कि इसमें कागज का उपयोग नहीं होता है अर्थात डिजिटल सेवाएं हमारे पर्यावरण के अनुकूल होती हैं.

हमारा बैंक राष्ट्र एवं समाज के प्रति, अपने कर्तव्यों के प्रति पूरी तरह जागरुक है तथा अपनी पृथ्वी को पर्यावरण एवं प्रदूषण से बचाने हेतु अधिकतम संभव प्रयास करने के लिए दृढ़ संकल्प है. हम सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की ओर से पर्यावरण के प्रति अपने कार्मिकों को लगातार जागरूक कर रहे हैं. हम अपने ग्राहकों को भी पर्यावरण संरक्षण एवं प्रदूषण उन्मूलन के प्रति जागरुकता का प्रसार कर रहे हैं. हमारा उद्देश्य है कि हमारे सभी कार्यालय भी पर्यावरण अनुकूल हों तथा प्रदूषण मुक्त हों.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(विवेक वाही)
कार्यपालक निदेशक

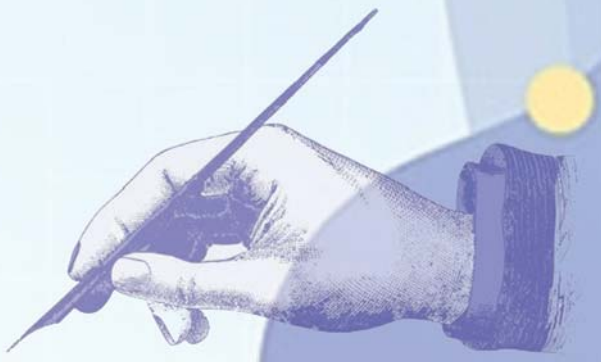

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम. वी. मुरली कृष्णा का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

मैं अपने संदेश के प्रारंभ में हमारे सम्माननीय एमडी एवं सीईओ श्री एम वी राव के दूरदर्शी नेतृत्व में बैंक द्वारा जून 24 में दर्शाए गए शानदार कार्यपरिणामों के लिए उनके प्रति आभार व्यक्त करते हुए आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूं.

वर्तमान युग तकनीक का युग है. बैंकिंग क्षेत्र में भी लगातार नयी-नयी तकनीक आ रही है. यह तकनीक हमारी ग्राहक सेवा को और अधिक बेहतर बनाने में तो महत्वपूर्ण है ही बल्कि हमारे लिए भी उपयोगी होती है. इसी लिए सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया लगातार नवीनतम तकनीकी उपयोग में ला रहा है. वास्तव में हम पारंपरिक बैंकिंग के साथ डिजिटल बैंकिंग को लेकर आगे बढ़ रहे हैं.

डिजिटल बैंकिंग ग्राहकों को अत्यधिक सरल एवं सुलभ होने के कारण निरंतर लोकप्रिय होती जा रही है. डिजिटल बैंकिंग के अधिकाधिक उपयोग का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि यह पर्यावरण अनुकूल एवं प्रदूषणरहित तकनीक है जो वर्तमान विश्व के लिए बहुत अधिक आवश्यक है. यह हमारे भारत देश के लिए भी लाभकारी है.

यह अपेक्षित है कि प्रत्येक सेन्ट्रलाइट स्वयं भी डिजिटल बैंकिंग का उपयोग करे साथ ही अपने अधिक से अधिक ग्राहकों को भी डिजिटल बैंकिंग का उपयोग करने को प्रेरित करे. अपने ग्राहकों से विनम्रतापूर्वक व्यवहार करें, ग्राहक सेवा को बेहतर करें, तथा बैंक के व्यवसाय को बढ़ाने में अपना अधिकतम योगदान दे.

आने वाले पर्वों एवं उत्सवों हेतु मंगलकामनाएं.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(एम वी मुरली कृष्णा)
कार्यपालक निदेशक

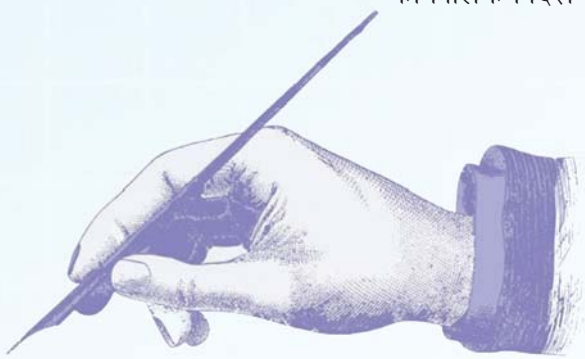

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री महेंद्र दोहरे का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम मैं आगामी पर्वों की हार्दिक बधाई देते हुए अभी-अभी घोषित जून 2024 की तिमाही के लिए हमारे बैंक के शानदार कामकाजी परिणामों के लिए भी आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूं.

वर्तमान प्रतिस्पर्धी बैंकिंग के दौर में हमारे जागरूक ग्राहक हमसे बेहतर और नवीनतम बैंकिंग सुविधाओं की अपेक्षा करते हैं. हमारा बैंक नियमित रूप से अपनी बैंकिंग प्रणाली को वर्तमान तकनीक से अपग्रेड करते हुए नवीनतम तकनीक से जोड़ता जा रहा है जिससे हमारे ग्राहक उत्कृष्ट डिजिटल बैंकिंग सुविधाओं का लाभ उठा सकें. आप जानते ही हैं कि डिजिटल बैंकिंग पर्यावरण के अनुकूल भी है.

वास्तव में हमारे प्रत्येक कार्य का पर्यावरण पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है. स्वच्छ पर्यावरण, सामाजिक दायित्व तथा सुशासन की अनुपस्थिति में सतत विकास की कल्पना भी करना असंभव है. प्रत्येक व्यक्ति का उत्तरदायित्व है कि वो आगामी पीढ़ियों हेतु एक सुनहरे भविष्य के निर्माण में अपना अधिकतम संभव योगदान प्रदान करे.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया में हम लगातार अपने नेट जीरो के लक्ष्य के प्रति कार्यरत हैं. हम केवल व्यवसायिक बैंक के रूप में ही सीमित नहीं रहना चाहते हैं. हम आगामी कई पीढ़ियों के बैंक बने रहना चाहते हैं. हम लगातार कागज का उपयोग कम करते जा रहे हैं, और डिजिटल डिलिवरी चैनलों को और अधिक सशक्त तथा सहज करते जा रहे हैं. हमारे स्टाफ सदस्यों में सतत विकास की जागरूकता के लिए इस संदर्भ में प्रशिक्षण तथा कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है. हम लगातार स्टाफ सदस्यों के साथ मिलकर वृक्षारोपण, सफाई अभियान तथा पर्यावरण के प्रति जागरूकता हेतु विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजनों को कार्यान्वित कर रहे हैं.

सभी सेन्ट्रलाइट प्रदूषण नियंत्रण तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रति कार्य करते हुये अपने देश तथा बैंक की प्रगति में अपना योगदान कर सकते हैं.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(महेंद्र दोहरे)
कार्यपालक निदेशक

संपादकीय

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियों,

सर्वप्रथम आगामी पर्वों उत्सवों एवं त्यौहारों हेतु हार्दिक शुभकामनाएं

माननीय एमडी एवं सीईओ सर तथा तीनों कार्यपालक निदेशकों के सक्षम नेतृत्व में हमारे प्रिय बैंक ने वर्ष 2024-25 की प्रथम तिमाही के दौरान शानदार परिणाम दर्शाए हैं. मैं बैंक के सर्वोच्च प्रबंधन के प्रति आभार व्यक्त करती हूं तथा सार्थक प्रयासों के लिए आप सभी सदस्यों को बधाई देती हूं.

आप सभी से अपने कार्यालय के कार्य वातावरण पर अतिरिक्त ध्यान दिया जाना अपेक्षित है, कार्यालयीन नियमों का अनुपालन करें. बैंक अब प्रगति के पथ पर अग्रसर है बैंक की प्रगति में हम सभी का अधिकतम योगदान आवश्यक है. इसीलिए सभी स्टाफ सदस्यों में परस्पर सदभावना विकसित करना भी हमारी जिम्मेदारी है. अनैतिक गतिविधियों को उच्च प्रबंधन के संज्ञान में लाएं.

हमारे बैंक द्वारा स्टाफ सदस्यों हेतु कई स्वास्थ्य संबंधी योजनाएं चलाई जा रही हैं उनसे लाभान्वित हों. इन सभी योजनाओं का उद्देश्य बैंक के कर्मचारियों का समग्र विकास है. एक स्वस्थ कर्मचारी ही अच्छी ग्राहक सेवा प्रदान कर सकेगा. अच्छी ग्राहक सेवा ही हमारे बैंकिंग व्यवसाय को लाभान्वित करेंगी. बैंकिंग सेवा क्षेत्र है, जहां हमारी उत्कृष्ट सेवाएं ही हमारा सर्वोत्तम विज्ञापन है. हम सभी हमारे बैंक को अच्छे बैंक से महान बैंक की ओर ले जाने के लिए कार्य करें.

हम सभी स्वच्छ वातावरण में रहना चाहते हैं, हम सभी चाहते हैं कि हमारा पर्यावरण सुरक्षित हो. हम प्रदूषण मुक्त वातावरण में रहें. स्वच्छ हवा और स्वच्छ जल प्राप्त करें. हम सब यह भी चाहते हैं कि हमारी नदियां और झीलें तथा हमारे तालाब स्वच्छ हों, हमारे पहाड़ एवं पर्यटन स्थल साफ सुथरे हों. नगर स्वच्छ हों, गांव स्वच्छ हों. वास्तव में हमारे पर्यावरण का संरक्षण हमारी नैतिक जिम्मेदारी है. इस क्रम में हमारे बैंक द्वारा देशभर में लगातार वृक्षारोपण तथा स्वैच्छिक सफाई अभियान चलाए जा रहे हैं.

हमारे बैंक द्वारा बैंकिंग प्रणाली को निरंतर डिजिटल रूप में परिवर्तित किया जा रहा है. डिजिटल बैंकिंग हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है तथा ग्राहकों के लिए सुविधाजनक भी है. इसके अतिरिक्त यह प्रणाली पर्यावरण के अनुकूल भी है. आप सब से भी अपेक्षित है कि अपने-अपने स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के उपाय करते रहें.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(पॉपी शर्मा)
महाप्रबंधक - राजभाषा

माननीय कार्यपालक निदेशक

श्री एम वी मुरली कृष्णा जी का साक्षात्कार

1. सर, अभी-अभी जून 2024 तिमाही के कार्यकारी परिणाम घोषित हुए हैं. इस पर आप क्या कहना चाहेंगे?

श्री एम वी मुरली कृष्णा: मैं सहर्ष कह सकता हूं कि बैंक ने एक तिमाही में रु. 880 करोड़ रुपये का अपना अभी तक का सर्वाधिक लाभ दर्ज किया है. सकल एनपीए 41 बीपीएस के सुधार के साथ , 4.95% से 4.54% हो गया है और शुद्ध एनपीए 0.73% हो गया है, जिसमें 1.75% वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 102 बीपीएस का सुधार हुआ है.

सीडी अनुपात में 30 जून 2023 से 452 बीपीएस का सुधार दर्ज करते हुए 65.27% तक सुधर गया है तथा कासा जमा 4.87% की वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि सहित कुल जमा में 49.19% हो गया है.

रैम व्यवसाय में वार्षिक आधार पर 18.81 प्रतिशत की वृद्धि हुई. खुदरा, कृषि और एमएसएमई में क्रमश: 13.87%, 15.36% और 30.20% की वृद्धि हुई है.

बैंक का सुदृढ़ वित्तीय कार्यनिष्पादन परिसंपत्ति गुणवत्ता, तकनीकी प्रगति तथा ग्राहक-केंद्रित दृष्टिकोण पर रणनीतिक ध्यान देने के फल स्वरुप हुआ है.

इस प्रकार के अत्युत्तम परिणामों का श्रेय हमारी टीम सेन्ट्रलाइट को जाता है जिसमें प्रत्येक सेन्ट्रलाइट ने अपना योगदान दिया है.

2. सर विगत दिनों में बैंक ने अपने कार्मिकों के हित में कई कार्य किये हैं. इस संबंध में आपके विचार?

श्री एम वी मुरली कृष्णा: हमारे कर्मचारियों का कल्याण हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है. विभिन्न दृढ़ सहबद्धता एवं कल्याण पहलों के माध्यम से, हम यह सुनिश्चित करते हैं कि हमारा कार्यबल प्रेरक, स्वस्थ और उत्पादक बना रहे. हम अपने शारीरिक, मानसिक और वित्तीय स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए प्रारंभ की गई विभिन्न पहलों और कार्यक्रमों के माध्यम से अपने कर्मचारियों के कल्याण और कार्य एवं जीवन के मध्य संतुलन बनाने रखने पर अत्यधिक जोर देते हैं. इस संबंध में हाल ही में, हमने निम्नलिखित कदम उठाए हैं: -

- शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए ऑनलाइन योग सत्र.
- 24⁄7 टेली-मेडिकल परामर्श.
- मानसिक स्वास्थ्य के लिए कर्मचारी सहायता कार्यक्रम (ईएपी)
- कैंटीन सब्सिडी
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों वाले कर्मचारियों के लिए सहायता
- खेल, सांस्कृतिक और मनोरंजक गतिविधियों के लिए धन
- रिवर्स मेंटरशिप कार्यक्रम
- प्रभावित कर्मचारियों के लिए बाढ़ राहत ऋण
- 75 वर्ष से अधिक आयु के सेवानिवृत्त कर्मचारियों और मृतक कर्मचारियों के परिवारों के लिए अनुग्रह राशि भुगतान की शुरुआत की गई

3. सर, राजभाषा विभाग आपके अधीन है. राजभाषा विभाग के संबंध में आपके विचार.

श्री एम वी मुरली कृष्णा: हमारा राजभाषा विभाग बहुत अच्छा काम कर रहा है, विगत वर्ष हमारे बैंक को भारत सरकार का प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति पुरस्कार मिला था.

इसके अतिरिक्त देश भर में अन्य पुरस्कार एवं सम्मान नियमित रूप से प्राप्त हो रहे हैं. मैं हमारे बैंक के सभी राजभाषा अधिकारियों की लगन एवं कड़ी मेहनत की सराहना करता हूँ.

4. बैंक गैर ब्याज आय बढ़ाने के लिए प्रयासरत है. इस पर आप क्या कहना चाहते हैं?

श्री एम वी मुरली कृष्णा: शुल्क आधारित आय राजस्व उत्पन्न करने का एक अन्य महत्वपूर्ण स्रोत है जिसमें खाता रखरखाव, एटीएम शुल्क, डिजिटल बैंकिंग सेवाएं, धन प्रबंधन सेवाएं, बैंकएश्योरेंस , गैर-निधि आधारित व्यवसाय आदि शामिल हैं. बैंक के पास समर्पित बैंकएश्योरेंस सेल है जो जीवन, गैर-जीवन और स्वास्थ्य बीमा उत्पादों के वितरण का प्रबंधन करता है, इन गतिविधियों से प्राप्त कमीशन की आय अर्जित करता है. इसके अतिरिक्त, बैंक मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड के साथ गठजोड़ करके 3 इन 1 ई-ट्रेडिंग सुविधा भी प्रदान कर रहा है. वर्तमान में, बैंक सेन्ट्रल डिपॉजिटरी सर्विसेज लिमिटेड (सीडीएसएल) से सहबद्ध होकर एक डिपॉजिटरी पार्टिसिपेंट है. व्यावसायिक संभावनाओं को देखते हुए बैंक एन.एस.डी.एल के साथ भी गठजोड़ करने की इच्छा रखता है. इसके अलावा, गैर-निधि आधारित पोर्टफोलियो को बढ़ाने के लिए, बैंक ने अपने ग्राहकों के लिए ई-बीजी सुविधा शुरू की है.

इन पहलों का कार्यान्वयन पारंपरिक ब्याज आय के अतिरिक्त अपनी आय के आधार का विस्तार करने की बैंक की प्रतिबद्धता दर्शाता है.

5. ईच वन फेच वन ईच अभियान की प्रगति पर आप क्या कहना चाहते हैं?

श्री एम वी मुरली कृष्णा: इस अभियान का उद्देश्य हमारे सभी सेन्ट्रलाइट को व्यवसाय वृद्धि में भागीदार बनाना है. अब, हमने 01 अगस्त 2024 से 15 सितंबर 2024 तक ई.ओ.एफ.ओ. का पांचवा अभियान प्रारंभ किया है. मैं सभी सेन्ट्रलाइट से इस अभियान में सक्रिय रूप से भाग लेने और बैंक के व्यवसाय वृद्धि में योगदान देने की अपील करता हूँ.

6. बैंक की प्रगति के लिए आपकी क्या योजना है?

श्री एम वी मुरली कृष्णा: हमारे आदरणीय एमडी एवं सीईओ के पास बैंक के लिए एक विजन है तथा उनके निर्देशन में हम बैंक को उसका पुराना गौरव वापस दिलाने के लिए बेहतर भविष्य की योजना बना रहे हैं.

बैंक परिचालन दक्षता बढ़ाने, ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाने और डिजिटल बैंकिंग सेवाओं में वृद्धि करने के लिए अपने तकनीकी बुनियादी ढांचे में सक्रिय रूप से बदलाव कर रहा है.

इसके अतिरिक्त, बैंक ने ग्राहक-केंद्रित दृष्टिकोण के साथ ऋण उत्पादों को सुव्यवस्थित करने के लिए डिज़ाइन किया गया डिजिटल लेंडिंग प्लेटफ़ॉर्म लॉन्च किया है, जिससे टर्नअराउंड समय में उल्लेखनीय कमी आई है. बैंक ने तत्समय प्रतिसाद, उत्कृष्ट ग्राहक सेवा और गुणवत्ता आश्वासन पर ध्यान केंद्रित करते हुए एक अत्याधुनिक एकीकृत ग्राहक सेवा केन्द्र स्थापित किया है.

ये सभी पहलें बैंक को अच्छे बैंक से महान बैंक बनने में सहायक होंगी.

7. को-लेंडिंग के क्षेत्र में हमारा बैंक पायोनियर माना जाता है. इसकी और अधिक प्रगति के लिए आपकी क्या योजना है?

श्री एम वी मुरली कृष्णा: सही बात है कि, हमारा बैंक को-लेंडिंग के क्षेत्र में अग्रणी है. हम 26 एन.बी.एफ.सी कंपनियों के साथ गठजोड़ कर रहे हैं और आने वाले दिनों में गठजोड़ की संख्या में और वृद्धि होगी. मार्च 2025 तक, हम 50 एन.बी.एफ.सी के साथ गठजोड़ करने की आकांक्षा रखते हैं.

8. कॉम्पिटेटिव बैंकिंग के दौर में सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया को आप किस तरह देखते हैं?

श्री एम वी मुरली कृष्णा: हमारा बैंक प्रगति के पथ पर अग्रसर है तथा देशभर के सभी सेन्ट्रलाइट बैंक की प्रगति से बहुत उत्साहित हैं.

भविष्य के लिए तैयार संगठन बनाने की हमारी रणनीति के रूप में, हमने अपनी डिजिटल यात्रा की दिशा में अच्छी प्रगति की है. हमारी डिजिटल परिवर्तन पहलों, विशेष रूप से सेंट नियो के माध्यम से, ग्राहक सेवा और परिचालन दक्षता को बढ़ाने के लिए जेन-एआई (उाहर्ि) जैसी अत्याधुनिक तकनीकों को एकीकृत करके बैंकिंग अनुभव में क्रांतिकारी परिवर्तन किया है.

जो व्यक्ति अपने मार्ग से भटक जाता है, वह विनाश के रास्ते पर निकल जाता है.

हम सर्वोत्तम बैंकिंग सेवाएँ प्रदान करने और बैंकिंग क्षेत्र में अग्रणी बने रहने का प्रयास कर रहे हैं. हमें बड़ी संख्या में ग्राहक आधार के साथ कासा वृद्धि पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है, कासा को मजबूत करने के लिए क्रॉस सेल और अप सेल किया जाना चाहिए.

9. सेन्ट्रलाइट पत्रिका में विगत दिनों बहुत सारे परिवर्तन किए गए. आप इस पत्रिका के वर्तमान स्वरूप पर क्या कहना चाहेंगे?

श्री एम वी मुरली कृष्णा: हमारी गृह पत्रिका 'सेन्ट्रलाइट' एक ऐतिहासिक मैगजीन है और इसमें हाल ही में किए गए परिवर्तन तथा नए कॉलम अच्छे एवं आकर्षक हैं. आशा है कि सभी सेंट्रलाइट्स बदलावों की सराहना करेंगे.

10. बैंक ग्राहक सेवा और बेहतर करने के लिए क्या कदम उठा रहा है?

श्री एम वी मुरली कृष्णा: हम दिन-प्रतिदिन अपनी ग्राहक सेवा में सुधार कर रहे हैं. हमारा लक्ष्य प्राप्त होनेवाली शिकायतों को शून्य करना है. किसी शिकायत के आने पर हम सुदृढ़ शिकायत निवारण तंत्र अपनाते हैं. हम अपनी सभी शिकायतों का समाधान एक निश्चित समय सीमा में करते हैं. मैं अपने ग्राहकों से यह भी आग्रह करता हूँ कि वे तीव्र और निर्बाध बैंकिंग सेवाओं के लिए डिजिटल चैनल अपनाएँ.

इसके अलावा, जैसा कि मैंने अभी बताया कि है, हमने एकीकृत ग्राहक सेवा केन्द्र की स्थापना की है और ग्राहक सेवा के लिए एक सहज स्मरणीय नंबर (1800 30 30) प्रदान किया है. आईसीसी कॉल/वॉयस, आईवीआर, चैट और चैटबॉट , व्हाट्सएप लाइव चैट, सोशल मीडिया, ईमेल/वेब फॉर्म आदि सहित विभिन्न संचार चैनल प्रदान करता है.

11. बैंक के विकास में आप कर्मचारियों की भूमिका पर क्या कहना चाहते हैं?

श्री एम वी मुरली कृष्णा: हमने हमेशा अपने कर्मचारियों को अपनी सबसे बड़ी आस्ति माना है और वे बैंक के लक्ष्य को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. हमारे कर्मचारी अच्छा काम कर रहे हैं. मैं उनके प्रदर्शन और बैंक के कायाकल्प के प्रति समर्पण की सराहना करता हूँ और कहना चाहूँगा कि ठअच्छा काम करते रहेंठ.

12. आप सभी सेन्ट्रलाइट्स को क्या संदेश देना चाहेंगे

श्री एम वी मुरली कृष्णा: सभी सेन्ट्रलाइट अच्छा काम कर रहे हैं और उन्हें मेरा संदेश है:-

- सर्वोत्तम ग्राहक सेवा प्रदान करें और कासा आधार में सुधार करें.
- परिवर्तन को अपनाएं - चूंकि बहुत सारी डिजिटल पहल शुरू की जा रही हैं.
- ग्राहक संतुष्टि और मूल्य सृजन के लिए प्रतिबद्ध रहें.
- सदैव सतर्क रहें तथा यह सुनिश्चित करें कि सभी प्रक्रिया एवं पद्धतियों का पालन किया जा रहा है. किसी भी अनियमितता होने पर निर्भीक होकर अलर्ट भेजा जाना चाहिए.
- ग्राहक सेवा, सेन्ट रक्षक , लाभप्रदता (सीआरपी) का एक नियम के रूप में पालन करना.

अवसाद (डिप्रेशन -Depression) एक मानसिक स्वास्थ्य समस्या

क्या आपको ऐसा भ्रम होता है कि कोई आपके बारे मे बात कर रहा है, कोई आपकी बात छुप कर सुन रहा है, कोई आपकी तरफ देख के किसी और से बात कर रहा है. क्या अतार्किक और नकारात्मक विचार आपके मन में बार - बार आ रहे हैं, क्या आपको अकेले रहने में ज्यादा अच्छा लगता है. क्या आप ऐसी आवाजें सुन रहे हैं, ऐसी आकृति देख रहे हैं, ऐसी गंध महसूस कर रहे हैं जो दूसरे व्यक्ति उसी जगह पर न देख पा रहे , न सुन पा रहे हैं, न ही महसूस कर पा रहे हैं. क्या आपके चेहरे पर भावनात्मक अभिव्यक्ति की कमी दिख रही है , बोलते या बात करते समय शब्द नहीं मिल रहे हैं. आप उन गतिविधियों मे आनंद महसूस नहीं कर रहे हैं जो कभी आपके लिए आनंददायक हुआ करती थीं. एकाग्रता की कमी, याददस्त मे कमी , समाज से, दोस्तों से, परिवार के अन्य लोगों से दूरी बनाए रखना, स्वयं से बात करना बुद बुदाना , खुद को या दूसरे को हानि पहुँचने का विचार आना - अगर ऐसा कोई भी असामान्य लक्षण आपके अंदर है या धीरे धीरे विकसित हो रहा है तो इसे हल्के मे न लें तुरंत आपको किसी मनोचिकित्सक (Psychiatrist) या क्लिनिकल साइकोलोजिस्ट (Clinical Psychologist) से परामर्श करना चाहिए, संभवत: आप किसी न किसी प्रकार के मनोरोग (Mental Illness) के शिकार हो रहे हैं. वैसे तो मनोरोग कई प्रकार के होते हैं जिसपर आने वाले अंकों मे चर्चा करेंगे, आज हम अवसाद (डेप्रेशन) के बारे मे बात करेंगे.

अवसाद एक मानसिक स्वास्थ्य समस्या है यह एक गंभीर स्तर की मानसिक बीमारी है जो व्यक्ति के व्यक्तिगत, पेशेवर, और सामाजिक जीवन को प्रभावित कर सकती है. अवसाद एक जटिल और व्यापक मानसिक स्वास्थ्य स्थिति है जिससे दुनिया भर में करोड़ों लोग प्रभावित हैं. संयुक्त राष्ट्र बाल कोष (UNICEF) द्वारा किए गए सर्वे की अनुसार भारत मे 15 से 24 वर्ष की आयु के लगभग 14% लोग अवसाद से ग्रसित हैं. हाल के अध्ययनों से संकेत मिलता है कि भारत में युवाओं में अवसाद की दर लगातार बढ़ रही है और इसकी व्यापकता दर 31₹ से 57₹ तक आँकी गयी है. यह इस जनसांख्यिकीय (Demographic) के बीच मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों की एक महत्वपूर्ण व्यापकता को दर्शाता है, जिसका उनके जीवन की समग्र गुणवत्ता पर गंभीर दीर्घकालिक प्रभाव हो सकता है. हालांकि अवसाद का शिकार किसी भी आयु वर्ग के लोग हो सकते हैं परंतु युवाओं मे इसकी व्यापकता है.

भारतीय युवाओं में अवसाद का एक प्रमुख कारण शैक्षणिक रूप से सफल होने का दबाव भी है. भारतीय माता-पिता अक्सर अपने बच्चों की शिक्षा पर बहुत जोर देते हैं, और प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में स्थान सुरक्षित करने और उच्च वेतन वाली नौकरियां पाने के लिए तीव्र प्रतिस्पर्धी होते हैं सोशल मीडिया एक अन्य कारक है जो भारत में युवा वयस्कों में अवसाद को बढ़ाने में योगदान दे रहा है. कई युवा हर दिन सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर घंटों बिताते हैं, खुद की तुलना दूसरों से करते हैं और अपर्याप्त महसूस करते हैं. इससे आत्म-सम्मान मे कमी, अकेलापन और अवसाद की भावनाएँ पैदा हो सकती हैं. बदलते सामाजिक मानदंड भी भारत में युवा वयस्कों में अवसाद के बढ़ने में योगदान दे रहे हैं. जैसे-जैसे देश अधिक आधुनिक होता जा रहा है, व्यक्तिवाद और व्यक्तिगत पूर्ति पर जोर बढ़ रहा है.

अवसाद आपके दैनिक जीवन को बाधित कर सकता है, जिससे सबसे सरल गतिविधियों में भी खुश रहना या खुशी तलाश करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है. हालाँकि, सही रणनीतियों सहयोग और समर्थन के साथ, अवसाद का प्रबंधन किया जा सकता है और अंतत: उस पर काबू भी पाया जा सकता है. इस लेख में हम अवसाद के कारण और उससे निपटने और उज्जवल भविष्य की दिशा में कदम उठाने के प्रभावी तरीकों के बारे में चर्चा करेंगे.

अवसाद एक जटिल और बहुआयामी मानसिक स्वास्थ्य स्थिति है और इसके कारण हर व्यक्ति में अलग-अलग हो सकते हैं. यह अक्सर आनुवंशिक, जैविक, पर्यावरणीय और मनोवैज्ञानिक कारकों के संयोजन से उत्पन्न होता है. कुछ सामान्य कारक, जो अवसाद में योगदान करते हैं, निम्नवत हैं :

1. **जैविक कारक:** मस्तिष्क में केमिकल लोचा, न्यूरोट्रांसमीटर का असंतुलित होना (जैसे सेरोटोनिन और डोपामाइन), और आनुवंशिक प्रवृत्ति डेप्रेशन के कारण हो सकते हैं. यदि अवसाद का पारिवारिक इतिहास है, तो व्यक्ति अधिक जोखिम में हो सकता है.
2. **मनोवैज्ञानिक कारक:** नकारात्मक विचार पैटर्न, आत्मसम्मान मे कमी या उस पर आघात या अपने साथ हुए दुर्व्यवहार भी अवसाद के विकास में योगदान कर सकते है. तनाव और जीवन की चुनौतियों से निपटने में असमर्थता, बार बार किसी कार्य या परीक्षा में फेल होना भी अवसाद के कारक हो सकते है.
3. **पर्यावरणीय कारक:** जीवन की कुछ घटनाएँ और परिस्थितियाँ अवसाद के जोखिम को बढ़ा सकती हैं, जैसे किसी प्रियजन की हानि, वित्तीय समस्याएं, आपसी रिश्ते में कड़वाहट, नौकरी छूटना, तलाक होना, बॉस के साथ न बनना एवं अन्य सामाजिक मसले, लंबे समय तक तनावपूर्ण एवं नकारात्मक माहौल में रहने से भी व्यक्ति अधिक असुरक्षित महसूस करने लगता है और फिर अवसाद का शिकार हो जाता है.

4. **चिकित्सीय स्थितियाँ:** कुछ चिकित्सीय स्थितियाँ, जैसे पुरानी बीमारी, पुराना दर्द, या हार्मोनल असंतुलन, अवसाद के जोखिम को बढ़ा सकती हैं. किसी गंभीर बीमारी से निपटने का तनाव भी अवसाद को बढ़ाने का एक कारक हो सकता है.

5. **मादक द्रव्यों का सेवन:** नशीली दवाओं और शराब का उपभोग मस्तिष्क की रासायनिक प्रक्रिया को बदल सकता है और अवसाद के खतरे को बढ़ा सकता है. मादक द्रव्यों का सेवन अक्सर अवसाद का कारण और परिणाम दोनों होता है.

6. **सामाजिक अलगाव:** सामाजिक समर्थन की कमी और अकेलापन की भावना अवसाद की शुरुआत और तीव्रता में योगदान कर सकती है. मनुष्य सामाजिक प्राणी हैं, और मानसिक कल्याण के लिए सामाजिक संबंध आवश्यक हैं.

7. **व्यक्तित्व कारक:** कुछ व्यक्तित्व लक्षण, जैसे पूर्णतावाद, नकारात्मक विचारों पर चिंतन करने की प्रवृत्ति और उच्च स्तर की आत्म-आलोचना, व्यक्तियों को अवसाद के प्रति अधिक संवेदनशील बना सकते हैं.

8. **हार्मोनल परिवर्तन:** गर्भावस्था के दौरान एवं प्रसव के बाद और रजोनिवृत्ति के दौरान होने वाले हार्मोनल परिवर्तन भी मूड को प्रभावित करते हैं और इस कारण कुछ लोगों मे अवसाद का खतरा बढ़ सकता है.

डिप्रेशन का प्रबंधन करना और उस पर काबू पाना एक चुनौतीपूर्ण यात्रा है, लेकिन सही रणनीतियों, समर्थन और प्रतिबद्धता के साथ यह संभव है. याद रखें कि प्रगति में समय लगता है, और स्वयं के साथ धैर्य रखना आवश्यक है. निम्न रणनीतियों को लागू करके और लगातार बने रहकर, आप एक उज्जवल और अधिक संतुष्टिदायक भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं.

1. **कुशल मनोरोग चिकित्सक / विशेषज्ञ की मदद लें**

अवसाद के प्रबंधन में पहला और सबसे महत्वपूर्ण कदम कुशल मनोरोग चिकित्सक / विशेषज्ञ की मदद लेना है. एक मानसिक स्वास्थ्य चिकित्सक / विशेषज्ञ (Mental Health Professional), जैसे कि मनोचिकित्सक या क्लिनिकल साइकोलोजिस्ट, आपको पुनर्प्राप्ति की दिशा में आगे बढ़ने में आवश्यक मार्गदर्शन और सहायता प्रदान कर सकता है. वे आपकी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप चिकित्सा और दवाओं सहित काउन्सलिंग द्वारा उपचार का विकल्प प्रदान कर सकते हैं.

2. **एक सपोर्ट सिस्टम बनाएं**

अवसाद से अकेले लड़ना कभी कभी कठिन होता है , आपको इसका सामना अकेले नहीं करना है. उन मित्रों और परिवार के सदस्यों तक पहुंचें जो भावनात्मक समर्थन प्रदान कर सकते हैं. किसी सहायता समूह में शामिल होना भी फायदेमंद हो सकता है, क्योंकि यह आपको अन्य लोगों से जोड़ता है जो समझते हैं कि आप किस दौर से गुजर रहे हैं. एक मजबूत सहायता प्रणाली का निर्माण कठिन समय के दौरान आपको आराम और प्रोत्साहन दोनों प्रदान कर सकता है.

3. **स्व-देखभाल का अभ्यास करें**

अवसाद का प्रबंधन करते समय स्वयं की देखभाल बहुत महत्वपूर्ण है. अच्छा खाना, पर्याप्त नींद लेना और नियमित व्यायाम जैसी साधारण दैनिक गतिविधियाँ आपके मूड पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती हैं. छोटे-छोटे , प्राप्त करने योग्य लक्ष्य निर्धारित करके आत्म-देखभाल (Self-Care) को प्राथमिकता दें जो आपको शारीरिक और मानसिक रूप से बेहतर महसूस करने में मदद करेंगे.

4. **नकारात्मक विचारों को चुनौती दें**

अवसाद अक्सर नकारात्मक और आत्म-आलोचनात्मक (Self-Critical) सोच को जन्म देता है. इन हानिकारक विचारों को पहचानने और चुनौती देने के लिए संज्ञानात्मक-व्यवहार थेरेपी (Cognitive Behavioural Therapy-CBT) एक प्रभावी उपचार प्रणाली है. इस प्रणाली को अधिक संतुलित और सकारात्मक लोगों के साथ प्रतिस्थापित करके, आप अपने आप को और अपने आस-पास की दुनिया को देखने के नजरिए को बदल सकते हैं. ज़्यादातर काउंसलर भी इस तकनीक का इस्तेमाल करते हैं.

5. **एक दिनचर्या स्थापित करें**

दैनिक दिनचर्या बनाने से आपके जीवन में संरचना और स्थिरता मिल सकती है. अवसाद से निपटने के दौरान, एक दिनचर्या अप्रत्याशितता (Unpredictability) की प्रबल भावना को कम करने में सहायक होती है. उद्देश्य और उपलब्धि की भावना बनाए रखने के लिए ऐसे शेड्यूल पर बने रहें जिसमें उत्पादक और आनंददायक गतिविधियाँ शामिल हों.

6. **माइंडफुलनेस और रिलैक्सेशन तकनीकों का अभ्यास करें**

माइंडफुलनेस मेडिटेशन और विभिन्न प्रकार की रिलैक्सेशन तकनीकें, जैसे गहरी सांस लेना, व्यायाम, प्राणायाम और योग, तनाव और चिंता को कम करने में मदद कर सकते हैं. ये तकनीकें आपको भावनात्मक रेग्युलेशन और मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देते हुए, वर्तमान में मौजूद रहने के लिए प्रोत्साहित करती हैं.

7. **यथार्थवादी लक्ष्य निर्धारित करें**

यथार्थवादी और प्राप्य लक्ष्य निर्धारित करें और उसे प्राप्त करने का प्रयास करें इससे आपका आत्म-सम्मान बढ़ेगा और आगे

कुछ अधिक करने की प्रेरणा मिलेगी. छोटे, प्रबंधनीय उद्देश्यों से शुरुआत करें और धीरे-धीरे अधिक महत्वपूर्ण लक्ष्यों तक पहुंचें. अपनी छोटी - छोटी सफलताओं का जश्न मनाएं, चाहे वे कितनी भी छोटी क्यों न हो , वे आपकी समग्र विकास एवं उपलब्धि में सहायक होंगी.

8. क्रिएटिव आउटलेट्स में संलग्न रहें

पेंटिंग, लेखन या संगीत वाद्ययंत्र बजाने जैसी रचनात्मक गतिविधियों में संलग्न होना उपचारात्मक हो सकता है. ये आउटलेट आपकी भावनाओं को व्यक्त करने और आपकी ऊर्जा को किसी सकारात्मक चीज़ में लगाने का साधन प्रदान करते हैं. रचनात्मक प्रयास आनंद का स्रोत हो सकते हैं और अवसादग्रस्त विचारों से ध्यान हटाने मे सहायक हो सकते हैं.

9. तनावों को सीमित करें

अपने जीवन में तनाव के स्रोतों को पहचानें और सीमित करें. इसमें आपके कार्यभार को समायोजित करना, अपने समय को अधिक कुशलता से प्रबंधित करना, या उन लोगों और स्थितियों के साथ सीमाएँ निर्धारित करना शामिल हो सकता है जो तनाव में योगदान करते हैं. तनाव कम करने से आपके मानसिक स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव पड़ सकता है.

10. प्रगति एवं उपलब्धियों का आनंद लें

अवसाद से उबरना कोई सीधी प्रक्रिया नहीं है और आसान भी नहीं है इसमे असफलताएँ सामान्य हैं. परंतु अपने समग्र प्रयास से सकारात्मक माइंडसेट के साथ इसपर काबू पाया जा सकता है. अपने छोटे छोटे प्रयासों और उपलब्धियों पर खुश होना सीखें, अपनी उपलब्धियों को अपनों के साथ साझा करें , अपनी उपलब्धियों पर नज़र रखने के लिए एक नोट बुक रखें और अपने अवसाद को प्रबंधित करने की दिशा में आपके द्वारा उठाए गए कदमों को उसमें लिखें.

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि अवसाद किसी को भी प्रभावित कर सकता है, चाहे उनकी उम्र, लिंग या पृष्ठभूमि कुछ भी हो. इसके अतिरिक्त, अवसाद का कारण कोई एक घटना या बार बार किसी घटना का होना भी हो सकता है. अवसाद के संभावित कारणों को समझना और पहचानना चिकित्सक और प्रभावित व्यक्ति दोनों के लिए आवश्यक है. आप काउंसलर या चिकित्सक से खुल के बात करें, अपनी समस्याओं को बताएं , इससे काउंसलर या चिकित्सक को आपकी समस्या का समाधान तलाश करने मे आसानी होगी.

सरकारों, स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं और समुदायों के लिए मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना और युवाओं को सुलभ और किफायती मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं और संसाधन प्रदान करना महत्वपूर्ण है. प्रारंभिक हस्तक्षेप और समर्थन उनके मानसिक स्वास्थ्य परिणामों और जीवन की समग्र गुणवत्ता में सुधार लाने में महत्वपूर्ण बदलाव ला सकता है. डिप्रेशन की स्थिति से जुड़े कारकों और प्रोफाइल को बेहतर ढंग से समझने और प्रभावी रोकथाम और उपचारात्मक रणनीति विकसित करने के लिए सरकार को युवाओं में अवसाद पर शोध एवं सर्वे जारी रखना चाहिए.

(लेखक मनोविज्ञान मे परास्नातक एवं क्लिनिकल साइकोलोजी मे परास्नातक डिप्लोमा अलग - अलग संस्थानो से कर रहे हैं.)

मोहम्मद शाहिद खान
वरिष्ठ प्रबन्धक
(आई टी),डीआईटी , बेलापुर

मंज़िल

उड़ता था अनंत आसमान में जो,
उस परिंदे ने आसमान का छोर नहीं देखा.
मंजिल की तरफ़ रुख करके उड़ा,
दाएं बाएं पीछे किसी ओर नहीं देखा.
अपने पंखों पर रहा उसे हर दम भरोसा,
आसमान की ऊंचाई, हवा का ज़ोर नहीं देखा.
सुनता रहा अपने दिल की बेचैन धड़कन,
बादल की गरजन दुनिया का शोर नहीं देखा.
मंजिल पर पहुंच कर चहका, कुछ आराम दिया पंखों को,
फिर उड़ा नई मंजिल को, मुड़कर पिछला ठोर नहीं देखा.

विशाल बहुत था अंबर और हर सफर नया था,
बांटा सबको विश्वास, कुछ भी बटोर नहीं देखा.
देखा उसको चंदन सा शीत और हिम्मत से भरपूर,
दुनिया ने किसी भी पल में उसे कमज़ोर नहीं देखा..

सुश्री अदिति अत्री
शाखा प्रमुख,
डेराबस्सी चंडीगढ़

प्राचीन से नवीन बैंकिंग की ओर

बैंक शब्द इटालियन भाषा के बैंकों (Banco) से बना है. वह फ्रेंच भाषा के बैंके (Banke) से बदला हुआ अंग्रेजी भाषा में बैंक (Bank) हो गया. बैंक एक ऐसी संस्था है जिसमें लोगों द्वारा दिया हुआ धन रखा जाता है, तथा आवश्यकता होने पर वापस किया जाता है. बैंक अपने ग्राहकों को विभिन्न प्रकार की सुविधा देती है.

बैंकिंग क्षेत्र में प्राचीन से नवीनतम तक काफी परिवर्तन हुआ है. प्राचीन काल में बैंकिंग गतिविधियाँ सामाजिक और आर्थिक आधार पर होती थी. प्राचीन काल में भी बैंकिंग होती थी. ऐसा माना जाता है कि 2000 ईसा पूर्व से दुनिया में बैंकिंग प्रणाली की शुरुआत की जा चुकी थी. हांलाकि, ये वर्तमान की तरह बिलकुल भी नहीं थी. दरअसल उस समय पैसों के उधार लेन-देन की प्रथा प्रचलित थी. सौदागर, किसान और व्यापारियों को अनाज ऋण देते थे, जिससे वे दूसरे शहर जाकर सामान लाते थे. जहाँ लेनदेन पैसे यानि करेंसी से नहीं होता था, बल्कि लोग एक-दूसरे की मदद के लिए सामानों का लेनदेन करते थे. ये सिलसिला बाद में बदला और व्यापारियों ने लेन-देन के लिए सोने के सिस्क्कों का इस्तेमाल किया. जब कारोबार के सिलसिले में व्यापारी समुद्री रास्तों से दूसरे देशों में जाने लगे तो रकम को संभालने के लिए सुरक्षाकर्मी तैनात किए जाने लगे, इसी तरह सेफ डिपॉजिट प्रणाली का विस्तार होता गया. बाद में सौदागरों ने सोने के सिक्कों के बदले में व्यापारियों से ब्याज लेना शुरु कर दिया, तो ब्याज प्रणाली शुरु हो गई. इसी तरह किसी ने किसी रुप में रुपयों का लेन देन होता था. जैसे गांव के साहूकारों एवं बडे सेठों द्वारा लोगों को पैसा दिया जाता था. बदले में उनसे कुछ गिरवी रखने के लिए कहा जाता था. लिखा-पढी भी होती थी. साहूकार वह समूह या व्यक्ति होता है जो व्यक्तिगत तौर पर कर्ज मुहैय्या करता है, और उनके अधिक ब्याज वसूलता है. बौद्ध काल से ही कुछ ऐसी संस्थाएँ थी जो की व्यापारियों और विदेशों में जाने या घूमने के लिए उधार देते थे.

प्राचीन बैंकिंग की शुरुआत कार्वांस, सुदाई और अन्य सार्वजनिक संस्थाओं के रुप में हुई थी, जो लोगों के निगमनऔर धनराशि की रक्षा करते थे. वे धन जमा करने, ऋण प्रदान करने और विभिन्न वित्तीय सेवाओं को प्रदान करने का काम करते थे. इन संस्थाओं का आर्थिक प्रबंधन, लेनदेन का नियंत्रण और बजटिंग आदि मुख्य विभाग था. यह सिस्टम अत्यंत सामाजिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भ्बूमिका निभाता रहा है.

प्राचीन भारतीय बैंकिंग व्यवस्था

भारत नें सबसे पहले बैंक की स्थापना 1881 में की गई जिसका नाम अवध कॉमर्शियल बैंक था. बाद में पंजाब नेशनल बैंक की स्थापना 1894 में हुई. 1906 में स्वदेशी आंदोलन शुरु होने के कारण वाणिज्यिक बैंकों की स्थापना हेतु प्रोत्साहन मिला. 1949 में बैंकिंग कंपनी अधिनियम पारित किया गया तथा बाद में इसे बैंकिंग कंपनी नियमन अधिनियम1949 के रूप में जाना जाने लगा क्योंकि वर्ष 1913 से 1917 के दौरान कई राज्यों में बैंकों का दिवालिया हो जाने के कारण बैंकों के नियमन और उन पर नियंत्रण पर बल मिला गया. इस नियम के जरिए बैंकिंग व्यवस्था पर कानूनी नियमन अधिकार रिजर्व बैंक को मिल गये.

1955 में देश के सबसे बड़े बैंक इंपीरियल बैंक ऑफ इंडिया का राष्ट्रीयकरण किया गया इसका नाम बदलकर स्टेट बैंक ऑफ इंडिया कर दिया गया.

बैंक प्रबंधन समिति

आठवें दशक के अंत में कुछ ऐसी अनियमित व्यवस्था पाई गई जिसे देखकर सरकार को लगा कि इसे दूर किया जाना चाहिए. जिससे वित्तीय व्यवस्था और अर्थव्यवस्था अच्छी हो सके. संगठन कामकाज और ऐसे सभी प्रक्रिया की जांच के लिए 14 अगस्त 1991 को श्री नरसिंहम की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया गया. यह समिति सिफारिशों के आधार पर 1993 में बैंकों मे हो रहे गडबडी को सुधार के लिए बनाई गई. स्वतंत्रता के उपरांत भारतीय रिजर्व बैंक को केन्द्रीय बैंक का दर्जा बरकरार रखा गया. उसे बैंकों का बैंक भी घोषित किया गया. सभी प्रकार की मौद्रिक नीतियों को तय करने और उसे अन्य बैंकों तथा वित्तीय संस्थाओं द्वारा लागू कराने का दायित्व भी उसे सौंपा गया.

नवीन बैंकिंग क्षेत्र में डिजिटलीकरण, इंटरनेट बैंकिंग, मोबाईल बैंकिंग, ब्लॉकचेन तकनीक, और उपयुक्तता के लिए एआई का उपयोग आदि बहुत अधिक महत्वपूर्ण है. इनके साथ, अधिक सुरक्षित वित्तीय सेवाएँ, ऑनलाइन भुगतान विकल्प ,डिजिटल खाता खोलने की सुविधा और अन्य नवाचारिक उत्पाद बनाने के प्रयास भी बढ रहे है. इससे ग्राहकों को अधिक सुविधाएँ मिल रही है और बैंकिंग संबंधित कार्य भी अधिक सरल और अनुकूल हो रहे हैं. नवीन बैंकिंग से शाखा में तकनीकी और डिजिटल नवाचारों का प्रयोग होता है, जो ग्राहकों को बेहतर सेवाएँ प्रदान करने में मदद करता है.

मोबाईल बैंकिंग :

मोबाईल बैंकिंग एक तकनीकी उपाय है जिसमें ग्राहक अपने स्मार्टफोन के माध्यम से बैंक खाते को एक्सेस कर सकते हैं और विभिन्न वित्तीय लेन-देन कार्यों को कर सकतेहैं, इसमें बैंक खाते का शेष जाँच, लेन-देन का विवरण , फंड ट्रासफर ,बिल; भुगतान , वित्तीय सूचनाआ प्रप्त करना और अन्य वित्तीय सेवाओं का उपयोग भी शामिल है. यह ग्राहकों को सुरक्षित और सुविधाजनक तरीके से उनके बैंकिंग जरूरतों को पूरा करने का अवसर प्रदान करता है.

इंटरनेट बैंकिंग

इंटरनेट बैंकिंग एक ऑनलाइन प्लेटफार्म है जिसके माध्यम से ग्राहक विभिन्न बैंकिंग कार्यों को अपने कम्प्यूटर या ऑनलाइन डिवाइस के माध्यम से कर सकते हैं. इसमें खाता की जाँच, लेन-देन का इतिहास, फंड ट्रांसफर , बिल भुगतान , बैक का कार्ड अप्लाई करना, बैंक खाते की स्थिति की जाँच कर सकते हैं. यह ग्राहकों को बैंकिंग कार्यों को अपने घर से करने की सुविधा प्रदान करता है. जिससे समय की बचत होती है.

ई-वॉलेट

इन डिजिटल ई-वॉलेट के माध्यम से ग्राहक भुगतान कर सकते है, अन्य वित्तीय लेन-देन कार्य कर स्काते हैं.

आज की युवा पीढी भी डिजिटल की ओर आकर्षित है और सबसे आगे है. बैंकिंग क्षेत्र में आए डिजिटल क्रांति ने बैंकों के साथ साथ ग्राहकों की कमी को दूर करने पर ध्यान केंद्रित किया है. बैंक भी अपने नई-नई तकनीक अपना कर ग्राहकों को आकर्षित कर रही है.

डिजिटल बैंकिंग का प्रयोग विभिन्न प्रकार से किए जाते है :-

1. ग्राहक अपना बैलेंस चेक कर सकते हैं.

2. एक खाते से दूसरे खाते में पैसा ट्रांसफर कर सकते हैं.

3. अपने बिलों के भुगतान कर सकते हैं.

4. अपना खाता खोल सकते हैं.

5. ऋण खाता खोल सकते हैं आदि.

डिजिटल बैंकिंग के प्रयोग से न सिर्फ ग्राहकों को फायदा हुआ है बल्कि अब इस डेटा का उपयोग बैंकों ने भी अपने बिजनेस मॉडल में काफी परिवर्तन किया है. बैंकों द्वारा अब पारंपारिक बैंकिंग से डिजिटल बैंकिंग में पूरी तरह से परिवर्तन किया जा रहा है. विभिन्न बैंक अब दरवाजे पर बैंकिंग सेवाएँ और वीडियो केवाईसी जैसी विभिन्न पहल करके प्रतिस्पर्धा में बढ़त हासिल करने के लिए ग्राहकों को टैप करने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं.

डिजिटल बैंकिंग के माध्यम से निम्नलिखित लेनदेन किए जा सकते है.

1. बिल का भुगतान करना
2. नकदी जमा करना
3. नकद निकालना
4. चेक जमा करना
5. राशि अंतरण करना
6. ड्राफ्ट जारी करना
7. ऋण के आवेदन करना

इंटरनेट बैंकिंग बैंक की साइट पर की जाती है. मोबाईल बैंकिंग ऐप के जरिए होती है. मोबाइल ऐप ग्राहक को सीधे बैंक से कनेक्ट कर देता है.

''मोबाइल मेरा पर्स'': आज के दौर में मोबाइल के जरिए सभी लेनदेन किए जाते हैं. किसी भी व्यक्ति को पर्स रखने की जरूरत नहीं है. इसलिए मोबाइल को पर्स कहा गया है. मेरा मोबाइल मेरा पर्स है यह एक रूपक है . आज मोबाइल फोन आपकी सभी महत्वपूर्ण चीजें रखने का साधन बन गया है, जैसे पैसे, कार्ड, नोट्स और अन्य महत्वपूर्ण जानकारियाँ आदि . इस आधुनिक समय में, मोबाइल फोन एक डिजिटल वॉलेज की तरह काम कर रहा है, जिसमें हम कई महत्वपूर्ण डेटा और उपकरण स्टोर करते हैं.

एल बी. झा
उप क्षेत्रीय प्रमुख
उत्तर मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय

योग से निरोग

रोज़ जो बच्चे करते योग,
रहते हैं वो सदा निरोग .
चुस्ती फुर्ती वो दिखलाते,
आलस को वो दूर भगाते,
उन्हें छू पाता ना कोई रोग,
रोज़ जो बच्चे करते योग.....
नित्य नए आसान कर पाते,
जीवन अपना सरल बनाते,
तन का मन से होता योग,
रोज़ जो बच्चे करते योग.....

पूरे मन से ध्यान लगाते,
सच्चे ज्ञान को वो पा जाते,
ईश्वर से होता संयोग,
रोज़ जो बच्चे करते योग....

इधिका मिश्रा
पुत्री, सुश्री स्वर्णिमा सिंह,
मुख्य प्रबंधक (विधि),
आंचलिक कार्यालय, लखनऊ

ईएसजी : पर्यावरण रक्षा भविष्य की सुरक्षा

ईएसजी लक्ष्य (ESG Goals) क्या हैं?

'पर्यावरण, सामाजिक और शासन लक्ष्य' कंपनी के संचालन के लिये मानकों का एक ऐसा समूह है जो कंपनियों को बेहतर शासन, नैतिक अभ्यासों, पर्यावरण-अनुकूल उपायों और सामाजिक उत्तरदायित्वों का पालन करने के लिये विवश करते हैं. पर्यावरणीय मानदंड इस बात पर विचार करते हैं कि कोई कंपनी प्रकृति के परिचारक के रूप में कैसा प्रदर्शन करती है. सामाजिक मानदंड यह परीक्षण करते हैं कि कंपनी अपने कर्मचारियों, आपूर्तिकर्ताओं, ग्राहकों और स्थानीय समुदायों (जहाँ वह संचालित होती है) के साथ अपने संबंधों का प्रबंधन कैसे करती है. शासन किसी कंपनी के नेतृत्व, कार्यकारी वेतन, लेखा परीक्षा, आंतरिक नियंत्रण और शेयरधारक अधिकारों से संबोधित होता है. यह निवेश निर्णयों को निर्देशित करने के लिये एक मीट्रिक के रूप में गैर-वित्तीय कारकों पर ध्यान केंद्रित करता है जहाँ वित्तीय रिटर्न में वृद्धि अब निवेशकों का एकमात्र उद्देश्य नहीं रह गया है. वर्ष 2006 में 'यूनाइटेड नेशंस प्रिंसिपल फॉर रिस्पॉन्सिबल इन्वेस्टमेंट' (United Nations Principles for Responsible Investment- UN-PRI) के आरंभ के साथ ईसीजी ढाँचे को आधुनिक समय के व्यवसायों की एक अविभाज्य कड़ी के रूप में मान्यता दी गई है. वैश्विक स्तर पर 'पर्यावरण, सामाजिक और शासन (Environmental, Social and Governance- ESG) निवेश की मांग ने उल्लेखनीय आकर्षण प्राप्त किया है.

ईएसजी फंड

ईएसजी फंड एक प्रकार का म्यूचुअल फंड है. इसका निवेश सतत् निवेश या सामाजिक रूप से उत्तरदायी निवेश के समानार्थी रूप से उपयोग किया जाता है. इस प्रकार, ईएसजी फंड और अन्य फंडों के बीच प्रमुख अंतर 'विवेक' का है. ईएसजी फंड पर्यावरण-अनुकूल अभ्यासों, नैतिक कारोबार अभ्यासों और कर्मचारी-अनुकूल रिकॉर्ड रखने वाली कंपनियों पर ध्यान केंद्रित करता है. इस फंड को भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) द्वारा नियंत्रित किया जाता है. पिछले कुछ वर्षों में 'ईएसजी फंड' (ESG Funds) की परिसंपत्ति का आकार लगभग पाँच गुना बढ़कर 12,300 करोड़ रुपए का हो गया है.

ईएसजी कॉरपोरेट्स और उनके हितधारकों के लिये मूल्य सृजन कैसे करता है?

- **राजस्व में वृद्धि:** ईएसजी सिद्धांतों के साथ संरेखण से कंपनियों को मौजूदा बाज़ारों का विस्तार करने और उनकी 'ब्लू ओशियन रणनीति' (Blue Ocean Strategy) के एक अंग के रूप में विकास के नए अवसर प्रदान करने में मदद मिलती है.
- **सार्वजनिक छवि में सुधार:** ईएसजी-अनुपालनकर्ता कंपनियों को कम लागत पर संसाधनों (प्राकृतिक, वित्तीय, मानव प्रतिभा आदि) तक आसान पहुँच प्राप्त होती है.
- धन जुटाने के लिये ईएसजी महत्त्वपूर्ण है और भारत जैसे देशों में अन्य संसाधनों तक मुक्त पहुँच भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है, जहाँ कंपनियों को आरक्षित क्षेत्रों में नई परियोजनाएँ शुरू करते समय स्थानीय समुदायों के कड़े प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है.
- **दीर्घकालिक संवहनीयता:** ईएसजी ढाँचे का अनुपालन कंपनियों को अधिक सतत् निवेश अवसरों की तलाश करने के लिये प्रोत्साहित करता है जो दीर्घावधि में प्रतिस्पर्द्धात्मक लाभ सृजित करता है.
- निम्न कार्बन उत्सर्जन, अपशिष्ट में कमी, इष्टतम जल-उपयोग, उच्च रोज़गार सृजन और अपेक्षाकृत बेहतर प्रकटीकरण रखने वाली कंपनियाँ ईएसजी सूचकांक में उच्च स्कोर प्राप्त कर सकेंगी.
- **कर्मचारी उत्पादकता में वृद्धि:** कंपनी परितंत्र के साथ ईएसजी का एकीकरण कर्मचारियों के बीच एक 'उद्देश्य-संचालित-जीवन' (Purpose-Driven-Life) सन्निहित करता है ताकि वे अपनी नौकरी में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकें.
- **लागत/जोखिम में कमी:** शेयरधारक शिकायत का निवारण, मानवाधिकार और कंपनियों की लैंगिक विविधता जैसे ईएसजी मानदंडों की पूर्ति के परिणामस्वरूप अर्थदंड एवं प्रवर्तन कार्रवाई में कमी आएगी.

ईएसजी अनुपालन सुनिश्चित करने के लिये कौन-सी पहलें की गई हैं?

- कंपनियों के लिये ईएसजी प्रकटीकरण आवश्यकताओं की पहचान करने की दिशा में प्रारंभिक उल्लेखनीय कार्रवाई वर्ष 2011 में कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय द्वारा जारी की गई 'कारोबार के सामाजिक, पर्यावरण और आर्थिक दायित्वों पर राष्ट्रीय स्वैच्छिक दिशानिर्देश' (National Voluntary Guidelines on Social, Environmental and Economic Responsibilities of Business) के रूप में प्रकट हुई.
- वर्ष 2012 में सेबी ने **'बिजनेस रिस्पॉन्सिबिलिटी रिपोर्ट'**

(BRR) तैयार की, जिसने बाज़ार पूंजीकरण के अनुसार शीर्ष 100 सूचीबद्ध संस्थाओं (जिसे वर्ष 2015 में शीर्ष 500 सूचीबद्ध संस्थाओं तक विस्तारित कर दिया गया) के लिये उनकी वार्षिक रिपोर्ट के एक भाग के रूप में BRR फ़ाइल करना अनिवार्य कर दिया.

- वर्ष 2021 में सेबी ने मौजूदा बीआरआर रिपोर्टिंग आवश्यकता को एक अधिक व्यापक एकीकृत तंत्र 'बिजनेस रिस्पॉन्सिबिलिटी एंड सस्टेनेबिलिटी रिपोर्ट' (BRSR) से प्रतिस्थापित कर दिया.
- यह वित्त वर्ष 2022-23 से शीर्ष 1,000 सूचीबद्ध संस्थाओं (बाजार पूंजीकरण के अनुसार) पर अनिवार्य रूप से लागू होगा.
- BRSR 'उत्तरदायी व्यावसायिक आचरण पर राष्ट्रीय दिशानिर्देश' (NGBRCs) के नौ सिद्धांतों पर सूचीबद्ध संस्थाओं से उनके प्रदर्शन पर प्रकटीकरण की अपेक्षा रखता है.

हितधारकों की प्रतिक्रिया :

भारतीय निवेशक ईएसजी अनुपालनकर्ता कंपनियों और निवेश उत्पादों में अधिक रुचि दिखा रहे हैं और कंपनियां अपनी कॉर्पोरेट प्रशासन रणनीतियों में ईएसजी को शामिल करने की दिशा में लगातार कदम उठा रही हैं. उदाहरण के लिये, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज ने वर्ष 2030 तक 'शुद्ध शून्य उत्सर्जन' प्राप्त करने के लिये अपने पूर्ण GHG उत्सर्जन को कम करने की योजना का खुलासा किया है. गाजियाबाद नगर निगम भारत का पहला नगर निकाय बन गया है जिसने अपशिष्ट जल के पुन: उपयोग के लिये पर्यावरणीय रूप से संवहनीय एक परियोजना हेतु बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (BSE) में सूचीबद्ध ग्रीन बॉण्ड जारी किया है.

नीति निर्माताओं को धीरे-धीरे एक अधिक व्यापक और विस्तृत ईएसजी रिपोर्टिंग व्यवस्था के निर्माण की ओर आगे बढ़ना चाहिये जहाँ लक्ष्य हो कि सभी सूचीबद्ध एवं गैर-सूचीबद्ध संस्थाओं को शामिल किया जाए और उन्हें ईएसजी रिपोर्टिंग ढाँचे के दायरे में लाया जाए.

ईएसजी निवेश की बढ़ती मांग का अर्थ है कि पर्याप्त प्रकटीकरण की बढ़ती हुई आवश्यकता और एक रिपोर्टिंग तंत्र की स्थापना की जाए ताकि पर्यावरणीय, सामाजिक और शासन संबंधी चुनौतियों के जोखिम मूल्यांकन और शमन उपायों को शामिल कर दीर्घावधि के स्थायी रिटर्न के लक्ष्यों की ओर झुकाव वाले बदलते निवेश रुझानों के साथ तालमेल बिठाया जा सके.

- **मानकीकृत ईएसजी मानदंड:** ईएसजी मानदंडों पर मात्रात्मक और मानकीकृत प्रकटीकरण एक अधिक समग्र दृष्टिकोण सुनिश्चित करेगा, हितधारकों को वित्तीय और गैर-वित्तीय दोनों सूचनाएँ प्रदान करेगा और इस बारे में संक्षिप्त संचार करेगा कि संवहनीयता संबंधी मुद्दों पर अधिक पारदर्शिता प्राप्त करने के उद्देश्य के अनुरूप कैसे एक संगठन की रणनीति, शासन, प्रदर्शन और संभावनाएँ समय के साथ मूल्य सृजित करेंगी.
- निवेशकों और कंपनियों की भूमिका: निवेशकों को न केवल बढ़े हुए वित्तीय रिटर्न हासिल करने की ओर उन्मुख होना चाहिये, बल्कि सतत् विकास के साथ अपने पोर्टफोलियो को संरेखित करने के लिये भी तत्पर रहना चाहिये.
- कंपनियों के कॉर्पोरेट प्रशासन अभ्यासों के साथ ईएसजी प्रकटीकरण को एकीकृत करना निवेश के दृष्टिकोण से अत्यंत परिणामी होता जा रहा है क्योंकि यह कंपनियों के मूल्य का आकलन करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है.
- व्यापार रणनीति/नीतियों में ईएसजी कारकों को ध्यान में नहीं रखने के परिणाम भविष्य में व्यवसायिक प्रक्रियाओं को निरर्थक बना सकते हैं, क्योंकि कानूनी और विनियामक परिवर्तन भविष्य में कारोबार करने के विशेष तरीके को निषिद्ध कर सकते हैं और इस प्रकार निवेशकों के दृष्टिकोण से इसकी व्यवहार्यता कम हो सकती है.

हम पर्यावरण की रक्षा करने की अपनी जिम्मेदारी को कई अलग-अलग तरीकों से पूरा करते हैं. हम अपनी व्यवसायिक गतिविधियों के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने और पर्यावरण को लाभ पहुंचाने वाले उत्पाद समाधान विकसित करने के लिए लगातार काम कर रहे हैं. जलवायु परिवर्तन हम सभी को प्रभावित करता है और यह भविष्य में मानव जाति के सामने आने वाली सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है. ईएसजी के सहारे ही हम पर्यावरण सुरक्षा और अपनी भविष्य की रक्षा कर सकते है.

कुल मिलाकर ईएसजी का बाजार पर सकारात्मक प्रभाव पड़ने की संभावना है ईएसजी निवेश से कंपनियों को अधिक पर्यावरण और सामाजिक रूप से जिम्मेदार बनने में मदद मिल सकती है, जिससे उन्हें दीर्घकाल में लाभ हो सकता है. इसके अतिरिक्त, ईएसजी निवेश से नए अवसरों का उदय हो सकता है जिससे अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिल सकता है.

देवेन्द्र नाग
वरिष्ठ प्रबंधक- आईटी
आंचलिक कार्यालय, रायपुर

जिस देह से श्रम नहीं होता, पसीना नहीं निकलता, सौंदर्य उस देह को छोड़ देता है - लक्ष्मीनारायण मिश्र

ईएसजी: पर्यावरण रक्षा भविष्य की सुरक्षा

ईएसजी पर्यावरण, सामाजिक और शासन संबंधी संकेतकों को संदर्भित करता है यह एक ढांचा है जिसका उपयोग निवेश, व्यवसायों और संगठनों के स्थायित्व और नैतिक प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है. यह तीन प्रमुख आयामों को ध्यान में रखता है: संचालन का पर्यावरणीय प्रभाव, व्यवसायिक प्रथाओं के सामाजिक निहितार्थ और शासन संरचनाओं की गुणवत्ता.

जिनका कॉर्पोरेट संस्थाओं द्वारा तेजी से उपयोग किया जा रहा है. वे किसी व्यवसाय के पर्यावरण, सामाजिक और शासन-संबंधी प्रदर्शन को मापने में सक्षम बनाते हैं.

- ईएसजी संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों से संबंधित है
- निवेशक किसी कंपनी की स्थिरता, नैतिक प्रथाओं और दीर्घकालिक व्यवहार्यता का मूल्यांकन करने में ईएसजी कारकों पर विचार करते हैं
- ईएसजी लक्ष्य सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं.

ऐसे दौर में जब व्यवसायों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे न केवल लाभ कमाएं बल्कि वैश्विक चुनौतियों का भी समाधान करें, ईएसजी की अवधारणा ने महत्वपूर्ण गति प्राप्त की है. ईएसजी एक समग्र ढांचा है जो कंपनियों की स्थिरता और नैतिक प्रभाव का मूल्यांकन करता है. ईएसजी लक्ष्य निर्धारित करके और उन्हें प्राप्त करके, संगठन एक बेहतर भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं जहां पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक जिम्मेदारी और सुदृढ़ शासन पद्धतियां एक साथ आती हैं. ईएसजी लक्ष्यों के महत्व, व्यवसायिक सफलता पर उनके प्रभाव और एक स्थायी और न्यायसंगत दुनिया को आकार देने में उनकी परिवर्तनकारी क्षमता का पता लगाता है.

ईएसजी, जिसका मतलब है पर्यावरण, सामाजिक और शासन, ईएसजी का पर्यावरणीय पहलू प्राकृतिक दुनिया पर कंपनी के प्रभाव का आकलन करने पर केंद्रित है. इसमें निम्नलिखित कारकों का मूल्यांकन शामिल है:

- ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन, कार्बन पदचिन्ह और जलवायु परिवर्तन को कम करने के प्रयासों को मापना.
- ऊर्जा, जल और कच्चे माल जैसे संसाधनों के कुशल उपयोग का आकलन करना.
- अपशिष्ट प्रबंधन प्रथाओं, प्रदूषण रोकथाम उपायों और पर्यावरण नियमों के पालन का मूल्यांकन करना.
- पारिस्थितिकी तंत्र, आवास संरक्षण और संरक्षण प्रयासों पर पड़ने वाले प्रभाव पर विचार करना.

सामाजिक आयाम: ईएसजी का सामाजिक घटक समाज और हितधारकों पर कंपनी के प्रभाव का मूल्यांकन करता है. इसमें निम्न कारक है:

- निष्पक्ष रोजगार प्रथाओं, श्रमिकों के अधिकारों, स्वास्थ्य और सुरक्षा उपायों तथा कर्मचारी कल्याण का आकलन करना.
- कार्यबल में तथा संगठन के सभी स्तरों पर कार्यस्थल विविधता, समानता और समावेशन को बढ़ावा देने के प्रयासों का मूल्यांकन करना.

ईएसजी लक्ष्य पर्यावरणीय स्थिरता को प्राथमिकता देते हैं, जो जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने, प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करने और पर्यावरणीय जोखिमों को कम करने के लिए महत्वपूर्ण है. कार्बन उत्सर्जन में कमी, ऊर्जा दक्षता, अपशिष्ट प्रबंधन और जिम्मेदार संसाधन उपयोग से संबंधित ईएसजी लक्ष्य निर्धारित करके, कंपनियां भविष्य में अधिक योगदान दे सकती हैं. हमारे पर्यावरण की स्थिरता न केवल पारिस्थितिकी तंत्र की भलाई के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि उन उद्योगों और समाजों की दीर्घकालिक व्यवहार्यता सुनिश्चित करने के लिए भी महत्वपूर्ण है जो उन पर निर्भर हैं.

कई लोगों के लिए, व्यवसाय का मतलब सिर्फ सेवाएं देना या उत्पाद बेचना और पैसे पाना है. हालांकि, ईएसजी लक्ष्यों की अवधारणा पर्यावरण, समाज और शासन पर व्यवसायिक प्रथाओं के व्यापक प्रभाव पर विचार करने के महत्व पर जोर देकर इस संकीर्ण दृष्टिकोण को चुनौती देती है. ईएसजी लक्ष्य अल्पकालिक लाभ से परे जाते हैं और व्यवसायों को दीर्घकालिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं जो स्थिरता, नैतिक व्यवहार और हितधारक कल्याण को ध्यान में रखते हैं. अपनी रणनीतियों में ईएसजी लक्ष्यों को एकीकृत करके, कंपनियां अपने संचालन को पर्यावरण संरक्षण के साथ जोड़ सकती हैं, निष्पक्ष और समावेशी प्रथाओं को बढ़ावा दे सकती हैं, पारदर्शी शासन संरचनाओं को बनाए रख सकती हैं और अंततः एक अधिक टिकाऊ और जिम्मेदार व्यवसायिक पारिस्थितिकी तंत्र में योगदान दे सकती हैं. ईएसजी लक्ष्यों को अपनाने से न केवल सकारात्मक सामाजिक और पर्यावरणीय परिवर्तन होता है बल्कि प्रतिष्ठा भी बढ़ती है, सामाजिक रूप से जागरुक ग्राहक आकर्षित

होते हैं और बदलती बाज़ार मांगों और नियामक आवश्यकताओं के सामने लचीलापन पैदा होता है.

ईएसजी का उपयोग निवेशकों, परिसंपत्ति प्रबंधकों और अन्य हितधारकों द्वारा कंपनियों और संगठनों की स्थिरता और नैतिक प्रथाओं का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है. यह माना जाता है कि निवेश निर्णयों और व्यवसायिक प्रथाओं में ईएसजी विचारों को शामिल करके, कंपनियां दीर्घकालिक वित्तीय प्रदर्शन हासिल कर सकती है, जोखिमों को कम कर सकती हैं, जिम्मेदार निवेशकों को आकर्षित कर सकती हैं, ब्रांड प्रतिष्ठा बढ़ा सकती हैं और सकारात्मक सामाजिक और पर्यावरणीय परिणामों में योगदान दे सकती हैं.

सुधांशु शेखर
क्षेत्रीय प्रमुख
क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़

योग दिवस: केन्द्रीय कार्यालय मुंबई

पर्यावरण रक्षा भविष्य की सुरक्षा

पर्यावरण वह तत्व है जो हमारे चारों ओर के प्राकृतिक तत्वों का समूह है, जिसमें जल, वायु, मृदा, वनस्पति और जीव-जंतु शामिल हैं. यह तत्व हमारे जीवन को संतुलित और सुरक्षित बनाए रखते हैं. लेकिन वर्तमान समय में, मानव गतिविधियों के कारण पर्यावरण में तेजी से बदलाव हो रहे हैं, जो हमारे भविष्य के लिए गंभीर खतरों का संकेत हैं. पर्यावरण रक्षा की आवश्यकता और उसकी दिशा में उठाए जाने वाले कदमों का महत्व समझना अत्यंत आवश्यक है ताकि हम अपने भविष्य को सुरक्षित बना सकें.

पर्यावरण संकट: एक वैश्विक चुनौती

पर्यावरण संकट आज एक वैश्विक समस्या बन चुका है. बढ़ती जनसंख्या, औद्योगीकरण, शहरीकरण और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन इसके मुख्य कारण हैं. इसके परिणामस्वरूप जलवायु परिवर्तन, वायु और जल प्रदूषण, वनस्पति और जीव-जंतुओं की विलुप्ति, और भूमि क्षरण जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं.

1. **जलवायु परिवर्तन:** ग्लोबल वार्मिंग के कारण पृथ्वी का तापमान तेजी से बढ़ रहा है, जिससे बर्फ के ग्लेशियर पिघल रहे हैं और समुद्र का स्तर बढ़ रहा है. इससे तटीय क्षेत्रों में बाढ़ और अन्य आपदाओं का खतरा बढ़ गया है.
2. **वायु प्रदूषण:** उद्योगों, वाहनों और अन्य स्रोतों से निकलने वाले धुएँ और गैसों के कारण वायु प्रदूषण बढ़ रहा है. यह मानव स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा है, जिससे श्वसन संबंधी बीमारियाँ और हृदय रोग बढ़ रहे हैं.
3. **जल प्रदूषण:** घरेलू, औद्योगिक और कृषि कचरे के कारण नदियों, झीलों और समुद्रों का जल प्रदूषित हो रहा है. यह जलजीवों के जीवन के लिए खतरा है और पीने के पानी की कमी को बढ़ा रहा है.
4. **जैव विविधता का ह्रास:** वन क्षेत्रों की कटाई और प्राकृतिक आवासों के विनाश के कारण वन्यजीवों की प्रजातियाँ विलुप्त हो रही हैं. यह जैव विविधता को प्रभावित कर रहा है और पारिस्थितिकी तंत्र में असंतुलन पैदा कर रहा है.

पर्यावरण रक्षा के उपाय

पर्यावरण संकट से निपटने के लिए विभिन्न स्तरों पर कई उपाय किए जा सकते हैं. इनमें सरकार, समाज, और व्यक्तिगत स्तर पर की जाने वाली क्रियाएँ शामिल हैं.

सरकारी स्तर पर उपाय

1. **पर्यावरणीय नीतियाँ और कानून:** सरकार को पर्यावरण संरक्षण के लिए सख्त नीतियाँ और कानून लागू करने चाहिए. औद्योगिक कचरे, वायु और जल प्रदूषण, और वनों की कटाई पर नियंत्रण के लिए सख्त मानदंड निर्धारित किए जाने चाहिए.
2. **नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का प्रोत्साहन:** पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों के स्थान पर सौर, पवन, और जैव ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के उपयोग को बढ़ावा देना चाहिए. यह पर्यावरण को प्रदूषण से बचाने में मदद करेगा.
3. **पर्यावरण शिक्षा और जागरूकता:** सरकार को स्कूलों और कॉलेजों में पर्यावरण शिक्षा को अनिवार्य बनाना चाहिए और जन जागरूकता कार्यक्रम चलाने चाहिए ताकि लोग पर्यावरण की सुरक्षा के महत्व को समझ सकें.

सामुदायिक स्तर पर उपाय

1. **स्थानीय संगठनों की भागीदारी:** स्थानीय संगठनों और समुदायों को पर्यावरण संरक्षण अभियानों में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए. सफाई अभियान, वृक्षारोपण कार्यक्रम और जागरूकता रैलियों का आयोजन करना चाहिए.
2. **स्थानीय स्तर पर कचरा प्रबंधन:** कचरे का सही प्रबंधन आवश्यक है. समुदायों को जैविक और अजैविक कचरे का सही तरीके से निपटान करना चाहिए और पुनर्चक्रण को प्रोत्साहित करना चाहिए.
3. **संवेदनशील क्षेत्रों की सुरक्षा:** स्थानीय समुदायों को अपने आसपास के संवेदनशील पर्यावरणीय क्षेत्रों की सुरक्षा के लिए कदम उठाने चाहिए, जैसे कि नदियों, झीलों, और वन क्षेत्रों का संरक्षण.

व्यक्तिगत स्तर पर उपाय

1. **पर्यावरणीय दृष्टिकोण अपनाना:** प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरणीय दृष्टिकोण अपनाना चाहिए और अपने दैनिक जीवन में पर्यावरण हितैषी उपायों को शामिल करना चाहिए, जैसे कि जल और ऊर्जा की बचत, प्लास्टिक का कम उपयोग, और साइकिल चलाना या पैदल चलना.

2. **वृक्षारोपण:** प्रत्येक व्यक्ति को वृक्षारोपण में भाग लेना चाहिए. वृक्ष कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं और ऑक्सीजन का उत्पादन करते हैं, जिससे वायु की गुणवत्ता में सुधार होता है.

3. **पर्यावरण शिक्षा:** प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए और दूसरों को भी पर्यावरण की सुरक्षा के महत्व के बारे में जागरूक करना चाहिए.

प्रौद्योगिकी और पर्यावरण

प्रौद्योगिकी ने हमारे जीवन को आसान बना दिया है, लेकिन यह पर्यावरण पर भी भारी दबाव डाल रही है. फिर भी, यदि सही तरीके से उपयोग किया जाए, तो प्रौद्योगिकी पर्यावरण की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है.

1. **स्वच्छ ऊर्जा तकनीक:** सौर पैनल, पवन टर्बाइन, और जैव ऊर्जा संयंत्र जैसी स्वच्छ ऊर्जा तकनीकें पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों का एक विकल्प प्रदान करती हैं, जो पर्यावरण को कम प्रदूषित करती हैं.

2. **जल संरक्षण तकनीक:** जल संरक्षण तकनीकें, जैसे कि ड्रिप सिंचाई, वर्षा जल संचयन और जल पुनर्चक्रण, जल संकट को कम करने में मदद कर सकती हैं.

3. **ग्रीन बिल्डिंग:** ग्रीन बिल्डिंग डिजाइन और निर्माण में ऊर्जा और जल की बचत को प्राथमिकता दी जाती है. इसका उद्देश्य पर्यावरणीय प्रभाव को कम करना और स्थिरता को बढ़ावा देना है.

4. **पुनर्चक्रण और अपशिष्ट प्रबंधन:** उन्नत पुनर्चक्रण तकनीकें और अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियाँ कचरे को कम करने और पुन: उपयोग करने में मदद कर सकती हैं, जिससे पर्यावरणीय प्रदूषण को कम किया जा सकता है.

वैश्विक सहयोग

पर्यावरण संकट एक वैश्विक समस्या है और इसे सुलझाने के लिए वैश्विक सहयोग आवश्यक है. विभिन्न देशों के बीच सहयोग और समन्वय से ही इस समस्या का समाधान संभव है.

1. **अंतर्राष्ट्रीय संधियाँ:** विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संधियाँ, जैसे कि क्योटो प्रोटोकॉल और पेरिस समझौता, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण हैं. इन संधियों के माध्यम से देश अपनी नीतियों और क्रियाओं को समन्वित कर सकते हैं.

2. **वैश्विक जागरूकता अभियान:** संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों द्वारा चलाए जा रहे वैश्विक जागरूकता अभियानों का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के महत्व को उजागर करना और विभिन्न देशों को पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रेरित करना है.

3. **तकनीकी और वित्तीय सहायता:** विकसित देशों को विकासशील देशों को पर्यावरण संरक्षण तकनीकों और वित्तीय सहायता प्रदान करनी चाहिए ताकि वे भी पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना कर सकें.

पर्यावरण रक्षा भविष्य की सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है. हमारे पर्यावरण को संरक्षित और सुरक्षित रखने के लिए सरकार, समाज, और प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्तर पर योगदान देना होगा. प्रौद्योगिकी के सही उपयोग और वैश्विक सहयोग से हम इस चुनौती का सामना कर सकते हैं और अपने भविष्य को सुरक्षित बना सकते हैं. पर्यावरण रक्षा न केवल हमारी वर्तमान पीढ़ी के लिए, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी महत्वपूर्ण है. इसलिए, हमें आज ही से पर्यावरण की रक्षा के लिए ठोस कदम उठाने चाहिए ताकि हम एक सुरक्षित और स्वस्थ भविष्य की ओर बढ़ सकें.

धर्मेंद्र सिंह दोहरे
सहायक प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, ग्वालियर

स्वस्थ प्रतिस्पर्धा लाभदायक होती है.

पर्यावरण संरक्षण का अर्थ है पर्यावरण की गुणवत्ता में सुधार

पर्यावरण संरक्षण का अर्थ है पर्यावरण की गुणवत्ता में सुधार, बचाव और उसे बनाए रखना. पर्यावरण संरक्षण के मुख्य तरीके हैं पुनर्चक्रण, पुन: उपयोग और प्रदूषण कम करना; हालाँकि, कुछ अन्य तरीके भी हैं जैसे कि हरित ऊर्जा उत्पादन, हरित परिवहन विकास और पर्यावरण के अनुकूल औद्योगिकीकरण. न केवल निवासियों बल्कि व्यवसायों और उद्योगों को भी पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए अपनी बुनियादी भूमिका निभानी चाहिए.

पर्यावरण संरक्षण का इतिहास

मानव जाति हमेशा से पर्यावरण के बारे में चिंतित रही है. प्राचीन यूनानियों ने सबसे पहले पर्यावरण दर्शन विकसित किया था, और उनके बाद भारत और चीन जैसी अन्य प्रमुख सभ्यताओं ने भी इसका अनुसरण किया. हाल के दिनों में, पारिस्थितिकी संकट के बारे में बढ़ती जागरूकता के कारण पर्यावरण के लिए चिंता बढ़ गई है. क्लब ऑफ रोम, एक थिंक टैंक, अपनी रिपोर्ट ''द लिमिट्स टू ग्रोथ'' (1972) में दुनिया को अधिक जनसंख्या और प्रदूषण के खतरों के बारे में चेतावनी देने वाले पहले लोगों में से एक था.

पर्यावरणवाद के शुरुआती दिनों में, लोगों का मानना था कि प्रकृति की रक्षा करने का सबसे अच्छा तरीका उन क्षेत्रों को अलग रखना है जहाँ मनुष्य पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुँचाएँगे. इस दृष्टिकोण को, जिसे संरक्षण के रूप में जाना जाता है, 1916 में राष्ट्रीय उद्यान सेवा की स्थापना के साथ संयुक्त राज्य अमेरिका में एक बड़ा बढ़ावा मिला.

आधुनिक पर्यावरण आंदोलन की शुरुआत 1960 के दशक में हुई जब पर्यावरण पर मनुष्यों के नकारात्मक प्रभाव के बारे में चिंताएँ बढ़ने लगीं. इन चिंताओं के जवाब में, दुनिया भर की सरकारों ने पर्यावरण की रक्षा के लिए कानून पारित करना शुरू कर दिया. उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका में पर्यावरण संरक्षण एजेंसी (EPA) की स्थापना 1970 में की गई थी.

पर्यावरण संरक्षण के सिद्धांत

पर्यावरण संरक्षण के तीन मूलभूत सिद्धांत हैं:

एहतियाती सिद्धांत: यह सिद्धांत कहता है कि यदि किसी गतिविधि से पर्यावरण को नुकसान पहुंचने की संभावना है, तो उस नुकसान को रोकने के लिए कदम उठाए जाने चाहिए, भले ही इस बात का कोई स्पष्ट सबूत न हो कि गतिविधि हानिकारक है.

प्रदूषण फैलाने वाला भुगतान करेगा सिद्धांत: इसमें कहा गया है कि प्रदूषण फैलाने के लिए जिम्मेदार पक्ष को ही इसकी सफाई के लिए जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए.

जनता को जानने का अधिकार का सिद्धांत: यह सिद्धांत कहता है कि जनता को पर्यावरण के लिए किसी भी संभावित खतरे के बारे में जानने का अधिकार है और उन्हें संबोधित करने के लिए क्या किया जा रहा है.

पर्यावरण संरक्षण के लक्ष्य

पर्यावरण संरक्षण के तीन मुख्य लक्ष्य हैं:

मानव स्वास्थ्य की रक्षा करना: यह पर्यावरण संरक्षण का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य है क्योंकि मनुष्य स्वस्थ पर्यावरण के बिना जीवित नहीं रह सकता.

पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा करना: पारिस्थितिकी तंत्र पृथ्वी पर जीवन की नींव हैं, और वे मनुष्यों को कई लाभ प्रदान करते हैं, जैसे स्वच्छ हवा और पानी, भोजन और फाइबर.

सतत विकास को बढ़ावा देना: सतत विकास वह विकास है जो भविष्य की पीढ़ियों की अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करता है.

पर्यावरण संरक्षण

पर्यावरण संरक्षण एक ऐसा अभ्यास है जिसका उद्देश्य प्राकृतिक पर्यावरण को व्यक्तियों, संगठनों और सरकारों के हाथों से बचाना है. यह समय की मांग है क्योंकि पृथ्वी का पर्यावरण हर दिन खराब होता जा रहा है और इसका कारण मनुष्य हैं. वे अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए पृथ्वी के पर्यावरण को गलत तरीके से संभाल रहे हैं. अगर ऐसा ही चलता रहा तो यह कहना मुश्किल है कि आने वाली पीढ़ी के पास रहने के लिए सुरक्षित वातावरण होगा. इस निबंध के माध्यम से आप पर्यावरण संरक्षण के महत्व को जानेंगे.

हमारे प्राकृतिक पर्यावरण को बिगड़ने से बचाना बहुत ज़रूरी है और ऐसा करने का एकमात्र तरीका पर्यावरण संरक्षण है. इस प्रक्रिया को हर देश को जल्द से जल्द अपनाना चाहिए, इससे पहले कि बहुत देर

हो जाए. इस प्रक्रिया का उद्देश्य सभी प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना और पर्यावरण के कुछ हिस्सों की मरम्मत करने की कोशिश करना है, जिनकी मरम्मत संभव है. अत्यधिक उपभोग, जनसंख्या वृद्धि और प्रौद्योगिकी के तेज़ विकास के कारण जैवभौतिक पर्यावरण स्थायी रूप से ख़राब हो रहा है. अगर सरकार इन गतिविधियों को नियंत्रित तरीके से करने के लिए रणनीति बनाती है तो इसे रोका जा सकता है. यह पर्यावरण संरक्षण निबंध छात्रों के लिए उस पर्यावरण को समझने में बहुत मददगार हो सकता है जिसमें वे रह रहे हैं.

स्वैच्छिक पर्यावरण समझौते

स्वैच्छिक पर्यावरण समझौते अधिकांश औद्योगिक देशों में लोकप्रिय हो रहे हैं. पर्यावरण संरक्षण पर इस नि:शुल्क निबंध के माध्यम से, कोई भी इस प्रकार के समझौते के बारे में अधिक जान सकेगा. ये समझौते कंपनियों को एक ऐसा मंच प्रदान करते हैं जहाँ उन्हें मान्यता दी जाती है कि वे पर्यावरण की रक्षा के लिए न्यूनतम नियामक मानकों से आगे बढ़ रहे हैं. ये समझौते सर्वोत्तम पर्यावरण प्रथाओं में से एक के विकास का समर्थन करते हैं. उदाहरण के लिए, भारत पर्यावरण सुधार ट्रस्ट (ईआईटी) वर्ष 1998 से इस पर्यावरण क्षेत्र में काम कर रहा है. इस पर्यावरण संरक्षण निबंध के माध्यम से, कोई भी बहुत कुछ सीख सकता है.

पारिस्थितिकी तंत्र दृष्टिकोण

पर्यावरण संरक्षण के लिए पारिस्थितिकी तंत्र दृष्टिकोण का उद्देश्य केवल विशिष्ट मुद्दों और चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय निर्णय लेने की प्रक्रिया में पारिस्थितिकी तंत्र के जटिल अंतर्संबंधों पर विचार करना है. पर्यावरण संरक्षण निबंध लेखन इस दृष्टिकोण का अधिक सटीक अवलोकन देगा. पारिस्थितिकी तंत्र दृष्टिकोण का उद्देश्य सूचना के बेहतर हस्तांतरण का समर्थन करना, ऐसी रणनीतियाँ विकसित करना है जो संघर्षों को हल कर सकें और क्षेत्रीय संरक्षण में सुधार कर सकें. इस दृष्टिकोण ने पर्यावरण की रक्षा में एक प्रमुख भूमिका निभाई है. यह दृष्टिकोण यह भी कहता है कि धर्म भी पर्यावरण के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं.

अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण समझौते

वर्तमान परिदृश्य में, पृथ्वी के कई प्राकृतिक संसाधन मनुष्यों और विभिन्न देशों में पर्यावरण के प्रति उनकी लापरवाही के कारण असुरक्षित हो गए हैं. इसके परिणामस्वरूप, कई देशों और उनकी सरकारों ने प्राकृतिक पर्यावरण पर मानवीय प्रभाव को कम करने और इसे बिगड़ने से बचाने के लिए विभिन्न समझौते किए हैं. अंग्रेजी में इस पर्यावरण संरक्षण निबंध के माध्यम से, इस मामले पर विशेष रूप से एक बहुत स्पष्ट दृष्टिकोण प्राप्त होगा.

विभिन्न देशों की सरकारों के बीच किए गए समझौतों को अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण समझौते के रूप में जाना जाता है. इस समझौते में जलवायु, महासागर, नदियाँ और वायु प्रदूषण जैसे कारक शामिल हैं. ये समझौते कभी-कभी कानूनी रूप से बाध्यकारी होते हैं, और यदि उनका पालन नहीं किया जाता है, तो इससे कुछ कानूनी निहितार्थ हो सकते हैं. इन समझौतों का कुछ बहुराष्ट्रीय समझौतों के साथ एक लंबा इतिहास है जो वर्ष 1910 में यूरोप, अमेरिका और अफ्रीका में किए गए थे. कुछ सबसे प्रसिद्ध अंतर्राष्ट्रीय समझौते क्योटो प्रोटोकॉल और पेरिस समझौता हैं. इस पर्यावरण संरक्षण निबंध के माध्यम से, यह स्पष्ट है कि सरकारें पर्यावरण के मुद्दे को हल करने के लिए कदम उठा रही हैं, लेकिन यह पर्याप्त नहीं है.

पर्यावरण संरक्षण पर अंग्रेजी में एक संक्षिप्त अनुच्छेद

पृथ्वी रहने के लिए एक खूबसूरत जगह है, जहाँ जीवित प्राणियों के लिए सबसे अनुकूल पर्यावरणीय परिस्थितियाँ हैं. लेकिन हम मनुष्य इसे कमजोर बना रहे हैं और अपने घरों को ऐसी गतिविधियों से नष्ट कर रहे हैं जो बढ़ती दर से प्रदूषण पैदा कर रही हैं. पर्यावरण की रक्षा पर इस निबंध में, 200 शब्दों में पर्यावरण को कैसे बचाया जाए, इस पर ठीक से समझाया जाएगा.

पर्यावरण संरक्षण समय की मांग बन गया है क्योंकि यह हर दिन नष्ट होता जा रहा है. इसलिए, सरकारें नीतियां बना रही हैं और अन्य देशों के साथ समझौते कर रही हैं ताकि ऐसी रणनीति बनाई जा सके जिससे पर्यावरण की रक्षा हो सके. कुछ कंपनियों का भी यही उद्देश्य है कि पर्यावरण को इंसानों की गतिविधियों से बचाया जाए.

पर्यावरण संरक्षण पर इस छोटे से लेख में यह स्पष्ट है कि यदि अचानक कदम नहीं उठाए गए तो हमारी आने वाली पीढ़ी को प्रदूषित वातावरण में रहना पड़ेगा, जिसे संरक्षित करना बहुत मुश्किल है. पर्यावरण संरक्षण एक सुरक्षित भविष्य की कुंजी है जिसमें रहने के लिए एक सुंदर वातावरण हो.

निष्कर्ष

हर साल बढ़ते प्रदूषण और प्राकृतिक पर्यावरण के बिगड़ने के कारण, प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा के लिए कदम उठाना ज़रूरी हो गया है. जैसा कि हम जानते हैं कि इन सभी समस्याओं का कारण मनुष्य ही है, सरकारों को पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने वाली उनकी गतिविधियों को प्रतिबंधित करने के लिए नीतियाँ बनानी चाहिए. अगर उन्हें तत्काल नहीं रोका गया, तो आने वाले सालों में दुनिया को कुछ भयावह विनाश देखने को मिल सकता है. उदाहरण के लिए, जलवायु परिवर्तन एक बहुत बड़ी समस्या रही है और यह बढ़ते प्रदूषण के कारणों में से एक है. एक सुरक्षित भविष्य समग्र रूप से पर्यावरण पर निर्भर करता है.पर्यावरण

के प्रमुख घटक हैं वायु, जल, और मृदा. इन घटकों का संतुलन बनाए रखना और उनकी सुरक्षा करना हमारी जिम्मेदारी है. पर्यावरण के संरक्षण के बिना हमारा समग्र विकास और उन्नति संभव नहीं है.

आजकल पर्यावरणीय मुद्दों का सामना करना हमारे लिए बड़ी चुनौती बन गया है. वन्य जीवन की भूमिका, जलवायु परिवर्तन, और विकास के साथ पर्यावरण की संतुलन स्थिति का संरक्षण करना जरूरी है.

पर्यावरण संरक्षण के लिए हमें जनजागरूकता फ़ैलानी होगी और प्रभावी कदम उठाने होंगे. ऊर्जा की बचत, अपशिष्ट प्रबंधन, वृक्षारोपण, और साइकलिंग जैसे अभियानों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए.

अगर हम अपने पर्यावरण की सुरक्षा नहीं करेंगे तो न केवल हमारी पीढ़ियों को प्रभावित किया जाएगा, बल्कि पूरे पृथ्वी ग्रह की स्थिति पर भी असर पड़ेगा. इसलिए, हम सभी को अपनी जिम्मेदारी समझकर पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता बढ़ानी चाहिए और सुरक्षित और स्वस्थ भविष्य के लिए कठोर प्रयास करने चाहिए.

रोहित कुमार
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय मेरठ

''उम्र''.....

''उम्र''
एक नंबर है,
कल कुछ थी, आज कुछ है, कल कुछ और होगी .
पल पल बदलना, हर पल चलना
नियति को समझना,
जीवन ही इतना है.

अपनो की अपेक्षाएं, संबंधों की विविधतायें,
स्वयं की व्यथाएँ,
जीवन की अनिगत है, दुविधाएं.

किसी ने समझा, किसी ने माना,
जान कर भी कोई रहा अनजाना,
जीवन को हमने इतना ही पहचाना.

न व्यक्त कर पाए, न यत्न कर पाए,
संबंधों में विचारों को, अव्यक्त ही रख पाए.
जीवन मिला बहुत मिला,
बस उसको अभिव्यक्त न कर पाए.

उम्र एक नम्बर है,
आज फिर बढ़ गई, एक साल और जुड़ गई,
जीवित लिखित इस आस में, एक आस और मिल गई,
उम्र की किताब में , एक बात और बढ़ गई..

चलो फिर एक संकल्प लूं,
फिर से चलूँ, अथक बढ़ूं ,
दिल से जियूं, मन भर हसूं,
कुछ कह सकूँ, कुछ लिख सकूँ ,
जीवन की इस किताब को फिर से लिखूं, फिर से कहूँ..

सरिता जैन
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर

हरित क्षितिज: टिकाऊ विकास के लिए ईएसजी का महत्व

प्रस्तावना :

''हमारे ग्रह को बचाना, लोगों को गरीबी से बाहर निकालना, आर्थिक विकास को आगे बढ़ाना... ये एक ही लड़ाई हैं.'' -बान की मून, पूर्व संयुक्त राष्ट्र महासचिव

विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ), एक वार्षिक वैश्विक जोखिम रिपोर्ट जारी करता है जिसमें शीर्ष वैश्विक जोखिम शामिल है. वर्ष 2023 की रिपोर्ट में जलवायु परिवर्तन को कम करने में विफलता, जलवायु की विफलता परिवर्तन अनुकूलन, प्राकृतिक आपदाएँ और चरम मौसम की घटनाएँ, जैव विविधता की हानि और निकट भविष्य में पारिस्थितिकी तंत्र के पतन को प्रमुख चुनौतियों के रूप में सूचीबद्ध किया गया था.इन सब चुनितियो से निपटने का एक ही उपाय है - टिकाऊ विकाश (सस्टैनब्ले डेवेलेप्मैंट).जिसका अर्थ है - ''भविष्य की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की जरूरतों को पूरा करना''. जिसके लिये पर्यावरण, सामाजिक और अच्छे शासन की बहुत जरुरत है. पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ईएसजी) मानदंड किसी कंपनी के परिचालन के लिए मानकों का एक सेट है जिसका उपयोग सामाजिक रूप से जागरूक निवेशक संभावित निवेशों की स्क्रीनिंग के लिए करते हैं. ईएसजी मानदंड ने विश्व स्तर पर महत्वपूर्ण लोकप्रियता हासिल की है क्योंकि व्यवसाय और निवेशक तेजी से टिकाऊ और नैतिक प्रथाओं के महत्व को पहचान रहे हैं.

ईएसजी की उत्पत्ति

ईएसजी की अवधारणा का पता 1960 और 1970 के दशक में लगाया जा सकता है जब सामाजिक रूप से जिम्मेदार निवेश (एसआरआई) का विचार उभरा. निवेशकों ने न केवल वित्तीय रिटर्न बल्कि अपने निवेश के नैतिक निहितार्थों पर भी विचार करना शुरू कर दिया. हालाँकि, ईएसजी की औपचारिकता, जैसा कि हम आज जानते हैं, 2000 के दशक की शुरुआत में शुरू हुई थी. ''ईएसजी'' शब्द का पहली बार आधिकारिक तौर पर 2005 में ''हू केयर्स विन्स'' (Who Cares Wins) (शीर्षक वाली रिपोर्ट में इस्तेमाल किया गया था, जो संयुक्त राष्ट्र ग्लोबल कॉम्पैक्ट, इंटरनेशनल फाइनेंस कॉर्पोरेशन (आईएफसी) और स्विस सरकार की एक पहल का परिणाम था. इस रिपोर्ट ने पूंजी बाजार और निवेश निर्णयों में पर्यावरण, सामाजिक और शासन कारकों को एकीकृत करने के महत्व पर प्रकाश डाला.

ईएसजी का अधिदेश

ईएसजी का काम यह सुनिश्चित करना है कि कंपनियां ऐसे तरीके से काम करें जो पर्यावरण की दृष्टि से टिकाऊ, सामाजिक रूप से जिम्मेदार और नैतिक सिद्धांतों द्वारा शासित हो. ईएसजी मानदंड में मुद्दों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है:

पर्यावरण: इसमें ग्रह पर कंपनी का प्रभाव शामिल है, जैसे कि इसके कार्बन पदचिह्न, अपशिष्ट प्रबंधन प्रथाएं और नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग.

सामाजिक: इसमें कंपनी के कर्मचारियों, ग्राहकों, आपूर्तिकर्ताओं और उन समुदायों के साथ संबंध शामिल हैं जहां वह काम करती है. मुद्दों में श्रम प्रथाएं, विविधता, मानवाधिकार और सामुदायिक जुड़ाव शामिल हैं.

शासन: यह कंपनी के नेतृत्व, कार्यकारी वेतन, ऑडिट, आंतरिक नियंत्रण और शेयरधारक अधिकारों से संबंधित है.

व्यापक उद्देश्य पर्यावरण, सामाजिक और शासन संबंधी मुद्दों से जुड़े जोखिमों और अवसरों का प्रबंधन करके शेयरधारकों और हितधारकों दोनों के लिए दीर्घकालिक मूल्य बनाना है.

ईएसजी रिपोर्टिंग

ईएसजी रिपोर्टिंग हितधारकों को पर्यावरण, सामाजिक और शासन डेटा का खुलासा करने की प्रथा है. यह कॉर्पोरेट पारदर्शिता और जवाबदेही का एक महत्वपूर्ण पहलू बन गया है. कंपनियां आमतौर पर ईएसजी रिपोर्ट या स्थिरता रिपोर्ट प्रकाशित करती हैं जो उनके ईएसजी प्रदर्शन और रणनीतियों में अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं.

ईएसजी रिपोर्टिंग के लिए प्रमुख रूपरेखाओं और मानकों में शामिल हैं:

वैश्विक रिपोर्टिंग पहल (जीआरआई): स्थिरता रिपोर्टिंग के लिए व्यापक दिशानिर्देश प्रदान करता है.

स्थिरता लेखा मानक बोर्ड (एसएएसबी): ईएसजी प्रकटीकरण के लिए उद्योग-विशिष्ट मानकों पर ध्यान केंद्रित करता है.

जलवायु-संबंधी वित्तीय प्रकटीकरण पर टास्क फोर्स (टीसीएफडी): जलवायु-संबंधित वित्तीय प्रकटीकरणों की अनुशंसा करता है.

एकीकृत रिपोर्टिंग (आईआर): एक समग्र रिपोर्ट में वित्तीय और गैर-वित्तीय प्रदर्शन को जोड़ती है.

भारत में, भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) ने बाजार पूंजीकरण द्वारा शीर्ष 1,000 सूचीबद्ध कंपनियों के लिए ईएसजी प्रकटीकरण अनिवार्य कर दिया है, जिससे उन्हें व्यावसायिक जिम्मेदारी और स्थिरता रिपोर्ट (बीआरएसआर) जमा करने की आवश्यकता होगी.

भारतीय परिदृश्य में यूएनडीजी के साथ जुड़ाव

संयुक्त राष्ट्र विकास लक्ष्य (यूएनडीजी), जिसे आमतौर पर सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) के रूप में जाना जाता है, गरीबी को समाप्त करने, ग्रह की रक्षा करने और 2030 तक सभी के लिए समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए कार्रवाई का एक सार्वभौमिक आह्वान है. ईएसजी सिद्धांत एसडीजी से निकटता से जुड़े हुए हैं, और ईएसजी मानदंडों को एकीकृत करना इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है.

भारत में, देश की अद्वितीय सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों और पर्यावरणीय चिंताओं के कारण ईएसजी और यूएनडीजी के बीच संबंध विशेष रूप से प्रासंगिक है. भारतीय कंपनियां तेजी से यह स्वीकार कर रही हैं कि एसडीजी के साथ अपने परिचालन को संरेखित करने से स्थायी विकास और दीर्घकालिक लाभप्रदता हो सकती है. उदाहरण स्वरूप:

पर्यावरणीय लक्ष्य: कंपनियां अपने कार्बन पदचिह्न को कम करने, अपशिष्ट प्रबंधन और नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित कर रही हैं, जो एसडीजी 13 (जलवायु कार्रवाई) और एसडीजी 7 (सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा) के साथ संरेखित है.

सामाजिक लक्ष्य: श्रम प्रथाओं में सुधार, लैंगिक समानता को बढ़ावा देना और सामुदायिक विकास का समर्थन करने वाली पहल एसडीजी 5 (लिंग समानता) और एसडीजी 8 (सभ्य कार्य और आर्थिक विकास) के अनुरूप हैं.

शासन लक्ष्य: नैतिक व्यावसायिक प्रथाओं और मजबूत शासन संरचनाओं को सुनिश्चित करना एसडीजी 16 (शांति, न्याय और मजबूत संस्थान) का समर्थन करता है.

भारत में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) इस संरेखण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. यह टिकाऊ प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए व्यवसायों के साथ सहयोग करता है और कंपनियों को एसडीजी के साथ ईएसजी मानदंडों को एकीकृत करने में मदद करने के लिए रूपरेखा और मार्गदर्शन प्रदान करता है. भारत एसडीजी इन्वेस्टर मैप जैसी पहल के माध्यम से, यूएनडीपी उन निवेश अवसरों की पहचान करता है जो प्रमुख विकास चुनौतियों का समाधान करते हुए आर्थिक विकास को गति दे सकते हैं.

ईएसजी मे नेट जीरो क्या है?

नेट-जीरो, जो कार्बन-तटस्थता को भी संदर्भित करता है, का अर्थ है पृथ्वी को गर्म करने वाली ग्रीनहाउस गैस (जीएचजी) उत्सर्जन (कार्बन डाइऑक्साइड, नाइट्रस ऑक्साइड, मीथेन, आदि) की मात्रा और जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए वायुमंडल से हटाई गई मात्रा के बीच संतुलन.

'नेट जीरो' की परिभाषा का अर्थ है कि उत्सर्जन को संतुलित करने के प्रयासों से उसे संतुलित किया जाता है, इनमें पेड़ लगाना, औद्योगिक प्रक्रियाओं में बदलाव करना, वनों को बहाल करना या तेल और कोयले के जलने से उत्सर्जित कार्बन को संग्रहीत करने और कैप्चर करने के लिए प्रकृति के अनुकूल प्रौद्योगिकी का उपयोग करना शामिल है.

वर्तमान में, पृथ्वी पहले से ही 1800 के दशक के अंत की तुलना में लगभग 1.1 डिग्री सेल्सियस अधिक गर्म है, और उत्सर्जन में वृद्धि जारी है. ग्लोबल वार्मिंग को 1.5 डिग्री सेल्सियस से अधिक न रखने के लिए - जैसा कि पेरिस समझौते में कहा गया है - उत्सर्जन को 2030 तक 45% कम करने और 2050 तक शुद्ध शून्य तक पहुंचने की आवश्यकता है.

माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने ग्लासगो COP26 शिखर सम्मेलन में घोषणा की कि भारत 2070 तक शुद्ध शून्य के लक्ष्य तक पहुंच जाएगा.

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया की ईएसजी के प्रति प्रतिबद्धता:-

- बैंक ने अपनी 5 साल की रणनीति - ईएसजी पर विजन डॉक्यूमेंट 21 दिसंबर 2023 को जारी किया .
- बैंक ने 2028 तक स्कोप 1 के तहत नेट जीरो हासिल और स्कोप 2 उत्सर्जन को 50% तक कम करें करने के महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किए हैं.
- विज़न दस्तावेज़ हरित और टिकाऊ परियोजनाओं के मूल्यांकन के लिए एक व्यापक रूपरेखा प्रस्तुत करता है
- ईएसजी लक्ष्यों के अनुरूप पात्र परियोजनाओं को प्रोत्साहित करने के लिए, बैंक ने ठअवेयर मॉनिटर-रिवार्डठ नियम पेश किया है.
- बैंक नवीकरणीयऊर्जा स्रोत में परिवर्तन के लिए और उन कार्यों को जो पर्यावरण को नुकसान पहुंचाते है, सिमित करने के लिये प्रतिबद्ध है
- बैंक सभी कर्मचारियों को जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के बारे में सभी को शिक्षित करने की पहल करेगा.

पर्यावरण :-

- बैंक विभिन्न ग्रीन फाइनेंस प्रदान करते हैं , जिनमें योजनाएं शामिल हैं: - एमएसएमई के लिए ऊर्जा दक्षता योजना, सेंट गो ग्रीन (इलेक्ट्रिक वाहन के लिए), सेंट कुसुम (सौर उपकरण के लिए),
- बैंक ने सेंट ग्रीन डिपॉजिट स्कीम के तहत? 40 करोड़ से अधिक जुटाए हैं.
- बैंक ने इलेक्ट्रॉनिक्स गैजेट और आईटी हार्डवेयर निपटान नीति (ई-कचरा निपटान नीति) लागू किया है . इसके अंतर्गत वित्त वर्ष 23-24 में 6000 से अधिक उपकरणों का निपटान किया गया.
- डीएमएस - बैंक ने दस्तावेज़ प्रबंधन प्रणाली का विस्तार किया है, सभी प्रशासनिक कार्यालय में डिजिटल दस्तावेज़ीकरण को बढ़ावा दिया हैं, जिससे कागज के उपयोग में कमी आई है.

सामाजिक:-

- बैंक, नई भर्तियों के लिए प्रेरण कार्यक्रम में ईएसजी तथा बैंक की रणनीतियों पर एक सत्र शामिल करेगा.
- बैंक ने रामानुजन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के साथ ''ईएसजी के बुनियादी सिद्धांत और वहनीयता'' प्रमाणीकरण पाठ्यक्रम के लिये एक एमओयू पर हस्ताक्षर किया है.
- 2700 कर्मचारियों के प्रथम बैच ने प्रमाणीकरणसफलतापूर्वक पूरा कर लिया है.
- बैंक ने अनियमितता, जो आगे जाकर फ्रौड (धोखा) में बदल जाये, कि रिपोर्ट करने वाले कर्मचारियों को पहचानें के लिये ब्रेवहार्ट पुरस्कार की शुरुआत की है.
- बैंक समसामयिक ईएसजी-संबंधित विषयों पर इसके ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म पर पाठ्यक्रम शुरू करने की योजना बना रहा है

शासन:-

- बैंक ने ईएसजी पहलों का कार्यान्वयन की समीक्षा हेतु मजबूत शासन संरचना की तैयारी की है.
- बैंक ने ईएसजी पर एक टास्क फोर्स बनाई है.
- बैंक ने वैश्विक अर्थशास्त्र औरभारतीय नियामक विकास पर प्रतिक्रिया सवरुप आगामी वित्तीय वर्ष (वित्त वर्ष 24-25) में ईएसजी नीति को अपडेट किया है.
- बैंक, पांच अन्य सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक के साथ ईएसजी पर आईबीए स्टैंडिंग समिति का हिस्सा है.

उपसंहार

ईएसजी मानदंडों को अपनाना और एकीकरण करना स्थायी व्यावसायिक प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है जो दीर्घकालिक मूल्य निर्माण को बढ़ावा दे सकते हैं. सामाजिक रूप से जिम्मेदार निवेश के सिद्धांतों से उत्पन्न, ईएसजी एक व्यापक ढांचे में विकसित हुआ है जो महत्वपूर्ण पर्यावरण, सामाजिक और शासन संबंधी मुद्दों को संबोधित करता है. भारत में, यूएनडीजी के साथ ईएसजी का संरेखण उस महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है जो व्यवसाय सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं. मजबूत ईएसजी प्रथाओं को अपनाकर, भारतीय कंपनियां न केवल अपने प्रतिस्पर्धी लाभ को बढ़ा सकती हैं, बल्कि देश के सतत विकास एजेंडे में सार्थक योगदान भी दे सकती हैं.

श्री राकेश कुमार सैनी
मुख्य प्रबंधक/संकाय सदस्य
सर एसपीबीटी महाविद्यालय, मुंबई

पदोन्नति

सेन्ट्रलाइट परिवार की ओर से हार्दिक बधाई

श्री अजय खन्ना
महाप्रबंधक

श्री अश्विनी धींगड़ा
महाप्रबंधक

श्री एस एस मूर्ति
महाप्रबंधक

श्री एस के सिंह
उप महाप्रबंधक

श्री आर एस मीणा
उप महाप्रबंधक

श्री मेहेर कुमार पाणीग्राही
उप महाप्रबंधक

श्री एस सी मीणा
उप महाप्रबंधक

श्री रामाकृष्णन
उप महाप्रबंधक

श्री सुनील सरकार
उप महाप्रबंधक

श्री अजय गोयल
उप महाप्रबंधक

संगठन की सामूहिक शक्ति

कई बार हम कोई ऐसा काम करते हैं, जो हमारे लिए बोझिल हो जाता है और वह पूरा भी नहीं होता. उस काम में पूरी शक्ति लगाने के बाद भी वह काम अधूरा ही रहता है. वहीं, एक टीम किसी भी जटिल और कठिन काम को आसानी से पूरा कर देती है. टीम वर्क का बहुत महत्व है. यह कहने में आसान लगता है, लेकिन एक टीम को बनाए रखना और उसे प्रेरित करते रहना सबसे बड़ी चुनौती है.

एक समय की बात है. एक व्यक्ति बड़े से शिलाखंड को बैलगाड़ी पर चढ़ाने की कोशिश कर रहा था, लेकिन काफी मेहनत और कई कोशिशों के बावजूद वह उस पत्थर को बैलगाड़ी पर नहीं चढ़ा पा रहा था. वहां से गुजर रहा एक राहगीर बड़ी देर से उसकी यह कोशिश देख रहा था. कुछ समय बाद वह उस व्यक्ति के पास आया. उस राहगीर ने उससे बोला, माफ करें, लेकिन आप गलत तरह से काम कर रहे हैं. इस तरह आप पत्थर को बैलगाड़ी में नहीं चढ़ा पाएंगे. पसीने से लथपथ उस इंसान को गुस्सा आ गया. वह बोला, तुम अपना काम करो, मैं पहले भी पत्थर चढ़ा चुका हूं. राहगीर जानता था कि वह व्यक्ति स्वाभिमानी है और वह मदद नहीं लेगा. इसलिए उसने कहा, मैं आपको एक तरीका बताना चाहता हूं, जिससे आप आसानी से इसे बैलगाड़ी में चढ़ा सकते हैं.

राहगीर की बात सुनकर वह व्यक्ति थोड़ा गुस्सा हुआ. उस व्यक्ति ने उस शिलाखंड को जमीन पर टिका दिया और सीधा तन कर खड़ा हो गया और बोला, बताओ, तुम कौन-सा ऐसा तरीका बताना चाहते हो, जिसे मैं नहीं जानता. इस पर राहगीर ने पत्थर का एक कोना उठाया और बोला, अगर हम दोनों मिलकर पत्थर को उठाएं, तो हम इसे बैलगाड़ी में चढ़ा सकते हैं. वह व्यक्ति मुस्कराया और दोनों ने पत्थर को पकड़ कर बैलगाड़ी में चढ़ा दिया.

टीम भावना एक अवधारणा है जिसे उस बंधन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो एक ही विभाग या कार्य समूह के कर्मचारियों को एकजुट करता है . यह किसी संस्था के प्रदर्शन में काफी हद तक कम आंका गया कारक है. यह न केवल कर्मचारियों की प्रेरणा बढ़ाता है, बल्कि समूह की गतिशीलता और संगठन के समग्र प्रदर्शन में भी योगदान देता है. एक साथ काम करने और सामान्य निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए एकजुट और प्रतिबद्ध टीम आवश्यक है . लिंक्डइन के एक अध्ययन के अनुसार, 97% कर्मचारियों और प्रबंधकों का मानना है कि टीम के भीतर सामंजस्य की कमी किसी कार्य या परियोजना के परिणामों को प्रभावित करती है. टीम भावना पैदा करने के लिए समूह तालमेल और एक सामान्य परियोजना में सभी की भागीदारी की आवश्यकता होती है . दूसरे शब्दों में, यह संस्था या संगठन के प्रदर्शन के लिए एक वास्तविक रणनीतिक हिस्सेदारी है.

मजबूत टीम भावना रचनात्मकता और नवीनता के लिए फायदेमंद है क्योंकि यह कर्मचारियों को विचार साझा करने और उन्हें विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करती है. टीम वर्क में निर्णय आमतौर पर एक साथ लिए जाते हैं. इससे टीम के सदस्यों के प्रेरणा स्तर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है. वे जानते हैं कि उनकी राय मायने रखती है और उनके योगदान पर हमेशा विचार किया जाएगा. एक मूल्यवान और मान्यता प्राप्त कार्य टीम के सदस्यों की भागीदारी और लक्ष्यों की प्राप्ति का पक्षधर है. जब टीम समान दृष्टिकोण साझा करती है, तो कर्मचारी अपनी भागीदारी बढ़ाते हैं और निर्णय लेने का दायित्व उसके सभी सदस्यों पर होता है. इससे अपनेपन और साझा जिम्मेदारी की भावना पैदा होती है जो उन्हें सटीक और सावधानीपूर्वक काम के महत्व से अवगत कराती है. एक अच्छी टीम होने का मतलब है एक अच्छा प्रबंधक होना! प्रबंधक की भूमिका अपनी टीम के सदस्यों को एक समान लक्ष्य की ओर संगठित करना और एक साथ लाना है. जिन टीमों में अच्छे संबंध होते हैं और जहां सम्मान, खुलापन और सुनने की क्षमता होती है, टीम के सदस्यों के पास सफल होने के लगभग सभी साधन होते हैं. डिजिटल युग में, सहयोगी डिजिटल उपकरणों का समूह सामंजस्य पर उल्लेखनीय प्रभाव पड़ता है. कार्यालय और दूरस्थ कार्यालयों दोनों में, वे संचार की सुविधा प्रदान करते हैं, जानकारी साझा करने को अधिक तरल बनाते हैं और कर्मचारियों के बीच बातचीत उत्पन्न करते हैं. सामान्य तौर पर, वे अच्छे समय प्रबंधन में योगदान करते हैं. सामान्य महत्वाकांक्षाओं के इर्द-गिर्द एक टीम को एक साथ लाने के लिए, प्रबंधक के लिए खुद को एक नेता के रूप में स्थापित करना पर्याप्त नहीं है. उसे मार्गदर्शक की भूमिका निभाने और समूह तालमेल बनाने के लिए सहभागी प्रबंधन और सह-निर्माण का उपयोग करने की भी आवश्यकता है. टीमों को सशक्त बनाना और सभी की राय और योगदान को ध्यान में रखना टीम भावना (भले ही दूरस्थ रूप से) में सुधार के लिए निर्विवाद कारक हैं. आंतरिक प्रश्नावली और सर्वेक्षणों के माध्यम से टीम भावना को मापना संभव है. समय के साथ मूल्यांकन टीम की प्रगति पर नज़र रखने और सुधार के लिए कार्यों को लागू करने के लिए एक संदर्भ आधार के रूप में कार्य करता है.

एक साथ काम करना और ज्ञान साझा करना हमेशा व्यक्तिगत पेशेवर विकास में योगदान देता है. एक कार्य वातावरण जहां लोग स्वतंत्र रूप से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकते हैं, किसी के विकास के क्षेत्र को चुनने और उस पर काम करने के लिए अनुकूल है. दूसरों से सीखना हमेशा अच्छा होता है. साथियों और प्रबंधकों के साथ नियमित कार्य-संबंधी चर्चा और बातचीत आपको अपनी ताकत पहचानने और अपनी कमजोरियों पर काम करने में मदद कर सकती है.

टॉम पीटर्स, जिन्हें कई लोग आधुनिक प्रबंधन का जनक मानते हैं, ने टीमों के लिए उच्च प्रदर्शन प्राप्त करने के लिए आवश्यक कारकों का अध्ययन किया. उनके निष्कर्षों ने उच्च प्रदर्शन प्राप्त करने के लिए आवश्यक टीम वर्क के पांच घटकों की पहचान की:

➢ टीम वर्क के पांच सी :

सहयोग:

यदि टीम के सदस्यों के बीच सहयोग नहीं होगा तो कोई भी टीम जीवित नहीं रहेगी. सहयोग का सीधा संबंध अच्छे संचार और आत्मविश्वास से है. बेहतर संचार और पारदर्शी एवं स्वस्थ कामकाजी माहौल के लिए कुछ हद तक स्पष्टता और विश्वास की आवश्यकता है.

समझौता:

विशिष्ट बिंदुओं पर समझौता करना महत्वपूर्ण है, और कार्य संबंध भी इससे अलग नहीं हैं. हमें अपने साथियों/प्रबंधकों से सहमत होना पड़ सकता है यदि उनकी बात वैध है और बेहतर परिणामों में योगदान दे सकती है. हर कोई हमेशा एक ही पृष्ठ पर नहीं हो सकता, जो ठीक है.

संचार:

इसे टीम के व्यक्तिगत और सामूहिक कार्यों के समन्वय में एक आवश्यक तत्व माना जाता है. संचार संघर्ष प्रबंधन और समस्या-समाधान की कुंजी है , और संगठनों को टीमों के भीतर और बाहर स्वस्थ संचार को बढ़ावा देना चाहिए. खुला, पारदर्शी और समय पर संचार आवश्यक है ताकि टीम के प्रत्येक सदस्य को पता हो कि क्या करना है और कैसे करना है.

आत्मविश्वास:

टीम के सदस्यों को अपनी क्षमताओं पर विश्वास करना चाहिए. नेता को टीम को परियोजना, प्रत्येक व्यक्ति द्वारा किए जाने वाले कार्यों और प्राप्त करने के अंतिम उद्देश्य को स्पष्ट और संक्षिप्त रूप से समझाना चाहिए. यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि आत्मविश्वास ठपलक झपकतेठ में नहीं बनता है. इसे थोड़ा-थोड़ा करके बनाने की जरूरत है.

प्रतिबद्धता:

टीम की ज़रूरतें और हित व्यक्तिगत हितों से ऊपर हैं. की गई प्रत्येक कार्रवाई को सामान्य व्यावसायिक लक्ष्य की दिशा में योगदान देना चाहिए. एक प्रभावी टीम में, प्रत्येक सदस्य को पारस्परिक संबंधों को बढ़ावा देना चाहिए और समय के साथ मिलकर काम करने के लिए अपने कौशल का योगदान देना चाहिए.

➢ एक प्रभावी टीम में, प्रत्येक सदस्य को पारस्परिक संबंधों को बढ़ावा देना चाहिए और समय के साथ मिलकर काम करने के लिए अपने कौशल का योगदान देना चाहिए:

➢ प्रेरणा

टीम वर्क समूह के प्रत्येक सदस्य को आवाज देता है, और निर्णय आमतौर पर एक साथ लिए जाते हैं. इससे टीम के सदस्यों के प्रेरणा स्तर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है. वे जानते हैं कि उनकी राय मायने रखती है और उनके योगदान पर हमेशा विचार किया जाएगा. एक मूल्यवान और मान्यता प्राप्त कार्य टीम के सदस्यों की भागीदारी और लक्ष्यों की प्राप्ति का पक्षधर है.

➢ बेहतर जिम्मेदारी

जब टीम समान दृष्टिकोण साझा करती है, तो कर्मचारी अपनी भागीदारी बढ़ाते हैं और निर्णय लेने का दायित्व उसके सभी सदस्यों पर होता है. इससे अपनेपन और साझा जिम्मेदारी की भावना पैदा होती है जो उन्हें सटीक और सावधानीपूर्वक काम के महत्व से अवगत कराती है.

➢ सामान्य एवं स्पष्ट उद्देश्य

अच्छा आंतरिक संचार बनाए रखने से अधिक दक्षता प्राप्त होती है. टीम के सदस्यों को सामान्य लक्ष्यों और उन्हें प्राप्त करने के लिए समूह के भीतर प्रत्येक सदस्य द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका का स्पष्ट विचार होता है. इसका मतलब यह है कि हर कोई अधिक ठोस आधार से शुरुआत करता है, जिससे उनके लिए सफल होना आसान हो जाता है.

श्री राजीव अग्रवाल
वरिष्ठ प्रबंधक
आंचलिक कार्यालय, हैदराबाद

ईएसजी (ESG) : परिवर्तन के पथ पर बेहतर पहल

आधुनिक दुनिया अपनी प्रगति एवं विकास की दौड़ में तीव्र से तीव्रतर गति ले चुकी है. प्रगति एवं विकास को रोकना अथवा धीमा करना संभव नहीं है, इसे अवरुद्ध भी नहीं किया जा सकता. अत: मानवीय मूल्यों एवं सामाजिक हितों को ध्यान में रखते हुए ईएसजी (ESG) : पर्यावरण, सामाजिक और शासन की संकल्पना का जन्म हुआ. ईएसजी न केवल विकास को समर्थन देता है, बल्कि मानवीय मूल्यों तथा पर्यावरणीय सुधारात्मक कार्यों को भी महत्व देता है.

व्यवसाय एवं उद्योग के संचालन को यदि कॉर्पोरेट उतरदायित्व से जोड़ दिया जाए, तो यह औद्योगिक स्थिरता लाने में बेहतर भूमिका निभाता है. यही नहीं, किसी भी कंपनी एवं संस्था की स्थिरता एवं उसमें निवेश को बढ़ावा देने के लिए भी ईएसजी का विशेष महत्त्व है.

आधुनिक विश्व में, विकास के साथ-साथ दुनिया में लोगों की सोच में भी बदलाव आया है, अब लोग आर्थिक, सामाजिक एवं प्रशासनिक दृष्टि से कंपनियों का मूल्यांकन करने के बाद ही निवेश करना पसंद कर रहे हैं. लोगों की जागरूकता एवं कंपनी के स्थायित्व के लिए ईएसजी की संकल्पना आवश्यक है. पर्यावरण, सामाजिक और शासन लक्ष्य' कंपनी के संचालन के लिये मानकों का एक ऐसा समूह है जो कंपनियों को बेहतर शासन, नैतिक अभ्यासों, पर्यावरण-अनुकूल उपायों और सामाजिक उत्तरदायित्वों का पालन करने के लिये उत्प्रेरित करता है. पर्यावरणीय मानदंड इस बात पर विचार करते हैं कि कोई कंपनी प्रकृति के परिचारक के रूप में कैसा प्रदर्शन करती है. सामाजिक मानदंड यह परीक्षण करते हैं कि कंपनी अपने कर्मचारियों, आपूर्तिकर्ताओं, ग्राहकों और स्थानीय समुदायों (जहाँ वह संचालित होती है) के साथ अपने संबंधों का प्रबंधन कैसे करती है. शासन किसी कंपनी के नेतृत्व, कार्यकारी वेतन, लेखा परीक्षा, आंतरिक नियंत्रण और शेयरधारक अधिकारों से संबोधित होता है. यह निवेश निर्णयों को निर्देशित करने के लिये एक मीट्रिक के रूप में गैर-वित्तीय कारकों पर ध्यान केंद्रित करता है जहाँ वित्तीय रिटर्न में वृद्धि अब निवेशकों का एकमात्र उद्देश्य नहीं रह गया है.

वर्ष 2006 में United Nations Principles for Responsible Investment- UN-PRI के आरंभ के साथ ईसीजी ढाँचे को आधुनिक समय के व्यवसायों की एक अविभाज्य कड़ी के रूप में मान्यता दी गई है.

ईएसजी फंड

ईएसजी फंड एक प्रकार का म्यूचुअल फंड है. इसका निवेश सतत् निवेश या सामाजिक रूप से उत्तरदायी निवेश के समानार्थी रूप से उपयोग किया जाता है. इस प्रकार, ईएसजी फंड और अन्य फंडों के बीच प्रमुख अंतर है- ईएसजी फंड पर्यावरण-अनुकूल अभ्यासों, नैतिक कारोबार अभ्यासों और कर्मचारी-अनुकूल रिकॉर्ड रखने वाली कंपनियों पर ध्यान केंद्रित करता है. इस फंड को भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) द्वारा नियंत्रित किया जाता है.

वैश्विक स्तर पर ईएसजी की थीम पर आधारित स्कीम में जहां अच्छा खासा निवेश आ रहा है, वहीं अब भारत में भी इस थीम को लेकर म्यूचुअल फंड हाउस प्रोडक्ट लांच कर रहे हैं. अब तक 5 म्यूचुअल फंड हाउस ने इस थीम पर प्रोडक्ट लांच किए हैं. हालांकि भारत में यह थीम अभी शुरुआती चरण में है, पर लंबी अवधि में फंड हाउस को इसमें अच्छा खासा अवसर दिख रहा है.

आईसीआईसीआई डायरेक्ट की रिपोर्ट के मुताबिक ईएसजी का मतलब एनवायरमेंट, सोशल और गवर्नेंस फैक्टर्स से है. वैश्विक स्तर पर निवेशक अब ईएसजी को लेकर काफी सोच विचार कर रहे हैं. वे कंपनियों के एनवायरमेंट फुटप्रिंट, सोशल इंपैक्ट और गवर्नेंस फैक्टर्स पर सोच विचार कर रहे हैं, जहां वे साधारण फाइनेंशियल पैरामीटर्स की बजाय वहां निवेश कर सकें.

वैश्विक स्तर पर एनवायरमेंट, सोशल और गवर्नेंस के आंकड़ों के आधार पर निवेश का फैसला लिया जा रहा है. इन तीनों का असेट अंडर मैनेजमेंट (AUM) पिछले 8 सालों में तीन गुना बढ़कर 40.5 ट्रिलियन डॉलर हो गया है. ईएसजी का प्रदर्शन रिस्क एडजस्टेड होता है. यहां तक कि भारत में भी निफ्टी 100 ESG इंडेक्स ने निफ्टी 50 या निफ्टी 100 इंडेक्स की तुलना में अलग-अलग समय में बेहतर प्रदर्शन किया है.

ईएसजी फंड मुख्य रूप से लॉर्ज कैप फंड होते हैं जिसके सेक्टर्स अलोकेशन में लॉर्ज कैप म्यूचुअल फंड की तुलना में कुछ अंतर होता है. सेबी के नियमों के मुताबिक ईएसजी फंड्स को थिमेटिक फंड्स के तहत कैटेग्राइज किया गया है. यह अच्छी तरह से विविधीकृत (डाइवर्सिफाइ) होता है. यह अन्य थिमेटिक फंड्स की तरह केवल थिमेटिक पर ही फोकस नहीं करता है.

बेंचमार्क निफ्टी 100 ईएसजी इंडेक्स आईटी और फार्मा सेक्टर्स में ओवरवेट है. जबकि फाइनेंशियल और ऑयल गैस में यह अंडरवेट है. ईएसजी फंड उन कंपनियों में निवेश नहीं करता है जो तंबाकू, अल्कोहल, विवादित हथियारों और जुआ के कारोबार में शामिल हैं. यह ज्यादातर आईटी और फार्मा सेक्टर्स में ही निवेश करता है. उन सेक्टर्स में कम निवेश करता है जो उतार-चढ़ाव वाले सेक्टर्स होते हैं. इनमें ऑयल एवं गैस और मेटल आदि हैं.

आईटी और फार्मा सेक्टर्स लंबी अवधि में अच्छे सेक्टर्स माने जाते हैं. पिछली कुछ तिमाहियों में इनका प्रदर्शन अच्छा रहा है.

भारत में ईएसजी निवेश की दुनिया का विस्तार हो रहा है. इस समय ईएसजी में सक्रिय फंड हाउस में एक्सिस ईएसजी इक्विटी फंड, आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल ईएसजी, क्वांटम ईएसजी फंड और एसबीआई मैग्नम इक्विटी ईएसजी फंड हैं. हाल में मिरै असेट ने भी ईएसजी फंड को लांच किया है.

निफ्टी 100 ESG का रिटर्न 8.80 पर्सेंट

पिछले एक साल का रिटर्न देखें तो निफ्टी 100 ईएसजी टीआरआई ने 8.8% का रिटर्न दिया है. 5 सालों में इसने 8.3% का रिटर्न दिया है.7 सालों में 13.6% का रिटर्न रहा है. निफ्टी 50 टीआरआई ने इसी अवधि में 3.6%, 6.6% और 11.4% का रिटर्न दिया है.

कोरोना से बढ़ा ESG का महत्व

दरअसल पूरी दुनिया में इस समय कोरोना की बीमारी के चलते ईएसजी फंड का महत्व और बढ़ गया है. कंपनियां अब एनवायरमेंट, सोशल और गवर्नेंस को लेकर काफी सतर्क हो गई हैं. भारत में भी म्यूचुअल फंड इसी अवसर को भुना रहे हैं. यूरोप में 60% एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (ईटीएफ) ने एमएससीआई यूरोप इंडेक्स को प्रदर्शन के मामले में कोराना की अवधि में पीछे छोड़ दिया है. अमेरिका में 59% ईएसजी ईटीएफ ने एस & डी 500 इंडेक्स की तुलना में बेहतर प्रदर्शन किया है.

पांच फंड हाउस के पास ESG स्कीम

भारत में म्यूचुअल फंड की ESG स्कीम ने जिन शेयरों में सबसे ज्यादा निवेश किया है उसमें रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (RIL) HDFC बैंक, इंफोसिस, HDFC लिमिटेड, टाटा कंसलटेंसी सर्विसेस (TCS), ICICI बैंक, कोटक महिंद्रा बैंक, हिंदुस्तान यूनिलीवर लिमिटेड (HUL), ITC एक्सिस बैंक,L&T और भारती एयरटेल हैं.

ईएसजी में पर्यावरणीय कारक

पर्यावरणीय स्थिरता से तात्पर्य कंपनियों द्वारा अपने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष पारिस्थितिक प्रभावों के प्रबंधन, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन और जलवायु परिवर्तन को कम करने की प्रतिबद्धता तथा कार्बन मुक्त अर्थव्यवस्था में योगदान से है.

ये पर्यावरण के मुख्य विषय हैं

1. कार्बन उत्सर्जन
2. विषाक्त उत्सर्जन
3. ऊर्जा दक्षता
4. जलवायु परिवर्तन की संवेदनशीलता
5. जल उपभोग और अवशिष्ट जल का प्रबंधन
6. जैव विविधता और भूमि उपयोग
7. सामग्री स्रोत
8. अपशिष्ट और खतरनाक पदार्थ प्रबंधन
9. उत्पाद डिजाइन और जीवनचक्र प्रबंधन
10. हरित प्रौद्योगिकी/हरित भवन/नवीकरणीय ऊर्जा

ईएसजी में सामाजिक कारक

सामाजिक स्थिरता संगठन और आपूर्तिकर्ताओं के अंदर लोगों के प्रबंधन से जुड़ी है, जो सभ्य रोजगार, समान अवसरों की नीतियों और कार्य और गोपनीयता के बीच संतुलन, निरंतर प्रशिक्षण और मानव अधिकारों के सम्मान को बढ़ावा देती है.

सामाजिक के तहत मुख्य विषय हैं:

1. कार्यस्थल संबंध (समावेश और विविधता)
2. स्वास्थ्य और सुरक्षा
3. मानव पूंजी विकास (प्रशिक्षण)
4. प्रतिभा आकर्षण और प्रतिधारण
5. आपूर्ति श्रृंखला में कार्य की स्थितियाँ
6. रोकथाम और कार्य सुरक्षा
7. उत्पाद सुरक्षा और गुणवत्ता
8. डेटा सुरक्षा और गोपनीयता
9. निष्पक्ष विपणन और उत्पाद लेबलिंग
10. समुदाय संबंध

ईएसजी में शासन कारक

शासन स्थिरता, कंपनियों की सुशासन, नैतिकता और आचरण संहिता, पारदर्शिता, तथा बोर्ड, निदेशकों और प्रबंधन टीम के भ्रष्टाचार विरोधी प्रतिबद्धता को एकीकृत करती है.

शासन के तहत मुख्य विषय हैं:

1. बोर्ड संरचना
2. कर्मचारी मुआवजा
3. ग्राहक संतुष्टि
4. आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन
5. व्यावसायिक नैतिकता और भुगतान की पारदर्शिता
6. भ्रष्टाचार और अस्थिरता से निपटना
7. प्रदर्शन के लिए जवाबदेही
8. प्रणालीगत जोखिम प्रबंधन
9. जिम्मेदार/प्रभावशाली वित्त और निवेश
10. रिपोर्टिंग और प्रकटीकरण

ईएसजी एवं सीएसआर : पर्यावरण सामाजिक शासन (ईएसजी) और कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) संबंधित हैं लेकिन अलग-अलग हैं. ईएसजी स्थिरता पर कंपनी के प्रभाव को मापने के अलग-अलग दृष्टिकोण हैं. जबकि सीएसआर कॉर्पोरेट स्थिरता उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए की गई आंतरिक पहल है.

ईएसजी का महत्त्व : विगत कुछ वर्षों में, वैश्विक स्तर पर संगठनों ने अपने व्यवसाय के लिए ESG के महत्व का पुनर्मूल्यांकन किया है. अध्ययनों से पता चलता है कि प्रत्येक 5 प्रबंधकों में से लगभग 3 (57%) ने पहले ही ईएसजी रणनीति को आगे बढ़ाने के लिए जिम्मेदार एक क्रॉस-फंक्शनल ईएसजी कार्य समूह बनाया है, और 42% ऐसा करने की प्रक्रिया में हैं. यह बात स्पष्ट होती जा रही है कि जो संगठन ईएसजी को रणनीति में शामिल हो रहे हैं, उनकी वृद्धि दर अन्य संगठनों की अपेक्षा काफी अधिक है.

ईएसजी के लाभ : लागत में कमी, विक्रय वृद्धि, नवप्रवर्तन के लिए प्रोत्साहन, प्रतिभा आकर्षण और प्रतिधारण, जोखिम में कटौती, निवेश में सुधार इत्यादि है.

ईएसजी रणनीतियों का लागत में कमी पर सीधा प्रभाव पड़ता है. वे परिचालन व्यय, जैसे कि कच्चे माल, पानी या बिजली की लागत को कम करने में सहयोग देते हैं. पानी की खपत कम करें; ऊर्जा खपत कम करें और नवीकरणीय ऊर्जा अपनाएं; कच्चे माल की खपत को अनुकूलित करना, अपशिष्ट को कम करना; पुनर्चक्रणीय या जैवनिम्नीकरणीय उत्पादों का उत्पादन करना; उत्पन्न अपशिष्ट को कम करना और पुनर्चक्रित करना तथा उसके उपचार के लिए साझेदारियां बनाना; मार्ग अनुकूलन के माध्यम से रसद में सुधार इत्यादि का पालन कर कम्पनियाँ धन एवं ऊर्जा की बचत कर पातीं हैं.

ईएसजी सिद्धांतों के साथ कंपनियों को मौजूदा बाज़ारों का विस्तार करने और उनकी 'ब्लू ओशन रणनीति' (Blue Ocean Strategy) के एक अंग के रूप में विकास के नए अवसर प्रदान करने में मदद मिलती है. ईएसजी-अनुपालनकर्ता कंपनियों की छवि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बेहतर हो रही है एवं लोगों के बीच सर्वमान्यता भी बढ़ रही है. साथ ही, कम लागत पर संसाधनों (प्राकृतिक, वित्तीय, मानव प्रतिभा आदि) तक आसान पहुँच प्राप्त होती है. ईएसजी उपभोक्ताओं की पसंद को आकर्षित करता है. ग्राहक ''टिकाऊ'' बनने के लिए भुगतान करने को तैयार हैं. आने वाले वर्षों में उपभोक्ता रुझानों में स्थिरता के प्रति प्रतिबद्धता सबसे ऊपर है. संदेश स्पष्ट है: ऐसे उपभोक्ता बढ़ रहे हैं जो पर्यावरण, नागरिक और सामाजिक रूप से जागरूक हैं और वे दुनिया में जो बदलाव देखना चाहते हैं, उसे खरीदते हैं. उपभोक्ता चाहते हैं कि कंपनियाँ न केवल अपने विकास के बारे में सोचें बल्कि श्रमिकों, उपभोक्ताओं और उनके उत्पादों और सेवाओं के उत्पादन और विकास में शामिल सभी लोगों के जीवन की गुणवत्ता के बारे में भी सोचें.

धन जुटाने के लिये ईएसजी महत्त्वपूर्ण है और भारत जैसे देशों में अन्य संसाधनों तक मुक्त पहुँच भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है, जहाँ कंपनियों को आरक्षित क्षेत्रों में नई परियोजनाएँ शुरू करते समय स्थानीय समुदायों के कड़े प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है.

अध्ययनों से यह साबित होता है कि जो कंपनियां सबसे अधिक टिकाऊ रणनीतियां अपनाती हैं, वे ही सर्वोत्तम संसाधन दक्षता और वित्तीय प्रदर्शन हासिल करती हैं.

कंपनी के ईएसजी माड्यूल लागू करने पर बेहतर कर्मचारी काम करने के लिए आगे बढ़ेंगे एवं वर्तमान कर्मचारियों का कंपनी में भरोसा बढेगा तथा वे अपनी पूरी क्षमता के साथ काम करने के लिए उत्साहित होंगे. 'उद्देश्य-संचालित-जीवन' (Purpose-Driven-Life) सन्निहित करता है ताकि वे अपनी नौकरी में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकें.

शेयरधारक शिकायत का निवारण, मानवाधिकार और कंपनियों की लैंगिक विविधता जैसे ईएसजी मानदंडों की पूर्ति के परिणामस्वरूप अर्थदंड एवं प्रवर्तन कार्रवाई में कमी आएगी.

कई बैंक और वित्तीय संस्थान अच्छे ईएसजी स्कोर वाली कंपनियों को विशेष शर्तें देते हैं. इसका कारण यह है कि इन संगठनों को कम जोखिम वाला माना जाता है और उनके अपने ऋण चुकाने की संभावना अधिक होती है.

संतुष्ट और प्रतिबद्ध कर्मचारी होना संगठनों के सबसे महत्वपूर्ण प्रतिस्पर्धी लाभों में से एक है. एक मजबूत ईएसजी रणनीति कंपनियों को प्रतिभा को आकर्षित करने और बनाए रखने और कर्मचारियों की समग्र उत्पादकता बढ़ाने में मदद कर सकती है.

शोध से पता चलता है कि खुश कर्मचारी अधिक उत्पादक होते हैं. उद्देश्य की भावना संतुष्टि को बढ़ा सकती है. किसी कर्मचारी को अपने काम के सकारात्मक प्रभाव की जितनी अधिक समझ होगी, उसकी प्रेरणा उतनी ही अधिक होगी.

एक मजबूत ईएसजी प्रस्ताव कंपनियों को नए बाजारों में प्रवेश करने और उन बाजारों में बढ़ने में भी मदद करता है जहां वे पहले से ही कारोबार कर रहे हैं. जब सरकारी संस्थाएं कंपनियों पर भरोसा करती हैं, तो उन्हें नए विकास के अवसर प्रदान करने वाले अनुमोदन और लाइसेंस तक पहुंच की अधिक संभावना होती है .

ईएसजी संगठनों में निरंतर सुधार और नवाचार का एक आवश्यक चालक हो सकता है . स्थिरता कंपनियों को कम पर्यावरणीय प्रभाव वाले अधिक कुशल उत्पाद, पैकेजिंग, प्रक्रियाएँ और प्रौद्योगिकियाँ खोजने की चुनौती देती है.

यही बात प्रक्रियाओं और प्रौद्योगिकियों के नवाचार पर भी लागू होती है. कंपनियों को स्वच्छ प्रौद्योगिकी और अधिक कुशल संचालन खोजने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जो नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करते हैं और अन्य नवीन समाधानों के अलावा अपशिष्ट और पानी के पुन: उपयोग की अनुमति देते हैं.

वास्तव में संधारणीय कंपनियाँ ऐसे कर्मचारियों को आकर्षित करने और बनाए रखने में बेहतर सक्षम होती हैं जो ऐसी कंपनी की तलाश में होते हैं जो उन्हें उद्देश्य की भावना प्रदान करती है. यह युवा पीढ़ी के लिए प्रासंगिकता प्राप्त करता है. आधुनिक कर्मचारी ऐसी कंपनियों के लिए काम नहीं करना चाहते हैं जिनकी प्रथाएँ समाज और पर्यावरण को नुकसान पहुँचाती हैं. दूसरे शब्दों में, एक ठोस ऐंड रणनीति के साथ,

सर्वश्रेष्ठ उम्मीदवारों को आकर्षित करना और उन्हें कंपनी में बनाए रखना आसान है.

ईएसजी मानदंड जोखिम प्रबंधन के लिए एक समग्र दृष्टिकोण में योगदान दे सकते हैं. चूंकि ईएसजी पर्यावरण प्रबंधन, कार्य और सुरक्षा स्थितियों, मानवाधिकारों के प्रति सम्मान, रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार विरोधी कार्रवाइयों और प्रासंगिक कानूनों और विनियमों के अनुपालन के मानकों को शामिल करता है, इसलिए कंपनियां जुर्माने और अन्य पूर्वानुमेय प्रतिबंधों से बचकर और संगठन के संपूर्ण संचालन को सुनिश्चित करके अनुपालन सुनिश्चित करती हैं.

दूसरी ओर, निवेशक मजबूत ईएसजी नीतियों वाली कंपनियों को शामिल करने में भी अधिक रुचि रखते हैं. जो संगठन जोखिम को अच्छी तरह से प्रबंधित करते हैं, वे मुख्य निवेशकों को आकर्षित करने की सबसे अधिक संभावना रखते हैं. हाल के अध्ययनों से पता चलता है कि प्रमुख वैश्विक बाजारों में 89% निवेशक निवेश का मूल्यांकन करते समय ईएसजी को एक मानदंड के रूप में देखते हैं.

स्थिरता के मुद्दों के संबंध में, सक्रिय होना आवश्यक है क्योंकि कार्रवाई न करने का निर्णय अक्सर मध्यम से दीर्घ अवधि में धन की हानि में बदल जाएगा. उच्च ऊर्जा खपत वाले उपकरण या उच्च कच्चे माल की बर्बादी वाली उत्पादन प्रक्रियाओं को बनाए रखना इन निर्णयों के उदाहरण हैं, जिसमें कुछ न करने से कंपनी को लागत का सामना करना पड़ता है. उपकरण, सुविधाओं या प्रक्रियाओं को अपग्रेड करने के लिए निवेश अधिक हो सकता है, लेकिन निर्णय को स्थगित करना और भी महंगा हो सकता है.

ईएसजी मानदंडों को ध्यान में रखने वाली कंपनियाँ अवसरों की पहचान कर सकती हैं और अधिक आशाजनक और टिकाऊ संसाधनों (जैसे कि नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग करना, पर्यावरण के अनुकूल प्रक्रियाओं को अपनाना, आदि) में निवेश कर सकती हैं. यही मूल्यांकन संगठनों को ऐसे निवेशों से बचने में मदद करता है जिनमें कम रिटर्न होता है, पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने की बहुत अधिक संभावना होती है, और जो कंपनी की खराब प्रतिष्ठा में योगदान दे सकते हैं.

भारतीय निवेशक ईएसजी अनुपालनकर्ता कंपनियों और निवेश उत्पादों में अधिक रुचि दिखा रहे हैं और कंपनियां अपनी कॉर्पोरेट प्रशासन रणनीतियों में ईएसजी को शामिल करने की दिशा में लगातार कदम उठा रही हैं.

उदाहरण के लिये, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज ने वर्ष 2030 तक 'शुद्ध शून्य उत्सर्जन' प्राप्त करने के लिये अपने पूर्ण उप्ड उत्सर्जन को कम करने की योजना का खुलासा किया है.

गाजियाबाद नगर निगम भारत का पहला नगर निकाय बन गया है जिसने अपशिष्ट जल के पुन: उपयोग के लिये पर्यावरणीय रूप से संवहनीय एक परियोजना हेतु बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (BSE) में सूचीबद्ध ग्रीन बॉण्ड जारी किया है.

ईएसजी के लिए उठाये गए कदम : कंपनियों के लिये ईएसजी प्रकटीकरण आवश्यकताओं की पहचान करने की दिशा में प्रारंभिक उल्लेखनीय कार्रवाई वर्ष 2011 में कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय द्वारा जारी की गई 'कारोबार के सामाजिक, पर्यावरण और आर्थिक दायित्वों पर राष्ट्रीय स्वैच्छिक दिशानिर्देश' (National Voluntary Guidelines on Social, Environmental and Economic Responsibilities of Business) के रूप में प्रकट हुई.

वर्ष 2012 में सेबी ने 'बिजनेस रिस्पॉन्सिबिलिटी रिपोर्ट' (BRR) तैयार की, जिसने बाज़ार पूंजीकरण के अनुसार शीर्ष 100 सूचीबद्ध संस्थाओं (जिसे वर्ष 2015 में शीर्ष 500 सूचीबद्ध संस्थाओं तक विस्तारित कर दिया गया) के लिये उनकी वार्षिक रिपोर्ट के एक भाग के रूप में फ़ाइल करना अनिवार्य कर दिया.

वर्ष 2021 में सेबी ने मौजूदा बीआरआर रिपोर्टिंग आवश्यकता को एक अधिक व्यापक एकीकृत तंत्र 'बिजनेस रिस्पॉन्सिबिलिटी एंड सस्टेनेबिलिटी रिपोर्ट' (BRSR) से प्रतिस्थापित कर दिया.

यह वित्त वर्ष 2022-23 से शीर्ष 1,000 सूचीबद्ध संस्थाओं (बाजार पूंजीकरण के अनुसार) पर अनिवार्य रूप से लागू होगा.

BRSR 'उत्तरदायी व्यावसायिक आचरण पर राष्ट्रीय दिशानिर्देश' (NGBRCs) के नौ सिद्धांतों पर सूचीबद्ध संस्थाओं से उनके प्रदर्शन पर प्रकटीकरण की अपेक्षा रखता है.

चुनौतियाँ : सीमा-पार रिपोर्टिंग आवश्यकताओं के मानकीकरण की कमी ईएसजी सिद्धांतों, ढाँचे और विचारों के सामंजस्य में कठिनाइयाँ उत्पन्न कर सकती हैं. ईएसजी मानकों की पारदर्शिता, निरंतरता, भौतिकता और तुलनीयता से संबंधित अन्य चुनौतियाँ भी आगे ईएसजी रिपोर्टिंग ढाँचे के निर्बाध कार्यान्वयन में बाधाएँ खड़ी कर सकती हैं. हालाँकि मध्यम और लघु कंपनियों में ईएसजी का उपयोग बढ़ रहा है, लेकिन इन छोटे व्यवसायों को उच्च पूंजी लागत और/या ऐसे उपायों को लागू करने में विशेषज्ञता की कमी के कारण ईएसजी पर न्यूनतम से अधिक करने के लिये सीमित किया जा सकता है. भविष्य में ईएसजी रिपोर्टिंग का एक प्रभावी और कुशल तंत्र तैयार करने के लिये इन चिंताओं को दूर किया जाना चाहिये.

कुमार विवेक
क्षेत्रीय प्रमुख
मुजफ्फरपुर

कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईएसजी का महत्व

वर्तमान एवं भविष्य

किसी व्यवसाय की सफलता न केवल उसके नवीन उत्पादों पर निर्भर करती है, बल्कि उसके संचालन के तरीके पर भी निर्भर करती है. उपभोक्ता उन कंपनियों की ओर आकर्षित नहीं होते हैं जो पर्यावरण, कर्मचारियों या उस समुदाय के साथ खराब व्यवहार करती हैं जिसमें वे काम करते हैं. इसमें कहा गया है कि 76% उपभोक्ता ऐसी कंपनियों से खरीदारी बंद कर देते हैं.

ईएसजी पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ईएसजी) का संक्षिप्त रूप है . ईएसजी एक रिपोर्टिंग ढांचा है, और महत्वपूर्ण, गैर-वित्तीय कारकों में से एक है जिसका उपयोग कंपनी के प्रदर्शन का आकलन करने के लिए किया जाता है. यह इस बात की ओर इंगित करता है कि कोई संगठन पर्यावरणीय कारकों जैसे कार्बन पदचिह्न, जल उपयोग, अपशिष्ट प्रबंधन, वायु प्रदूषण, आदि, सामाजिक कारकों जैसे विविधता, मानवाधिकार, कार्यस्थल पर सुरक्षा और शेयरधारकों के अधिकारों जैसे कॉर्पोरेट शासी कारकों पर कैसे प्रभाव डालता है.

हाल के वर्षों में, पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ईएसजी) निवेश ने भारत सहित दुनिया भर में महत्वपूर्ण आकर्षण प्राप्त किया है. जैसा कि निवेशक अपने वित्तीय लक्ष्यों को सतत विकास के साथ संरेखित करने की आवश्यकता को पहचानते हैं, ईएसजी निवेश वित्तीय रिटर्न के साथ-साथ सकारात्मक प्रभाव पैदा करने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में उभरा है.

किसी कंपनी के वित्तीय प्रदर्शन का विश्लेषण किए बिना, निवेशकों का झुकाव ईएसजी विचारों की ओर अधिक होता है. ईएसजी संभवत: मुख्यधारा के निवेश का केंद्र बन रहा है क्योंकि यह व्यवसाय के हर पहलू कर्मचारी खुशी, कार्य वातावरण की सुरक्षा, ग्राहक डेटा की सुरक्षा, किसी संगठन द्वारा प्राकृतिक निकायों या जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाले संभावित खतरे को संबोधित करता है. ईएसजी स्कोर और ईएसजी रेटिंग निश्चित रूप से मायने रखती हैं और यहां महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं. कई ईएसजी रेटिंग कंपनियां हैं, जो किसी संगठन के ईएसजी प्रदर्शन का निष्पक्ष मूल्यांकन करती हैं और ग्राहकों को डेटा उपलब्ध कराती हैं. सार्वजनिक रूप से उपलब्ध जानकारी के लाखों टुकड़ों के वास्तविक समय विश्लेषण द्वारा, संचयी रेटिंग के साथ-साथ ''ई'', ''एस'' और ''जी'' के लिए व्यक्तिगत स्कोर निर्दिष्ट किए जाते हैं.कंपनी का विश्लेषण मानवीय प्रयासों के साथ-साथ प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण और मशीन लर्निंग एल्गोरिदम के संयोजन द्वारा किया जाता है.

स्वतंत्र निवेशक और वित्तीय संस्थान कंपनी के रिटर्न और उसके जोखिमों को निर्धारित करने के लिए ईएसजी स्कोर को प्रॉक्सी के रूप में उपयोग करते हैं. उच्च ईएसजी स्कोर बेहतर अवसरों और स्वस्थ मुनाफे में तब्दील होता है. ईएसजी स्कोर उद्यमों को अधिक टिकाऊ समाधान बनाने और अधिक प्रतिभाओं को आकर्षित करने में मदद करता है.ईएसजी निवेश में पारंपरिक वित्तीय मैट्रिक्स के साथ-साथ कंपनी के पर्यावरण, सामाजिक और शासन प्रदर्शन पर विचार करना शामिल है. यह कंपनी की स्थिर प्रथाओं, समाज पर इसके प्रभाव और इसके कॉर्पोरेट प्रशासन की प्रभावशीलता का आकलन करने पर केंद्रित है. निवेश निर्णयों में ईएसजी कारकों को शामिल करके, निवेशकों का लक्ष्य पर्यावरण, समाज और शासन प्रथाओं में सकारात्मक योगदान देने वाली कंपनियों का समर्थन करते हुए दीर्घकालिक मूल्य उत्पन्न करना है.

भारत में ईएसजी निवेश के मुख्य चालक तत्वों को निम्नांकित रूप से समझा जा सकता है :-

नियामक समर्थन: भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) ने दिशानिर्देश पेश करके ईएसजी निवेश को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिसके लिए शीर्ष 1,000 सूचीबद्ध कंपनियों को अपनी ईएसजी-संबंधित गतिविधियों का खुलासा करने की आवश्यकता होती है. ये दिशानिर्देश पारदर्शिता बढ़ाते हैं और कंपनियों को अपनी ईएसजी प्रथाओं में सुधार करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं.

निवेशक की मांग: संस्थागत निवेशकों, परिसंपत्ति प्रबंधन कंपनियों और खुदरा निवेशकों सहित भारत में निवेशक ईएसजी निवेश की क्षमता को तेजी से पहचान रहे हैं. टिकाऊ निवेश विकल्पों की मांग जलवायु परिवर्तन, सामाजिक मुद्दों और कॉर्पोरेट प्रशासन घोटालों के बारे में बढ़ती जागरूकता से प्रेरित है.

व्यावसायिक अवसर: ईएसजी निवेश भारत में कंपनियों के लिए महत्वपूर्ण व्यावसायिक अवसर प्रस्तुत करता है. स्थायी प्रथाओं को अपनाने और ईएसजी कारकों पर ध्यान केंद्रित करके, व्यवसाय अपनी परिचालन दक्षता बढ़ा सकते हैं, जोखिम कम कर सकते हैं, जिम्मेदार निवेशकों से पूंजी आकर्षित कर सकते हैं और बाजार में प्रतिस्पर्धात्मक लाभ हासिल कर सकते हैं.

कॉर्पोरेट क्षेत्र के लिए ईएसजी के निम्नांकित पांच प्रमुख लाभ हैं -

अनुपालन

निवेश

प्रतिस्पर्धात्मक लाभ

प्रतिभा तक पहुंच

लागत में कमी

अपनी प्रशंसा स्वयं करने से बेहतर है यह कार्य दूसरे करें.

अनुपालन

यूके, यूएस, चीन, न्यूजीलैंड, यूरोपीय देशों सहित कई देशों में ईएसजी रिपोर्टिंग अनिवार्य कर दी गई है. ईएसजी प्रकटीकरण रिपोर्ट अपने प्रमुख हितधारकों उपभोक्ताओं, निवेशकों और गैर सरकारी संगठनों के लिए एक उद्यम की गतिविधि में पारदर्शिता और दृश्यता प्रदान करती है. यह देखना दिलचस्प है कि वैश्विक संगठन ईएसजी पर कैसे रुख अपना रहे हैं, ईएसजी रिपोर्टिंग को अपनी नियामक प्रणालियों में पूरी तरह से एकीकृत कर रहे हैं. उदाहरण के लिए, जापान की वित्तीय सेवा एजेंसी, वित्तीय स्थिरता के लिए बैंकिंग, सुरक्षा और विनिमय और बीमा क्षेत्र की देखरेख करने वाली एक सरकारी संस्था ने देश में स्थायी वित्त को बढ़ावा देने के लिए दिशानिर्देश और सिफारिशें जारी कीं. यूरोपीय क्षेत्र में, यूरोपीय संघ के स्थायी वित्तीय ढांचे में कई नियम शामिल हैं, जो 2050 तक यूरोप को पहला कार्बन-तटस्थ महाद्वीप बनाने के मिशन पर जोर देते हैं.

यदि आप एक सामाजिक लाइसेंस बनाए रखना चाहते हैं और व्यावसायिक संबंध स्थापित करना चाहते हैं और अन्य देशों में निवेश के अवसर तलाशना चाहते हैं तो ईएसजी एक महत्वपूर्ण आवश्यकता बन जाती है. ईएसजी आपके व्यवसाय के लचीलेपन को मजबूत करता है.

2. निवेश

हाल में हुई महामारी ने व्यवसायों को स्थिरता का मूल्य दिखाया है. नई सामान्य स्थिति में निवेशक ऐसे टिकाऊ व्यवसायों की तलाश कर रहे हैं जो अपने संचालन में उचित प्रथाओं के प्रति सचेत हों. उदाहरण के लिए, संपत्ति को अधिकतम करना, एक अप्रयुक्त कार गैरेज को डेकेयर सुविधा में परिवर्तित करना, प्लास्टिक के उपयोग पर प्रतिबंध लगाना, जितना संभव हो सके कागज रहित कार्यस्थलों को लाना आदि. ये सभी निवेशक के निर्णय को अत्यधिक प्रभावित कर सकते हैं- संभावित निवेश अवसरों की स्क्रीनिंग करते समय बनाना.

3. प्रतिस्पर्धात्मक लाभ

इस गतिशील व्यावसायिक परिदृश्य में, भीड़ में अलग दिखना एक उच्च प्राथमिकता है, न केवल अद्वितीय उत्पादों/सेवाओं की पेशकश में बल्कि अपने कर्मचारियों और ग्राहकों की खुशी को शीर्ष पर रखने में भी. एक अच्छी ईएसजी योजना में आपके कर्मचारियों और ग्राहकों के सर्वोत्तम हित में कार्य करने की नैतिकता और प्रतिबद्धता में सुधार के तरीके शामिल होने चाहिए. इन दिनों, उपभोक्ता संतुष्ट हैं और उन कंपनियों से निपटने की अधिक संभावना रखते हैं जो उन्हें स्थायी खरीदारी विकल्प प्रदान कर सकती हैं और ईंधन की बढ़ती लागत और हमारे जीवन में खर्च होने वाली ऊर्जा के उपयोग को देखते हुए पर्यावरणीय प्रभाव से अधिक सावधान हैं.

4. प्रतिभा तक पहुंच

जब श्रम की स्थिति, नैतिक कार्यस्थल, विविधता और समावेशन कार्यक्रम, समाज को वापस देने और अन्य नैतिक नीतियों की बात आती है तो नई पीढ़ी का कार्यबल अधिक जागरूक है. ईएसजी शीर्ष प्रतिभाओं को आकर्षित करने और बनाए रखने के लिए एक बेहतरीन कार्य संस्कृति बनाने में योगदान देता है. चूँकि बहुत से लोग पर्यावरण के संरक्षण के प्रति सचेत हो रहे हैं, विशेष रूप से महामारी के बाद, वे ऐसे कार्यस्थल से जुड़ने का भी इरादा रखते हैं जो उनके सिद्धांतों के अनुरूप हो.

5. लागत में कमी

मैकिन्से की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि, ''ईएसजी रणनीतियाँ परिचालन लाभ को 60% तक प्रभावित कर सकती हैं.'' ईएसजी लागत बचत में काफी योगदान दे सकता है. कच्चे माल की खरीद की लागत की कल्पना करें. पर्यावरण-अनुकूल उत्पाद बनाना, रीसाइक्लिंग विकल्पों के साथ नवाचार करना, उपकरणों को फिर से डिजाइन करना, ईंधन की खपत और कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए विद्युत वितरण ट्रकों या वाहनों का एक बेड़ा शुरू करना, कर्मचारियों को लचीले कामकाजी घंटों की पेशकश करना, संपूर्ण आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन प्रक्रिया को डिजिटल बनाने के लिए आपूर्तिकर्ताओं के साथ काम करना, और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करके कार्बन पदचिह्न को कम करने के लिए क्लाउड-आधारित प्रणाली की ओर बढ़ना, संगठनों के लिए कुछ लागत-कटौती ईएसजी रणनीतियों में से एक है.

दुनिया भर की कंपनियों ने ईएसजी के महत्व को समझना शुरू कर दिया है. वास्तव में, एक अध्ययन, ईएसजी सीआईओ सर्वेक्षण 2022 के अनुसार, 53% से अधिक निवेशक जलवायु परिवर्तन को अपने निवेश निर्णयों को प्रभावित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण घटक मानते हैं, जो वर्ष 2021 में 47% से अधिक है. अध्ययन में बताया गया है कि लगभग 78% चिंतित हैं जलवायु परिवर्तन का अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है.

वुरम का ईएसजी समाधान, जो एपियन की कम-कोड क्षमताओं पर बनाया गया है, उद्यमों को ईएसजी लक्ष्यों को प्राप्त करने और स्वचालन के माध्यम से शुद्ध शून्य उद्देश्यों के लिए संगठन की यात्रा के सभी पहलुओं का प्रबंधन करने की अनुमति देता है. यह जोखिम स्कोर कैलकुलेटर, कार्य योजना प्रबंधन, विक्रेता/ग्राहक का ईएसजी मूल्यांकन आदि जैसी सुविधाओं के साथ प्रमुख हितधारकों के प्रबंधन के लिए एक एकीकृत और केंद्रीकृत मंच प्रदान करता है

भारतीय निवेशक विभिन्न परिसंपत्ति वर्गों में अपनी निवेश रणनीतियों में ईएसजी कारकों को एकीकृत कर रहे हैं. इक्विटी और बॉन्ड से लेकर निजी इक्विटी और उद्यम पूंजी तक, निवेशक सक्रिय रूप से ऐसे अवसरों की तलाश कर रहे हैं जो उनके स्थिरता लक्ष्यों के अनुरूप हों. ईएसजी निवेश की बढ़ती मांग के साथ, विश्वसनीय और मानकीकृत ईएसजी डेटा और रेटिंग पर जोर बढ़ रहा है. भारतीय कंपनियां अपने ईएसजी प्रकटीकरण में सुधार कर रही हैं, और रेटिंग एजेंसियां उनके ईएसजी

प्रदर्शन के आधार पर कंपनियों का मूल्यांकन और रैंक करने के लिए व्यापक रूपरेखा विकसित कर रही हैं. भारत में ग्रीन बॉन्ड जारी करने में वृद्धि देखी गई है, जिसका उपयोग पर्यावरण के अनुकूल परियोजनाओं को वित्तपोषित करने के लिए किया जाता है. इसके अतिरिक्त, स्थिरता से जुड़े उपकरण, जहां ब्याज दरें जारीकर्ता के ईएसजी प्रदर्शन से जुड़ी होती हैं, लोकप्रियता हासिल कर रहे हैं, जिससे कंपनियों को अपनी स्थिरता प्रथाओं में सुधार करने के लिए प्रोत्साहन मिल रहा है.

भविष्य की संभावना: भारत में ईएसजी निवेश में सकारात्मक बदलाव लाने और कई तरीकों से स्थायी भविष्य में योगदान करने की क्षमता है:

जलवायु परिवर्तन शमन: नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं, टिकाऊ बुनियादी ढांचे और स्वच्छ प्रौद्योगिकियों की ओर पूंजी को निर्देशित करके, ईएसजी निवेश भारत को कम कार्बन वाली अर्थव्यवस्था में बदलने और इसके कार्बन पदचिह्न को कम करने में मदद कर सकता है.

सामाजिक प्रभाव : ईएसजी निवेश उन कंपनियों को बढ़ावा देता है जो लैंगिक समानता, विविधता और समावेशन, श्रम अधिकार और सामुदायिक विकास जैसे सामाजिक मुद्दों को प्राथमिकता देती हैं. यह सकारात्मक सामाजिक प्रभाव पैदा करता है और अधिक न्यायसंगत समाज में योगदान देता है.

शासन संवर्धन: ईएसजी निवेश कंपनियों को पारदर्शिता, जवाबदेही और नैतिक व्यवहार सुनिश्चित करते हुए मजबूत कॉर्पोरेट प्रशासन प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है. इससे निवेशकों का विश्वास बढ़ता है और कॉर्पोरेट धोखाधड़ी और कदाचार को रोकने में मदद मिलती है.

नियामक समर्थन, निवेशकों की मांग और व्यावसायिक अवसरों की पहचान के कारण भारत में ईएसजी निवेश में उल्लेखनीय वृद्धि हो रही है. जैसा कि देश सतत विकास के लिए प्रयास करता है, ईएसजी निवेश पर्यावरण, समाज और कॉर्पोरेट प्रशासन प्रथाओं पर सकारात्मक प्रभाव पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है. ईएसजी निवेश को अपनाकर, भारत एक स्थायी भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकता है जो सामाजिक और पर्यावरणीय कल्याण के साथ वित्तीय रिटर्न को संतुलित करता है.

अर्पण वाजपेयी
वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा
आंचलिक कार्यालय, अहमदाबाद

सेवानिवृत्ति

सेवानिवृत्ति उपरांत सुखद एवं दीर्घायु जीवन हेतु मंगलकामनाएं...!!

श्री वी वी नटराजन
महाप्रबंधक

श्री वासुदेव रक्षित
उप महाप्रबंधक

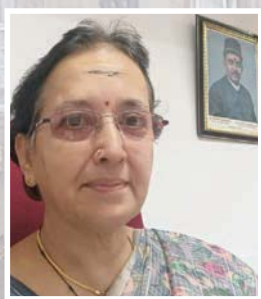

सुश्री जानकी
उप महाप्रबंधक

श्री महेन्द्र सिंह मीणा
उप महाप्रबंधक

प्रकृति को संजोना क्यों आवश्यक है

पृथ्वी मनुष्यों का साझा घर है, एक ऐसी जगह जो हमें ताज़ी हवा, ठंडा पानी और बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधन प्रदान करती है. हालाँकि, आज पर्यावरण कई गंभीर समस्याओं का सामना कर रहा है जैसे पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता का नुकसान, आदि जो सीधे मानव जीवन और स्वास्थ्य को खतरे में डालते हैं. इसलिए पर्यावरण संरक्षण पहले से कहीं अधिक जरूरी और महत्वपूर्ण कार्य बन गया है, जिसके लिए पूरे समाज के संयुक्त प्रयासों की आवश्यकता है.

पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों का एक समूह है जिसका उद्देश्य पर्यावरण प्रदूषण को नियंत्रित करना, कम करना और खत्म करना है, साथ ही पर्यावरण की गुणवत्ता को बहाल करना और सुधारना है. पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों में कई क्षेत्र शामिल हैं जैसे:

जल स्रोतों की रक्षा करें: जल प्रदूषण को रोकें, अपशिष्ट जल का उपचार करें और पानी का किफायती और प्रभावी ढंग से उपयोग करें.

हवा की रक्षा करें: उत्सर्जन को कम करें, स्वच्छ ऊर्जा का उपयोग करें और पेड़ लगाएँ.

भूमि की रक्षा करें: मिट्टी के क्षरण को रोकें, जैविक उर्वरकों का उपयोग करें और रासायनिक उपयोग को सीमित करें.

वन संरक्षण: वन लगाना, वनों की रक्षा करना, अवैध वन दोहन को रोकना.

जैव विविधता संरक्षण: जानवरों और पौधों की दुर्लभ प्रजातियों की रक्षा करें और प्रकृति भंडार बनाएँ.

पर्यावरण संरक्षण पूरे समाज की साझा जिम्मेदारी है, प्रत्येक व्यक्ति और संगठन को हमारे रहने वाले पर्यावरण की रक्षा में योगदान देने के लिए हाथ मिलाने की जरूरत है.

दुनिया के ज़्यादातर क्षेत्र पर्यावरण प्रदूषण की बेहद गंभीर समस्याओं का सामना कर रहे हैं. प्रदूषण कई अलग-अलग रूपों में दिखाई देता है, जिसमें वायु, जल, मिट्टी, ध्वनि प्रदूषण आदि शामिल हैं. पर्यावरण की गुणवत्ता लगातार बिगड़ रही है, जिसका सीधा असर मानव स्वास्थ्य और पारिस्थितिकी तंत्र पर पड़ रहा है.

पर्यावरण प्रदूषण एक गंभीर समस्या है, और पृथ्वी पर मानव जीवन और पारिस्थितिकी तंत्र के लिए एक गंभीर खतरा है. यह समस्या कई अलग-अलग कारणों से आती है, जिनमें से मुख्य कारण कुछ मानवीय गतिविधियाँ हैं:

औद्योगिक गतिविधियाँ: कारखानों, औद्योगिक पार्कों, औद्योगिक कचरे आदि से निकलने वाले उत्सर्जन पर्यावरण प्रदूषण का मुख्य स्रोत हैं.

यातायात गतिविधियाँ: वाहन CO, NOx, HC, महीन धूल आदि उत्सर्जित करते हैं जो हवा को प्रदूषित करते हैं.

वनों की कटाई: वनों की कटाई से CO2 गैस को अवशोषित करने की क्षमता खो जाती है, जिससे ग्रीनहाउस प्रभाव बढ़ता है और जलवायु परिवर्तन होता है.

प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन: खनिजों, तेल आदि का दोहन भूमि और जल पर्यावरण को प्रदूषित करता है.

वर्तमान में, पर्यावरण कई गंभीर समस्याओं का सामना कर रहा है.नीले आसमान की जगह धीरे-धीरे घने कोहरे ने ले ली है, खास तौर पर घनी आबादी वाले शहरी इलाकों और औद्योगिक क्षेत्रों में वाहनों, कारखानों, संयंत्रों आदि से निकलने वाले उत्सर्जन मिलकर हवा में PM 2.5 की महीन धूल की परत बनाते हैं, जिससे दृश्यता सीमित हो जाती है और आसमान धूसर हो जाता है.

पानी का रंग, स्वाद या स्पष्टता असामान्य होना दूषित पदार्थों की उपस्थिति का संकेत हो सकता है. दूषित पानी से त्वचा या आंखों में जलन भी हो सकती है.

मृदा प्रदूषण अक्सर मुख्य रूप से लोगों द्वारा अंधाधुंध तरीके से कचरा फेंकने और मिट्टी में कृषि रासायनिक अवशेषों के बने रहने के कारण होता है. इसे कई विशेषताओं के माध्यम से पहचाना जा सकता है जैसे कि अप्रिय गंध, मिट्टी का असामान्य रंग, छिद्रण और जल अवशोषण क्षमता में कमी, कठोर कचरे के कारण बड़े बजरी कणों की उपस्थिति और कचरे से विषाक्त पदार्थों के कारण कृषि उत्पादन में गिरावट, मिट्टी की गुणवत्ता को कम करना और फसल की वृद्धि को प्रभावित करना, जीवित पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाना.

पर्यावरण प्रदूषण बढ़ रहा हैं, जो सीधे तौर पर मानव स्वास्थ्य और पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित कर रहे हैं. इसलिए, सभी को अपने पर्यावरण की रक्षा के लिए हाथ मिलाना चाहिए.पर्यावरण प्रदूषण एक गंभीर समस्या है, जो मनुष्यों और पृथ्वी के लिए कई गंभीर परिणाम पैदा करता. मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करता है.

विषाक्त पदार्थ कई स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकते हैं, अस्थमा और निमोनिया जैसी श्वसन समस्याओं से लेकर कैंसर जैसी अधिक गंभीर समस्याओं तक. उदाहरण के लिए, वाहनों और कारखानों से निकलने वाले उत्सर्जन के कारण होने वाले वायु प्रदूषण में PM2.5, PM10 के छोटे कण और CO, NOx, SOx, डाइऑक्सिन जैसे अन्य विषैले पदार्थ और पारा और सीसा जैसी भारी धातुएँ हो सकती हैं, जो श्वसन और हृदय संबंधी बीमारियों, फेफड़ों के कैंसर के जोखिम

को बढ़ाती हैं और शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली पर नकारात्मक प्रभाव डालती हैं.

पर्यावरण प्रदूषण के कारण जलवायु परिवर्तन, जैसे कि ग्रीनहाउस प्रभाव का मजबूत होना, वैश्विक स्तर पर तापमान बढ़ना है, जिससे जलवायु में परिवर्तन होता है. इससे तूफान, बवंडर और बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं की तीव्रता और आवृत्ति में वृद्धि होती है.

जब पर्यावरण प्रदूषित होता है, तो पारिस्थितिकी तंत्र असंतुलित हो जाता है, जिससे कई नकारात्मक परिणाम सामने आते हैं. विषैले पदार्थ जमा हो जाते हैं, जिससे जैव-निम्नीकरण होता है और जैव विविधता कम हो जाती है. बिगड़े हुए पारिस्थितिकी तंत्र सामग्री और ऊर्जा चक्रों को प्रभावित करते हैं, नवीकरणीय क्षमता और संसाधन उपलब्धता को कम करते हैं, और वैश्विक जैव विविधता को नुकसान पहुंचाते हैं.

तेजी से गंभीर होते पर्यावरणीय परिवर्तनों के सामने, पर्यावरण प्रदूषण की समस्या एक बड़ी चुनौती है जिसे हल करने के लिए हम सभी को मिलकर काम करना होगा. यह किसी व्यक्ति या संगठन की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि पूरे समाज की जिम्मेदारी है.

पर्यावरण संरक्षण एक अत्यावश्यक और महत्वपूर्ण कार्य है क्योंकि यह पृथ्वी पर सभी जीवित चीजों के जीवन और विकास से सीधे जुड़ा हुआ है. पर्यावरण हमें न केवल सांस लेने के लिए ताजी हवा और पीने के लिए साफ पानी प्रदान करता है, बल्कि जंगल, घास के मैदान, नदियाँ, झीलें और समुद्र जैसे बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधन भी प्रदान करता है. पर्यावरण संरक्षण जैविक संतुलन बनाए रखने, प्राकृतिक विरासत को संरक्षित करने और पर्यावरण प्रदूषण के जोखिमों से मानव स्वास्थ्य की रक्षा करने में मदद करता है. इसके अलावा, पर्यावरण को संरक्षित करने से प्राकृतिक आपदाओं, सूखे और जलवायु परिवर्तन को कम करने, बेहतर रहने का माहौल बनाने में भी मदद मिलती है. साथ ही, पर्यावरण की रक्षा करना भविष्य की पीढ़ियों की देखभाल भी है, ताकि वे इस ग्रह से अच्छी चीजों का आनंद लेना जारी रख सकें.

पर्यावरण प्रदूषण का सीधा असर मानव स्वास्थ्य और समाज के सतत विकास पर पड़ता है. इसलिए पर्यावरण की रक्षा करना एक अत्यावश्यक कार्य है और इसके लिए सभी का सहयोग आवश्यक है.

पर्यावरण के लिए बड़ा बदलाव लाने का पहला कदम सिंगल-यूज प्लास्टिक के इस्तेमाल की आदत को बदलना है. यह आसान लगता है, लेकिन इस कदम का बहुत बड़ा असर होता है, जो हमारे रहने के पर्यावरण की रक्षा में योगदान देता है. प्लांट-बेस्ड स्ट्रॉ सेट जो खुद ही विघटित हो जाता है: कॉफी, खोई, नारियल, घास और चावल से बना, स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित और प्राकृतिक वातावरण में पूरी तरह से खाद बनाने योग्य.

खाद्य कंटेनर: गन्ने की खोई से बना, जो एक स्थायी प्राकृतिक संसाधन है जो नवीकरणीय है और जल्दी से विघटित हो जाता है. खोई फाइबर की उत्कृष्ट विशेषताएं इसका स्थायित्व, पैकेजिंग में लचीलापन जलरोधी गुणों से निहित हैं.

पानी आधारित कोटिंग वाले पेपर कप और ढक्कन: प्लास्टिक (पीपी, पीई, या पीएलए) के बजाय पानी आधारित कोटिंग का उपयोग करने से उत्पादन प्रक्रिया में कम कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) उत्सर्जित होती है और नियमित पेपर कप की तुलना में अपघटन के दौरान पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव कम होता है. ये कप 18 सप्ताह के भीतर प्राकृतिक वातावरण में पूरी तरह से विघटित हो जाते हैं और विभिन्न आकारों में आते हैं, जो कई तरह के उपयोगों के लिए उपयुक्त हैं.

वनरोपण पर्यावरण की गुणवत्ता में सुधार और प्रदूषण को कम करने के लिए एक प्रभावी उपाय है. वन वृक्ष न केवल CO_2 को अवशोषित करके और ऑक्सीजन का उत्पादन करके हवा को साफ करते हैं, बल्कि मिट्टी के कटाव को सीमित करने और मिट्टी की नमी को बनाए रखने में भी मदद करते हैं. विशेष रूप से, वन बड़ी मात्रा में CO_2 को अवशोषित कर सकते हैं, जिससे ग्रीनहाउस प्रभाव को कम करने और वैश्विक जलवायु को स्थिर करने में मदद मिलती है. वनरोपण से कई आर्थिक और सामाजिक लाभ भी होते हैं, समुदायों के लिए आय और रोजगार पैदा करता है, साथ ही लकड़ी और अन्य वन उत्पादों के स्रोत भी प्रदान करता है.

अक्षय ऊर्जा का उपयोग पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों पर दबाव कम करने और पर्यावरण की रक्षा करने में मदद करने के उपायों में से एक है. सौर, पवन, जलविद्युत और भू-ताप जैसे अक्षय ऊर्जा स्रोतों का जीवाश्म ऊर्जा के उपयोग की तुलना में पर्यावरण पर कम प्रभाव पड़ता है. अक्षय ऊर्जा प्रौद्योगिकी को लागू करने से न केवल ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने में मदद मिलती है, बल्कि पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों के दोहन और उपयोग से होने वाले वायु और जल प्रदूषण को कम करने में भी मदद मिलती है.

सार्वजनिक परिवहन जैसे बसें, रेलगाड़ियाँ और सबवे न केवल उत्सर्जन और वायु प्रदूषण को कम करने में मदद करते हैं, बल्कि ध्वनि प्रदूषण को भी कम करते हैं और यातायात की भीड़ को भी कम करते हैं. सार्वजनिक परिवहन के उपयोग को बढ़ावा देकर, हम कार्बन उत्सर्जन को कम करने और स्वस्थ रहने वाले वातावरण को बनाए रखने में योगदान करते हैं.

वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसे पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में जानकारी और शिक्षा बढ़ाकर, हम सार्वजनिक जागरूकता और कार्रवाई को बढ़ावा दे सकते हैं. इस तरह, प्रत्येक व्यक्ति पर्यावरण पर अपने प्रभाव को बेहतर ढंग से समझ सकता है और भविष्य के लिए एक स्थायी रहने वाले पर्यावरण की रक्षा और रखरखाव में योगदान दे सकता है.

पर्यावरण संरक्षण पूरे समाज की साझा जिम्मेदारी है, न कि केवल एक व्यक्ति की. प्रत्येक व्यक्ति और संगठन को प्रभावी पर्यावरण संरक्षण

उपायों को लागू करने में योगदान देने के लिए हाथ मिलाना चाहिए, ताकि वे अपने, अपने परिवार और समुदाय के लिए एक हरा-भरा - स्वच्छ - सुंदर रहने योग्य वातावरण बना सकें.

पर्यावरण एक साझा घर है, लोगों का पोषण और सुरक्षा करने की जगह है. हालाँकि, आज पर्यावरण कई गंभीर समस्याओं का सामना कर रहा है जैसे जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, अपशिष्ट आदि. इसका मुख्य कारण यह है कि लोग पर्यावरण संरक्षण के बारे में जागरूक नहीं हैं. पर्यावरण संरक्षण पूरे समाज की साझा जिम्मेदारी है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति और संगठन के संयुक्त योगदान की आवश्यकता है. आइए आज से ही मिलकर छोटी-छोटी चीजों से कदम उठाएं जैसे: सिंगल-यूज प्लास्टिक वस्तुओं के उपयोग को सीमित करना, बिजली और पानी की बचत करना, अधिक पेड़ लगाना, कचरे को सही जगह पर फेंकना आदि. पर्यावरण की रक्षा करें, अपने जीवन और आने वाली पीढ़ियों की रक्षा करें.

''पृथ्वी हमारा एकमात्र साझा घर है, आइये हम सब मिलकर इसकी रक्षा करें!''

राकेश कुमार सिंह
क्षेत्रीय प्रमुख
गोरखपुर

अरूणाचल प्रदेश के प्रमुख दर्शनीय स्थल

अरुणाचल प्रदेश उत्तर - पूर्वी भारत के सबसे खूबसूरत राज्यों में से एक है. पहाड़ी क्षेत्र में स्थित ये राज्य शांत झीलों, झरनों, बर्फ से ढकी बड़ी-बड़ी चोटियों, और कई खूबसूरत और प्रसिद्ध जगहों के कारण जाना जाता है. इसके साथ-साथ अरुणाचल प्रदेश भारत का इकलौता ऐसा राज्य है, जहां सबसे पहले सूर्योदय होता है. अरुणाचल प्रदेश का 80 प्रतिशत हिस्सा पर्वतों से घिरा है और यहीं वजह है कि यहां प्राकृतिक सौंदर्यता बहुत अधिक देखने को मिलती है और इसी कारण पर्यटक भी इस जगह में आकर प्रकृति से बहुत आकर्षित होते है.

अरुणाचल के प्रमुख पर्यटन स्थल -

1. भालुकपोंग

भालुकपोंग भारत के अरुणाचल प्रदेश राज्य के कामेंग जिले का एक बहुत ही खुबसूरत कस्बा है, जो की कामेंग नदी के किनारे बसा हुआ है. भालुकपोगं अरुणाचल प्रदेश का प्रवेश द्वार भी माना जाता है और टीपी ऑर्किडेरियम भी भालुकपोंग की एक प्रसिद्ध जगह है, साथ ही यहां आप सहाबदार जंगलों से घिरे पक्के टाइगर रिजर्व नेशनल पार्क का भी भ्रमण कर सकते है जिसे पंखुई टाइगर रिजर्व के नाम से भी जाना जाता है. यहां के कुछ पर्यटक स्थल है -

- भालुकपोंग फोर्ट
- टीपी ऑर्किडेरियम
- पक्के टाइगर रिजर्व नेशनल पार्क

2. बोमडिला

समुद्रतल से 8000 फीट की ऊंचाई पर स्थित बोमडिला अरुणाचल प्रदेश का एक छोटा सा शहर है जो प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर है. बोमडिला पर्यटकों के लिए एक बहुत ही मनमोहक जगह है, क्योंकि यहां बर्फ से ढकी चोटियों के साथ हिमालय के अत्यंत मनमोहक क्षेत्र को देख सकते है. साथ ही यहां स्थित बौद्ध मठ, गोम्पा और बौद्ध सांस्कृतिक परंपराएं भी लोगों को अपनी तरफ बहुत अधिक आकर्षित करती है. इसके अलावा बोमडिला में मौजूद आर.आर. हिल भी एक बहुत खुबसूरत जगह है जो बोमडिला का उच्चतम बिंदु है, क्योंकि यहां से तवांग और पड़ोसी देश भूटान में जाने वाली घुमावदार सड़को को देखा जा सकता है. यहां के कुछ पर्यटन स्थल-

- बोमडिला व्यू प्वाइंट
- बोमडिला मठ

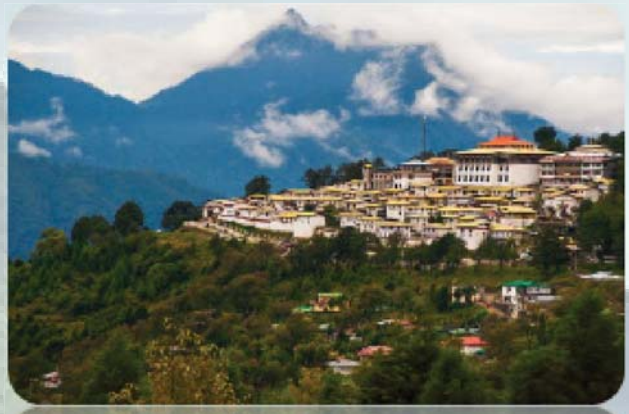

- ऑर्किड अनुसंधान एवं विकास केन्द्र
- आर.आर. हिल
- लोअर गोम्पा, मध्य गोम्पा और ऊपरी गोम्पा

3. दिरांग

दिरांग अरुणाचल प्रदेश के कमेंग जिले का एक खूबसूरत गांव है, जो पर्यटकों के लिए किसी स्वर्ग से कम नहीं है क्योंकि इसके मनमोहक दृश्य लोगों को बहुत आकर्षित करते है. अरुणाचल प्रदेश का ये गांव दिरांग घाटी के लिए भी प्रचलित है, क्योंकि अक्सर ये यात्रियों और पर्वतारोहियों को एक अनूठा अनुभव प्रदान करती है. यहां के घूमने की जगह -

- याक राष्ट्रीय अनुसंधान केन्द्र
- दिरांग दजोंग
- सांगती वैली
- कलाचक्र गोंपा

विद्वानों की संगति जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है - रामतीर्थ

4. ईटानगर

ईटानगर अरुणाचल प्रदेश की राजधानी एवं अरुणाचल प्रदेश का सबसे बड़ा शहर भी है. यहां के प्रमुख पर्यटन स्थल है -

- ईटा फोर्ट
- गंगा झील
- रूपा हिल स्टेशन
- गोम्पा बौद्ध मंदिर
- ईटानगर वन्यजीव अभ्यारण्य
- इंदिरा गांधी पार्क

5. ज़ीरो

ज़ीरो अरुणाचल प्रदेश के निचले सुबनसिरी जिले में स्थित एक शहर है जो की प्राकृतिक सौंदर्यता से परिपूर्ण है. ज़ीरो के निम्नलिखित स्थल अत्यंत मनमोहक और घूमने लायक है -

- टैली वैली वन्यजीव अभ्यारण्य
- मेघना गुफा मंदिर
- किले पाखों
- जीरो पुतो
- डोलो मंडो
- पाइन ग्रूव
- बैम्बू ग्रूव

6. दापोरिजो

दापोरिजो सुंदर सुबनसिरी नदी के तट पर बसा हुआ एक शहर है जो अपनी अनूठी परंपराओं, संस्कृतियों एवं धार्मिक प्रथाओं के लिए प्रसिद्ध है. अगर कोई भी पर्यटक दापोरिजियो जाते है, तो वो इन जगहों में घूमने का लुत्फ उठा सकते है.

- कमला रिजर्व फॉरेस्ट
- सुबनसिरी नदी
- दापोरिजियो संग्राहालय और क्राफ्ट सेंटर
- सिगेम दापोरिजियो रिजर्व फॉरेस्ट

7. पासीघाट

पासीघाट अरुणाचल प्रदेश का एक सबसे पुराना शहर है जिसे 1911 में अंग्रेजो ने स्थापित किया था. ये शहर समुद्र तल से 152 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है, जहां आपको पासीघाट के मूल निवासियों की सांस्कृतिक परंपराएं देखने को मिल जाती है और इसके अलावा इस शहर में झरने, झूलते हुए पुल और पहाड़ की चट्टानें एक ही समय में इसे पर्यटन और विश्राम का स्थान बनाती हैं. पासीघाट में घूमने के लिए कुछ खास जगह -

- ड़ी एरिंग अभयारण्य
- केकर मोइंग
- कोसिंग
- पनगिन

8. तवांग

तवांग अरुणाचल प्रदेश के पश्चिम में स्थित एक बहुत ही खूबसूरत शहर है, जहां अक्सर पर्यटक आते जाते रहते है और इसके मनोरम दृश्य को हमेशा याद रखते है. यहां स्थित पहाड़ों की चोटी, ऊंचे-ऊंचे झरने, और मठ लोगों को अपनी तरफ सुंदरता के कारण आकर्षित करते है.

तवांग के पर्यटन स्थल -

- तवांग मठ
- सेला पास
- नुरानांग फॉल्स
- माधुरी झील
- पेंग तेंग त्सो झील

9. तेजु

तेजु अरुणाचल प्रदेश राज्य के लोहित जिले में स्थित एक छोटा सा कस्बा है जो अपनी खूबसूरत वादियों और नदियों के लिए जाना जाता है जो सभी के मन को मोह लेती है, क्योंकि प्राकृतिक सौंदर्यता इस जगह में चारो तरफ समाई हुई है. अगर कोई भी पर्यटक अरुणाचल प्रदेश के पर्यटन स्थल में तेजु में जाना चाहते है तो वो इन जगहों में जा सकते है -

- डोंग वैली
- ग्लो लेक
- परशुराम कुंड
- तेजु जिला संग्रहालय और शिल्प केन्द्र

इन जगहों के अलावा अरुणाचल प्रदेश में अनेकों जगह है जहां हम घूम सकते है और प्रकृति का लुत्फ उठा सकते है. यह उत्तर पूर्वी भारत का एक अत्यंत मनमोहक राज्य है जहां हर किसी को एक न एक बार जरूर जाना चाहिए.

सुश्री गीताली गोगोई
प्रबंधक, गराली शाखा
क्षेत्रीय कार्यालय,अपर असम

सेन्ट्रलाइट पढ़िए और आकर्षक इनाम जीतिए

प्रश्नमंच क्र - 2

कृपया

QR कोड स्कॅन करें

दिनांक 04.09.2024 तक प्राप्त सर्वश्रेष्ठ 20 विजेताओं को
राशि रु. 500 /- प्रदान कर पुरस्कृत किया जाएगा!

कोई भी वस्तु महान का आश्रय पाकर उत्कर्ष प्राप्त करती है - हर्ष

धन-शोधन निवारण एवं आतंकवादी वित्तपोषण पर रोकथाम

एक बैंकर के रूप में, हमारी सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों में से एक वित्तीय प्रणाली को मनी लॉन्ड्रिंग और आतंकवादी वित्तपोषण गतिविधियों (Terror financing activities) के लिए इस्तेमाल होने से रोकना है. धन - शोधन निवारण (एंटी मनी लॉन्ड्रिंग) (एएमएल) की प्रक्रिया बैंकिंग उद्योग के लिए आवश्यक है क्योंकि यह यह सुनिश्चित करने में मदद करती है कि बैंकों और अन्य वित्तीय संस्थानों को अवैध गतिविधियों के लिए वाहन के रूप में उपयोग नहीं किया जाता है.

मनी लॉन्ड्रिंग एक ऐसी प्रक्रिया है जहां अपराधी अपनी अवैध गतिविधियों की आय को वैध धन के रूप में छिपाने का प्रयास करते हैं. वे जटिल लेन-देन की एक श्रृंखला के माध्यम से धन को अंतरित करके ऐसा करते हैं, जिससे धन की उत्पत्ति का पता लगाना मुश्किल हो जाता है. ऐसी गतिविधियों को होने से रोकने के लिए एएमएल नियम और दिशानिर्देश बनाए गए हैं.

एएमएल विनियमों का पालन सुनिश्चित करने के लिए बैंकों को कई महत्वपूर्ण कदम उठाने की आवश्यकता है. इनमें निम्नलिखित शामिल हैं:

1. **ग्राहक की पहचान और सम्यक जाँच :** बैंकों को अपने ग्राहकों के लिए खाता खोलने से पहले उनकी पहचान करनी चाहिए. उन्हें पहचान संबंधी दस्तावेज़, जैसे पासपोर्ट या राष्ट्रीय पहचान पत्र (आधार कार्ड) एकत्र करने होंगे और उनकी प्रामाणिकता सत्यापित करनी होगी. बैंक को यह सुनिश्चित करने के लिए उचित परिश्रम भी करना चाहिए कि ग्राहक पॉलिटिकली एक्सपोस्ड पर्सन (पीइपी) या आपराधिक गतिविधि से जुड़ा व्यक्ति नहीं है.

2. **लेनदेन की निगरानी :** बैंकों को ग्राहकों के लेनदेन की निगरानी करने और संबंधित अधिकारियों को किसी भी संदिग्ध गतिविधि की रिपोर्ट करने की आवश्यकता है. बैंक को उच्च-जोखिम वाले ग्राहकों या लेनदेन के लिए संवर्धित उचित परिश्रम भी करना चाहिए.

3. **प्रशिक्षण और जागरूकता:** बैंक कर्मचारियों को एएमएल विनियमों और दिशानिर्देशों पर प्रशिक्षित किया जाना चाहिए. उन्हें उन जोखिमों से अवगत होना चाहिए जो संदिग्ध गतिविधि का संकेत दे सकते हैं और उन्हें पता होना चाहिए कि उन्हें कैसे रिपोर्ट करना है.

4. **प्रौद्योगिकी और प्रणालियां:** बैंकों के पास लेन-देन की निगरानी करने और संदिग्ध गतिविधि का पता लगाने के लिए आवश्यक तकनीक और प्रणालियां होनी चाहिए. संबंधित अधिकारियों को ऐसी गतिविधियों की रिपोर्ट करने के लिए उनके पास एक प्रणाली भी होनी चाहिए.

एएमएल नियमों का पालन न करने के परिणाम गंभीर हो सकते हैं. बैंकों को भारी जुर्माना, प्रतिष्ठा की क्षति, और यहां तक कि आपराधिक मुकदमे का सामना करना पड़ सकता है. एक बैंकर के रूप में, यह सुनिश्चित करना हमारा उत्तरदायित्व है कि हमारा संस्थान एएमएल विनियमों और दिशानिर्देशों का अनुपालन करता है.

एएमएल विनियमों का अनुपालन करने के अलावा, बैंकों को मनी लॉन्ड्रिंग गतिविधियों की विकसित होती प्रकृति के बारे में भी जागरूक होना चाहिए. अपराधी अपनी गतिविधियों को छिपाने के लिए लगातार नए तरीके विकसित कर रहे हैं, और बैंकों को इन परिवर्तनों के अनुकूल होने में सक्षम होना चाहिए.

नई तकनीक में निवेश करके बैंक वक्र से आगे रह सकते हैं. मशीन लर्निंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी प्रौद्योगिकी में प्रगति, बैंकों को संदिग्ध गतिविधि का अधिक तेज़ी से और सटीक रूप से पता लगाने में मदद कर सकती है. ये प्रौद्योगिकियां बड़ी मात्रा में डेटा का विश्लेषण कर सकती हैं और पैटर्न की पहचान कर सकती हैं जो मनी लॉन्ड्रिंग गति विधि का संकेत हो सकता है.

एएमएल अनुपालन का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू अंतर्राष्ट्रीय सहयोग है. मनी लॉन्ड्रिंग एक वैश्विक समस्या है, और इसे रोकने के लिए बैंकों को सीमाओं के पार मिलकर काम करना चाहिए. वित्तीय कार्रवाई कार्यबल (फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स) (एफएटीएफ) एक अंतर-सरकारी संगठन है जो एएमएल और आतंकवाद वित्तपोषण की रोकथाम (काउंटर - टेररिस्ट फाइनेंसिंग) (सीएफटी) गतिविधियों के लिए मानक तय करता है. बैंकों को यह सुनिश्चित करने के लिए इन मानकों का पालन करना चाहिए कि उनका उपयोग अवैध गतिविधियों के लिए वाहन के रूप में नहीं किया जाता है.

अंत में, एंटी-मनी लॉन्ड्रिंग बैंकों के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा है, और यह सुनिश्चित करना हमारी जिम्मेदारी है कि हम नियमों और दिशानिर्देशों का पालन करें. हमें संदिग्ध गतिविधि की पहचान करने और रिपोर्ट करने में सतर्क रहना चाहिए, नई तकनीक में निवेश करना चाहिए, और मनी लॉन्ड्रिंग गतिविधियों को रोकने के लिए अन्य बैंकों और नियामक निकायों के साथ मिलकर काम करना चाहिए. ऐसा करके, हम वित्तीय प्रणाली की रक्षा करने और अवैध गतिविधियों की आय को वैध अर्थव्यवस्था में प्रवेश करने से रोकने में मदद कर सकते हैं.

रितिका वशिष्ठ
लिपिक
गराली शाखा

क्या है डिजिटल हाउस अरेस्ट ?

घर पर होंगे कैद और साफ हो जाएगा आपका बैंक अकाउंट

आजकल जैसे-जैसे आधुनिकता बढ़ी है. हर क्षेत्र में आधुनिक तकनीक आई है. जिससे लोगों को बहुत सहूलियत भी हुई है. तो वहीं अपराधियों को भी इस तकनीक से अपराधों को अंजाम देने में फ़ायदा हुआ है. अब अपराधी कहीं दूर बैठे भी किसी को अपना शिकार बना लेते हैं. जिन लोगों को ऑनलाइन हो रहे हैं फ्रॉड के बारे में कम जानकारी है. उन लोगों को साइबर अपराधी अपने चंगुल में फंसा लेते हैं और मोटी रकम ऐंठ लेते हैं. जैसे हम डिजिटल क्रांति की ओर बढ़ रहे है. वैसे वैसे साइबर क्राइम के मामले भी बढ़ते जा रहे हैं. हैकर्स और साइबर क्राइम करने वाले घर बैठे लोगों को भ्रमित करके लाखों रुपए की ठगी कर लेते हैं. बिना ओटीपी बताए भी बैंक खातों से रुपए उड़ा लेते हैं. भारतीय रिजर्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार वित्त वर्ष 2023 में करीब 30,000 करोड़ रुपये से ज्यादा के बैंक धोखाधड़ी के मामले रजिस्टर किए गए है.

डिजिटल अरेस्ट ऐसा ही एक डिजिटल धोखाधड़ी का प्रकार है. जैसा कि इसके नाम से पता चलता है कि इसमें स्कैमर्स पीड़ित को कॉल या वीडियो कॉल करते हैं और बंधक बना लेते हैं. इसमें स्कैमर्स एक ऐसा सेटअप बना लेते हैं, जिसमें लगता है कि वे पुलिस स्टेशन से बात कर रहे हैं. वे खुद को सीबीआई, कस्टम, पुलिस या किसी केंद्रीय एजेंसी का अधिकारी बताकर लोगों को कॉल करते हैं. वे कहते हैं कि आपके फोन नंबर, आधार, बैंक अकाउंट से गलत काम हुए हैं और उनके खिलाफ कोई गंभीर प्रकरण दर्ज है गिरफ्तारी का डर दिखाकर वे पीड़ित को घर पर ही कैद कर लते हैं. काफी देर तक वे लोगों को ऑ नलाइन बंधक बनाकर अपने काबू में रखते हैं. डर के मारे व्यक्ति वही करता है जो साइबर क्रिमनल उसे निर्देश देते हैं. अपना प्रभाव जमाने के लिए वे साइबर पुलिस का फर्जी आई कार्ड भी दिखाते हैं, जिसमें बाकायदा साइन और सील लगी होती है. अपने घर में होने के बावजूद भी व्यक्ति मानसिक और डिजिटल रूप में किसी अन्य के काबू में होता है. यही डिजिटल अरेस्ट कहलाता है, उन्हें पैसे देने के लिए मजबूर कर देते हैं. डर के मारे कोई व्यक्ति जब तक संभल पाए, तब तक उसे लाखों रुपए का चूना लग जाता है.

डिजिटल अरेस्ट के कुछ मामलें

1. **बैंक मैनेजर को ऐसे बनाया बंधक**

   जयपुर में रहने वाली एक बैंक मैनेजर के पास साइबर क्रिमिनल का कॉल आया. कॉलर ने खुद के दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण का अधिकारी बताते हुए कहा कि आपके आधार कार्ड से ली गई एक सिम का उपयोग अवैध कार्यों के लिए किया जा रहा है. महिला बैंक मैनेजर यह सुनकर हैरान रह जाती है. इसी दौरान एक दूसरे व्यक्ति का कॉल आता है जो खुद को मुंबई पुलिस का अधिकारी बताता है.

   गिरफ्तारी से बचने के लिए एक डाउनलोड करके वीडियो कॉल पर आने की कहता है. करीब पांच घंटे तक वह क्रिमिनल महिला बैंक मैनेजर को डिजिटल अरेस्ट करके रखता है. इस दौरान वह गिरफ्तारी से बचने के लिए रुपए ट्रांसफर करने के लिए कहता है. डर के मारे महिला बैंक मैनेजर अपनी एफडी तोड़कर 17 लाख रुपए साइबर क्रिमिनल द्वारा बताए गए अकाउंट पर ट्रांसफर कर देती है.

2. जोधपुर में साइबर क्रिमिनल ने एक महिला को कॉल करके खुद को पुलिस अधिकारी बताया उसने महिला से कहा कि उसके बेटे पर दुष्कर्म का केस दर्ज है. गिरफ्तारी का डर दिखाकर महिला से करीब एक लाख रुपए ट्रांसफर करवा लिए गए. इसी तरह जयपुर में भी एक व्यक्ति को कॉल करके उनकी बेटी के खिलाफ केस दर्ज होने और गिरफ्तार करने की धमकी देकर रुपए ऐंठ लिए गए. साइबर ठग लोगों को काफी देर तक बातों उलझाए रखते हैं. फिर उन्हें ठगी का शिकार बना लेते हैं.

3. एक महिला द्वारा दर्ज एफआईआर में बताया गया है कि कुछ दिन पहले उनके पास एक अज्ञात नंबर से फोन आया था. कालर ने खुद को फेडेक्स कंपनी का कर्मचारी बताते हुए मनी लॉन्ड्रिंग में शामिल होने और पार्सल में ड्रग पकड़े जाने की धमकी दिया. यह कहकर कालर ने कथित मुंबई साइबर क्राइम ब्रांच में काल ट्रांसफर कर दी. क्राइम ब्रांच की तरफ से वीडियो कॉलिंग ऐप डाउनलोड करवाया गया. इसके बाद वीडियो कॉल पर कथित रूप से पूछताछ की गई. बैकग्राउंड में वर्दी में मौजूद कई पुलिस अधिकारी भी दिखाई दे रहे थे. इसके कुछ देर बाद बताया गया कि आपकी आइडी कई गैर कानूनी गतिविधियों ड्रग्स सप्लाई, मनी लॉन्ड्रिंग व अन्य जगह उपयोग में लाई गई है. इसके बाद लगातार वीडियो कॉल पर सवाल पूछे गए और रात भर सोने नहीं दिया गया. अगले दिन वीडियो कॉल पर एसीपी बनकर जांच करने के लिए आए. इसके बाद अलग-अलग तरीके से डरा धमका कर पांच लाख 20 हजार रुपये खाते में डलवा लिया. पीड़िता ने लोन लेकर साइबर अपराधियों को रुपये दिए हैं.

4. प्रयागराज पुलिस ने डिजिटल अरेस्ट के एक बड़े प्रकरण का खुलासा करते हुए चार साइबर ठगों को गिरफ्तार किया था. उन

बदमाशों ने एक महिला से 1 करोड़ 48 लाख रुपए ऐंठ लिए थे. पुलिस के मुताबिक ठगों ने पहले कस्टम इंस्पेक्टर बनकर महिला को कॉल करके कहा था कि उनके नाम से एयरपोर्ट पर एक पार्सल आया है जिसमें ड्रग्स है. बाद में दूसरे व्यक्ति ने खुद को डीसीपी बताकर कॉल किया और गिरफ्तारी का डर दिखाया. हैरानी की बात यह है कि साइबर ठगों ने बुजुर्ग महिला को तीन दिन तक उसी के घर में बंधक बनाकर रखा. ठगों ने धमकी दी थी कि वह घर से बाहर नहीं निकले. डर के मारे महिला तीन दिन तक एक ही कमरे में बंद रही और ठगों के बताए गए अकाउंट नंबर पर रुपए ट्रांसफर करती रही.

सावधानी जरूरी है

आजकल साइबर ठगी के नए नए तरीके सामने आ रहे हैं. लोगों को समझदारी से काम लेना चाहिए. अगर कोई खुद को पुलिस अधिकारी बनकर कॉल करता है तो संबंधित थाने में सूचना देनी चाहिए. अगर आपने कोई क्राइम किया ही नहीं तो डरने की जरूरत ही नहीं है. झूठ बोलकर गिरफ्तारी का डर दिखाने वालों के झांसे में नहीं आना चाहिए. किसी के कहने पर कोई ऐप भी मोबाइल में डाउनलोड नहीं करें वरना आपके बारे में सारी जानकारी सामने वाले के पास चली जाएगी. इसके बाद वे ओटीपी भी देख सकते हैं और अकाउंट से रुपए भी निकाल सकते हैं. ऐसी घटनाओं से बचने के लिए सावधानी सबसे जरूरी है.

इस तरह से साइबर क्राइस से कैसे बचें?

किसी भी तरह के साइबर फ्रॉड से बचने के लिए आपको हमेशा सावधान और सतर्क रहना चाहिए. यहां हम आपके साथ कुछ ऐसे उपायों के बारे में जानकारी दे रहे हैं, जिनसे आप इस तरह के स्कैम से बच सकते हैं.

सतर्क और सावधान: कभी भी अगर आप इस तरह के कॉल रिसीव करते हैं तो सबसे पहले आपको सावधान रहने की जरूरत है. इसके साथ ही ऑनलाइन स्कैम और फ्रॉड के तरीकों की जानकारी रखें. आपको यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि सरकार, बैंक या फिर कोई भी जांच एजेंसी कॉल पर आपको डरा या धमका नहीं सकती है. आप कॉल काट कर उनके खिलाफ शिकायत दर्ज करवा लें.

पहचान वेरिफाई जरूर करें: किसी को भी कॉल पर पर्सनल या फाइनेंशियल डिटेल जैसी जानकारी बिलकुल भी शेयर न करें. अगर इस तरह की जानकारी आपको भेजनी भी पड़ी तो पहले उस कॉलर की पहचान जरूरी तौर पर वेरिफाई कर लें. जैसा कि हम पहले भी आपको बता चुके हैं कि बैंक या कोई ऑफिशियल संस्था आपसे फोन पर पिन या आपसे जुड़ी निजी जानकारी नहीं पूछती है.

संदिग्ध गतिविधियां रिपोर्ट करें: अगर आपको किसी भी तरह से स्कैमर्स की कॉल या मैसेज आते हैं तो इन्हें रिपोर्ट करें. इसके साथ ही अगर आपके बैंक अकाउंट में कुछ भी संदिग्ध अगर आपको लगता हैं तो इसकी भी शिकायत करें. स्कैम कॉल या मैसेज को रिपोर्ट करने के लिए आप सरकारी पोर्टल चक्षु का इस्तेमाल कर सकते हैं.

अपने डिवाइस और अकाउंट को रखें सेफ: ऑनलाइन स्कैम या डिजिटल धोखाधड़ी से बचने के लिए आपको अपने सभी अकाउंट (बैंक से लेकर सोशल मीडिया और ईमेल) को सेफ रखना आवश्यक है. अपने सभी पासवर्ड और पिन समय-समय पर अद्यतन करते रहें और उन्हें मजूबत बनाने की कोशिश करें. इसके साथ अकाउंट की सेफ्टी के लिए 2-फैक्टर ऑथन्टिकेशन जरूर इनेबल रखें. इसके साथ ही अपने सभी डिवाइस को लेटेस्ट सॉफ्टवेयर के साथ अपडेट रखें.

हितेन्द्र धूमाल
मुख्य प्रबंधक-राजभाषा
केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई

अभिनंदन

**कु. नक्षत्रा, पुत्री मेजर गीतांजली शर्मा,
वरिष्ठ प्रबन्धक (सुरक्षा), एम एम ज़ेड ओ**

**ने सीबीएसई माध्यमिक विद्यालय परीक्षा - 2024 में
95.60% अंक प्राप्त किए.**

**हम उन्हें बधाई देते हैं तथा उनके उज्ज्वल
भविष्य के लिए शुभकामनाएं देते हैं.**

मातृभाषा में शिक्षा का महत्व

भाषा सीखने का मुख्य उद्देश्य लोगों को खुद को अभिव्यक्त करने में सक्षम बनाना और दूसरों के साथ अपनी अभिव्यक्ति साझा करने की स्थिति में लाना है. मातृभाषा सीखने का मुख्य कारण यह है कि हम पृथ्वी पर कहीं से भी अपनी भूमि, अपनी संस्कृति से जुड़े रह सकते हैं.

भारत एक विकासशील राष्ट्र है और वैश्विक स्तर पर ज्ञान के स्रोत के रूप में जाना जाने के लिए दृढ़ संकल्पित है. पिछले कुछ वर्षों से, भारत सरकार पारंपरिक शिक्षा मॉडल को आधुनिक एड-टेक ढांचे में बदलने के लिए काम कर रही है, जिसका उद्देश्य सबसे बड़ा ज्ञान स्रोत बनना है. इसे संभव बनाने की प्रक्रिया में, शिक्षा में मातृभाषा के महत्व की खोज की गई है.

इस खोज ने भारतीय स्कूली पाठ्यक्रम के तहत बुनियादी शिक्षा में मातृभाषा की शुरुआत की है. इसने छात्रों के लिए नए दरवाजे खोले हैं और उन्हें अधिक प्रभावी ढंग से सीखने में सक्षम बनाया है. इसने पारंपरिक और आधुनिक शिक्षा प्रणालियों के बीच की खाई को पाटने में भी मदद की है.राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2022 में सिफारिश की गई है कि बच्चों को आठ साल की उम्र तक उनकी मातृभाषा में शिक्षा दी जाए.

शिक्षा के अधिकार अधिनियम, 2009 के तहत अध्याय V की धारा 29(f) में कहा गया है कि ''शिक्षा का माध्यम, जहाँ तक संभव हो, बच्चे की मातृभाषा में होना चाहिए.'' क्षेत्रीय भाषाओं में ज्ञान परिवर्तन ने छात्रों को विषय वस्तु को बेहतर ढंग से समझने और उनके समग्र सीखने के अनुभव को बेहतर बनाने में सक्षम बनाया है. उदाहरण के लिए, यह सुनिश्चित करना कि बच्चे सही खाद्य पदार्थ खाएं, उनकी शब्दावली का विस्तार करने के लिए उनकी मातृभाषा में संवाद करें, या उन्हें नैतिक रूप से ईमानदार या ऐतिहासिक रूप से सटीक ऐतिहासिक कहानियाँ सुनाएँ. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस बात की वकालत करती है कि जहाँ भी संभव हो, शिक्षा का माध्यम कम से कम ग्रेड 5 तक मातृभाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा होगी, लेकिन अधिमानत: ग्रेड 8 और उससे आगे तक,''सार्वजनिक और निजी दोनों स्कूलों में. एनईपी बच्चे की K-12 शिक्षा में ई-लर्निंग के महत्व पर भी जोर देता है.

किसी कक्षा में ऐसे छात्र हो सकते हैं जो एक से अधिक मूल भाषा बोलते हों, लेकिन शिक्षकों को उनकी समझ, बोलने और लिखने वाली भाषाओं के आधार पर नियुक्त नहीं किया जाता है. संसाधन हमेशा उन क्षेत्रीय बोलियों में उपलब्ध नहीं होते जिन्हें बच्चा समझता है.

शिक्षा मंत्रालय ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सिफारिशों को बनाए रखते हुए कक्षा में अपनी मातृभाषा में सीखने के लाभों को महसूस करने के लिए पाठ्यक्रम रूपरेखा विकसित करने और लागू करने को प्राथमिकता दी है. भारतीय भाषाओं को बढ़ावा दिया जा रहा है और उनका विकास हो रहा है.

उदाहरण के लिए, भारत सरकार की पहल- दीक्षा पोर्टल, भारतीय सांकेतिक भाषा और 32 अन्य भारतीय भाषाओं में कक्षा 1-12 के लिए पाठ्यक्रम सामग्री प्रदान करता है. यहाँ, पाठ्यपुस्तकें और शिक्षण संसाधन भी उपलब्ध हैं.

संसाधनों की इतनी व्यापक लाइब्रेरी प्रदान करके, दीक्षा पोर्टल शिक्षकों के लिए समावेशी शिक्षण वातावरण बनाना आसान बनाता है, जिससे छात्रों को अपनी मूल भाषा में सीखने का बहुमूल्य अवसर मिलता है.

विभिन्न शोध और साक्ष्यों से पता चला है कि बच्चों को उनकी मातृभाषा में पढ़ाने से, विशेष रूप से प्रारंभिक वर्षों (3 से 8 वर्ष की आयु) के दौरान, उच्च अवधारण, उच्च दक्षता, कम अतिरंजित ग्रेड और बेहतर परीक्षा स्कोर प्राप्त होते हैं.

शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा को बढ़ावा देने से देश की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में मदद मिलेगी. अपनी मूल भाषा में सीखने से छात्र अपनी संस्कृति को अधिक प्रभावी ढंग से समझ और सराह सकेंगे. इससे सामाजिक सामंजस्य और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी.

अपनी मातृभाषा में सीखने से छात्रों को बेहतर संचार कौशल विकसित करने में मदद मिल सकती है क्योंकि वे अपनी मूल भाषा में खुद को व्यक्त करने में अधिक सहज होते हैं और भाषा की बारीकियों को अधिक प्रभावी ढंग से समझ सकते हैं. यह न केवल उनकी शैक्षणिक गतिविधियों में उनकी सहायता करेगा बल्कि उनके व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में भी लाभकारी होगा. उदाहरण के लिए, जो छात्र अपनी मूल भाषा में सीखते हैं वे जटिल पाठों को बेहतर ढंग से पढ़ और समझ सकते हैं, जो उन्हें कॉलेज और उनके भविष्य के करियर में सफल होने में मदद कर सकता है.

समाज के कुछ वर्गों में मातृभाषा या मूल भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में बढ़ावा देने का विरोध हो सकता है. यह इस धारणा के कारण हो सकता है कि आधुनिक दुनिया में सफलता के लिए अंग्रेजी सीखना आवश्यक है. इस चुनौती का समाधान करने के लिए क्षेत्रीय भाषाओं में सीखने के लाभों के बारे में जनता को जागरूक करने के लिए निरंतर प्रयास की आवश्यकता होगी.

मातृभाषा में शिक्षा को एक समस्या के रूप में नहीं, बल्कि बच्चों को सशक्त बनाने के एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में अपनाकर, हम उनकी क्षमता को उजागर कर सकते हैं, और सभी के लिए एक उज्जवल भविष्य का निर्माण कर सकते हैं.

संदीप कुमार जायसवाल
वरिष्ठ प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय गोरखपुर

पुण्यवान लोग ही दुख पाते हैं - भट्ट नारायण

व्यापार में भाषा - भाषा से व्यापार

हम जिस भाषा का उपयोग करते हैं वह संप्रेषण के लिए एक उपकरण है और व्यावसायिक अवधारणाओं के लिए एक वाहन है. आपकी भाषा, आपकी पहचान है.भाषा आमतौर पर विचारों या तथ्यों के आदन-प्रदान का महत्वपूर्ण साधन है, कई बार हम कई रूपकों का प्रयोग करके तथा मुहावरेदार वाक्यों का प्रयोग कर सामने वाले को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं.हम इस तथ्य को नहीं झूठला सकते की कभी-कभी गलत शब्द, बातचीत की प्रगति में बाधा डाल देते है और कभी-कभी प्रभावी संप्रेषण की कमी एक स्वस्थ व्यावसायिक रिश्ते को खतरे में डाल सकती है.

व्यवसायी होने के नाते,हम इस तथ्य से अवगत हैं कि हमारे शब्दों में शक्ति होती है.एक पुरानी कहावत है कि भाषा सिर्फ संप्रेषण का साधन नहीं हो सकती है बल्कि एक हथियार भी है,जो कि आज के कारोबारी समय में पहले से कहीं ज्यादा सच साबित हो रही है.

व्यक्तिगत और व्यावसायिक दोनों ही स्थितियों में प्रभावी और पेशेवर भाषा कौशल आवश्यक है.बोलना, लिखना,पढ़ना और सुनना भाषा कौशल के सभी महत्वपूर्ण कार्य है और यदि आप लगातार बढ़ते अंतर्राष्ट्रीय बाजार के साथ बने रहना चाहते है,तो अपनी आवश्यक व्यवसायिक भाषा में उन कौशलों के विकसित करना महत्वपूर्ण है.

वैश्विकरण नें अंग्रेजी भाषा को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की भाषा बना दिया है.वास्तव में लगभग सभी अंतर्राष्ट्रीय व्यवसायिक उद्दमों को अब कम-से-कम दो भाषाओं में अपना कार्य करना आवश्यक है-1) मातृभाषा और 2)अंग्रेजी. अगर आप दोनो भाषाओं में पारंगत नहीं है तो आप महत्वपूर्ण जानकारी साझा करने से चूक जाएगें जिसका सीधा असर आपके व्यवसाय पर पड़ेगा.

कई शोध बताते है कि वैश्विक संचार के लिए अंग्रेजी पसंदीदा भाषा है लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि आप भाषा की समस्या से मुक्त हो जाते है जब तक आप उनके मतलब की जानकारी उनकी पसंदीदा भाषा में उपलब्ध नहीं करा पाते हैं. तब तक आपने व्यवसाय पर कार्य ही नहीं किया.मातृभाषा में कई बोलियां एवं किस्में होती है और सब पर कार्य करना कठिन है, उन भाषाओं के बीच के सूक्ष्म अंतर को समझते हुए लोगो को अपनी बात समझाना बड़ी बात है.

भारतवर्ष में एक भाषा जो सभी समस्याओं का समाधान कर सकती है वह केवल हिंदी ही है.श्रीमती इंदिरा गाँधी जी का कथन है ''देश को किसी संपर्क भाषा की आवश्यकता होती है और भारतवर्ष में वह केवल हिंदी ही हो सकती है.'' जब इंदिरा जी ने यह कथन कहा था तो निश्चित ही उन्होंने संपूर्ण भारत के परिप्रेक्ष्य में ही कहा होगा जिसमें समाजिक,राजनीतिक,सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टिकोण भी शामिल रही होगी.

भारत में कुल 22 आधिकारिक भाषाएँ एवं सैकड़ों बोलियां है.अब यहां प्रश्न उठता है कि एक कर्मचारी या व्यवसायी के लिए कितनी भाषाएं सीखनी आवश्यक है इसका जवाब है नौकरी की प्रवृति और जिस क्षेत्र में आप काम कर रहे है.दूसरी और तीसरी भाषा का ज्ञान आपकी समग्र व्यासायिक विकास क्षमता के साथ-साथ उत्पादकता भी बढ़ेगी.

भारतीय व्यापार-जगत हिंदी बोलता है-

विश्व मंच पर हिंदी जानने,बोलने और समझने वाले कुल लोगों की गणना करने पर ज्ञात होता हे कि हिंदी विश्व की चौथी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है. हिंदी का स्थान विश्व में कौन सा है यह एक बहस का मुद्दा जरूर हो सकता है लेकिन हिंदी जानने वालो की संख्या गिणती से परे है इसमें कोई शक नहीं है.इस संख्या से उत्पन्न होने वाली बाजार क्षमता सभी व्यापारियों का ध्यान जरूर आकर्षित करती है.सिर्फ भाषायी आधार पर इनकी स्थिति को नजरअंदाज नही किया जा सकता है और इन्हें,इनकी भाषा में सेवाएं उपलब्ध कराना सबसे महत्वपूर्ण है.अगर सिर्फ भारत की बात करे तो कुल 9 राज्य और 2 केंद्रशासित प्रदेश में हिंदी ही कार्य व्यवहार और बोलचाल की भाषा है तथा इनके अलावा 6 ऐसे विदेशी राष्ट्र भी है जहां हिंदी भाषा का बोलबाला है.

व्यापारिक दृष्टिकोण से देखो तो किसी भी विनिर्माण या सेवा कंपनी को किसी अप्रयुक्त बाजार तक पहुँचने की आवश्यकता है-क्या वे वास्तव में इस बाजार को अनदेखा कर सकते हैं ? सरल सोच यह होनी चाहिए कि अगर कंपनी इन लोगो से उनकी भाषा सें संवाद कर सकती है तो कंपनी पायेगी की इतनी बड़ी संख्या वाले लोगो तक पहुँचने के लिए केवल एक भाषा पर खर्च करने की आवश्यकता है.

भारत को उभरती महाशक्ति बनाने में हिंदी की भूमिका-

भारतीय अर्थव्यवस्था जिसे पश्चिमी राष्ट्र शुरू से ही `the Economy` की संज्ञा देते थे.जो विदेशी भारत में आकर बसना चाहते है या यहां अपना व्यवसाय स्थापित करना चाहते है, उन्हें बेहतर परिणाम पाने के लिए हिंदी ज्ञान की आवश्यकता महसूस होती है. अंग्रेजी का ज्ञान ऊपरी दिखावे के लिए तो ठीक है किंतु हिंदी का ज्ञान आपको भारतीय संस्कृति की बारिकियों को समझने में सहायक है और यही बारिकियां आगे चलकर व्यवसाय में भी सहायक सिद्ध होती है.गुड़गाँव स्थित भाषा विशेषज्ञ श्री नीरज मेहता कहते हैं. विदेशी व्यवसायी जो अपने भारतीय समकक्षों के साथ घुल-मिल जाते हैं,वे यहां बहुत सफल होते हैं. मैं उन्हें अपने प्रस्तुतीकरण में अच्छे परिणाम के लिए ' नमस्कार', 'शुक्रिया' और 'धन्यवाद' जैसे शब्द सिखाता हूँ" मेहरा जी उन्हें सांस्कृतिक प्रशिक्षण भी देते है जिससे वे भारतीय ग्राहकों के साथ तुरंत तालमेल बिठाने में सक्षम हो जाते है.भारत में गैर- सरकारी संगठनों और संयुक्त राष्ट्र संगठनों के साथ काम करने वाले कई विदेशी शोध विद्वान और

लोग भी हिंदी सीखते हैं क्योंकि उनके क्षेत्रीय कार्य के लिए उन्हें स्थानीय लोगो से बात-चीत करना पड़ती है. विदेशों में हिंदी फिल्मों का बढ़ता प्रचलन हिंदी भाषा को बढ़ावा दे रहा है, खासतौर पर खाड़ी देशों में हिंदी फिल्मों की पहुंच बहुत बढ़ी है.विदेशी पर्यटक करोड़ो की संख्या में प्रत्येक वर्ष भारत घूमने आते है और उनमें से कई अपने यात्रा के स्थानीय अनुभव को रोचक बनाने के लिए हिंदी सीखने का प्रयास करते है.इन सभी के अलावा भारत सरकार, विदेश मंत्रालय के प्रयासों से विश्व पटल पर हिंदी और भारतीय संस्कृति को बढ़ावा मिला है.

इस प्रकार कहा जा सकता है की व्यापार जगत में केवल उत्पादन की गुणवत्ता से ही व्यापार सफल नहीं हो सकता बल्कि उसे उचित तरीके से पेश करना भी आवश्यक है. प्रदर्शनी में सफलता के प्रतिशत को बढ़ाने में भाषा एक अच्छे साधन के रूप में कार्य कर सकता है और उचित भाषा प्रयोग व्यापार को तेजी से आगे बढ़ाती है.

संदीप कुमार
सुरक्षा अधिकारी
क्षे.का. जलगाँव

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

30 जून 2024 को समाप्त तिमाही के वित्तीय परिणाम

- बैंक ने सभी व्यावसायिक मानदंडों पर सतत रूप से बेहतर प्रदर्शन प्रदर्शित किया है.
- शुद्ध लाभ वित्त वर्ष 24 की प्रथम तिमाही ₹ 418 करोड़ की तुलना में वित्त वर्ष 25 की प्रथम तिमाही के लिए 110.53% बढ़कर ₹ 880 करोड़ हो गया है.
- 30 जून 2024 को बैंक का कुल व्यवसाय वार्षिक आधार पर ₹ 52303 करोड़ (8.97%) की वृद्धि के साथ बढ़कर ₹ 583261 करोड़ से ₹ 635564 करोड़ हो गया.
- वार्षिक आधार पर सकल अग्रिम 13.99% बढ़कर ₹250615 करोड़ हो गया, जबकि पिछले वर्ष की समान अवधि में यह ₹ 219863 करोड़ था.
- रिटेल, कृषि और एमएसएमई (रैम) कारोबार में 18.81% की वृद्धि हुई. क्षेत्रवार वृद्धि क्रमशः 13.87% (₹ 72469 करोड़), 15.36% (₹ 47080 करोड़) और 30.20% (₹ 52111 करोड़) रही.
- सकल एनपीए वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 41 बीपीएस के सुधार के साथ 4.54% हो गया.
- वर्ष-दर-वर्ष आधार पर शुद्ध एनपीए 102 बीपीएस के सुधार के साथ 0.73% हो गया.
- प्रावधान कवरेज अनुपात वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 394 बीपीएस के सुधार के साथ 96.17% रहा.

www.centralbankofindia.co.in

माउंट आबू: राजस्थान का हिल स्टेशन

राजस्थान का एकमात्र हिल स्टेशन माउंट आबू, अरावली पर्वत श्रृंखला में स्थित है। यह स्थल न केवल अपने प्राकृतिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व भी रखता है। माउंट आबू वर्ष भर लाखों पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। यहाँ की शीतल जलवायु, हरियाली और दर्शनीय स्थल इसे एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल बनाते हैं।

घूमने का उचित समय-

सैलानी माउंट आबू पूरे वर्ष आते रहते हैं। घूमने का सबसे अच्छा समय अक्टूबर से मार्च के बीच का माना जाता है। इस अवधि में मौसम सुखद और शीतल रहता है, जो यहाँ की यात्रा के लिए उपयुक्त होता है। गर्मियों में तापमान 36 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच सकता है परंतु रातें ठंडी रहती हैं। मानसून में भी माउंट आबू की यात्रा की जा सकती है क्योंकि इस समय यहाँ की हरियाली और प्राकृतिक दृश्य अत्यंत मनोहारी होते हैं।

मुख्य आकर्षण-

माउंट आबू में अनेक दर्शनीय स्थलें हैं, जो पर्यटकों को अपनी ओर खींचते हैं।

1. **अचलेश्वर महादेव मंदिर-** माउंट आबू को अर्धकाशी भी कहा जाता है। मान्यता है कि यहाँ शिवजी के छोटे बड़े 108 मंदिर हैं। अचलेश्वर महादेव मंदिर में शिव के अंगूठे की पूजा होती है।

2. **दिलवाड़ा मंदिर-** यह जैन धर्म के तीर्थ स्थल हैं और अपनी उत्कृष्ट संगमरमर नक्काशी के लिए जाने जाते हैं। ये मंदिर 11वीं और 13वीं शताब्दी में निर्मित हुए थे और यहाँ की वास्तुकला अद्वितीय है।

3. **नक्की झील-** यह एक कृत्रिम झील है जो माउंट आबू का दिल मानी जाती है। चारों तरफ पहाड़ियों के बीच अद्भुत नजारा रहता है। यहाँ बोटिंग का भी आनंद लिया जा सकता है और झील के किनारे टहलते हुए सुंदर दृश्य देखे जा सकते हैं। पास में आइसक्रीम, उपहार हेतु सामान और राजस्थानी वस्त्रों की अनेक दुकानें हैं।

4. **गुरु शिखर-** यह यहाँ के अरावली पर्वत श्रृंखला का सबसे ऊँचा बिंदु है। यहाँ से चारों ओर का मनोरम दृश्य देखा जा सकता है। यहाँ एक पुराना बजरंगबली का और शिव मंदिर भी स्थित है। दो बड़े घंटे लगे हैं जिसे बजाने पर दूर तक आवाजें जाती हैं। सैलानी यहाँ राजस्थान के पारम्परिक वस्त्र में अपना फोटो खिंचवाते हैं। माउंट आबू भ्रमण इस स्थान के बिना पूर्ण नहीं हो सकता। यहाँ आना एक अद्भुत अनुभव होता है।

5. **सनसेट पॉइंट-** यह माउंट आबू का एक प्रसिद्ध स्थल है जहाँ से सूर्यास्त का अद्भुत दृश्य देखा जा सकता है। यहाँ का सूर्यास्त दृश्य पर्यटकों के बीच बहुत लोकप्रिय है।

6. **टॉड रॉक-** यह एक प्राकृतिक चट्टान है जो मेंढक के आकार की है। यहाँ से माउंट आबू और नक्की झील का शानदार दृश्य देखा जा सकता है।

7. **अचलगढ़ किला-** यह किला 14वीं शताब्दी में बना था और यहाँ से अरावली पर्वत श्रृंखला का शानदार दृश्य देखा जा सकता है।

8. **वैक्स म्यूजियम-** यहाँ एक वैक्स म्यूजियम है जिसमें अनेक वैज्ञानिकों, राजनेताओं, फिल्मी कलाकारों और महापुरुषों की मोम से बनी प्रतिमाएँ हैं। टिकट कटाकर देख सकते हैं, साथ में फोटो ले सकते हैं। यहीं बगल में एक हॉरर हाउस भी है जिसमें भूतों के बीच से निकलने का अनुभव होगा, कमजोर ह्रदय वाले सोचकर जाएँ।

9. **ब्रह्माकुमारी पीस पार्क-** यहाँ विश्व प्रसिद्ध ब्रह्माकुमारी का एक शान्ति पार्क है जिसमें अनेक फूलों और औषधीय पौधों के बीच बैठकर अद्भुत सुगन्धित प्राकृतिक वातावरण की अनुभूति होती है। यहाँ ब्रह्माकुमारी से सम्बंधित जानकारी भी दी जाती है एवं कुछ आयुर्वेदिक औषधियों की बिक्री भी होती है।

10. **वैली व्यू रॉक-** पीस पार्क और गुरु शिखर के बीच यह स्थान है जहाँ से सामने हरियालियों के बीच सुन्दर घाटी दिखती है।

आने का रास्ता-

माउंट आबू पहुँचने के लिए कई विकल्प उपलब्ध हैं।

1. **सड़क मार्ग-** माउंट आबू सड़क मार्ग से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है। अहमदाबाद, उदयपुर और जयपुर से यहाँ नियमित बस सेवाएं चलती हैं। टैक्सी या निजी वाहन से भी यहाँ आसानी से पहुँचा जा सकता है।

2. **रेल मार्ग-** माउंट आबू का नजदीकी रेलवे स्टेशन आबू रोड है, जो माउंट आबू से लगभग 26 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। आबू रोड स्टेशन से माउंट आबू तक टैक्सी या बस द्वारा पहुँचा जा सकता है।

3. **वायु मार्ग-** माउंट आबू का नजदीकी हवाई अड्डा उदयपुर का महाराणा प्रताप हवाई अड्डा है, जो यहाँ से लगभग 175 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। उदयपुर से माउंट आबू के लिए टैक्सी या बस सेवाएँ उपलब्ध हैं।

अन्य आकर्षण और गतिविधियाँ-

माउंट आबू में पर्यटकों के लिए कई अन्य आकर्षण और गतिविधियाँ भी हैं। यहाँ की स्थानीय बाजारों में राजस्थानी हस्तशिल्प और कपड़ों की खरीदारी की जा सकती है। साथ ही, माउंट आबू वाइल्डलाइफ सैंक्चुअरी में वन्य जीवों और पक्षियों को देखने का अवसर भी मिलता है। एडवेंचर के शौकीनों के लिए ट्रेकिंग और कैंपिंग की सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं।

माउंट आबू अपनी प्राकृतिक सुंदरता, ऐतिहासिक महत्व और धार्मिक स्थलों के कारण एक उत्कृष्ट पर्यटन स्थल है। यहाँ का शांतिपूर्ण वातावरण और सुंदर दृश्य किसी भी यात्री के लिए एक अविस्मरणीय अनुभव प्रदान करता है। आप परिवार के साथ घूमने आये हों या दोस्तों के साथ, माउंट आबू में हर किसी के लिए कुछ न कुछ खास अवश्य है।

सूचना- अपने बैंक का अवकाश गृह/ होलीडे होम माउंट आबू में तैयार है। जोधपुर क्षेत्रीय कार्यालय से इसकी सूचना केन्द्रीय कार्यालय को दे दी गयी है। यह एचआरएमएस में किसी भी दिन प्रारंभ हो जायेगा।

अवकाश गृह/ होलीडे होम का पता है-

डॉक्टर्स कॉटेज, ब्रह्माकुमारी पीस पार्क के पास, गुरु शिखर रोड, माउंट आबू, ओरैया, राजस्थान, पिन- 307501. स्टाफ सदस्यों से आग्रह कि घूमने हेतु अवश्य आयें।

विभूति बी. झा
क्षेत्रीय प्रमुख
क्षेत्रीय कार्यालय, जोधपुर

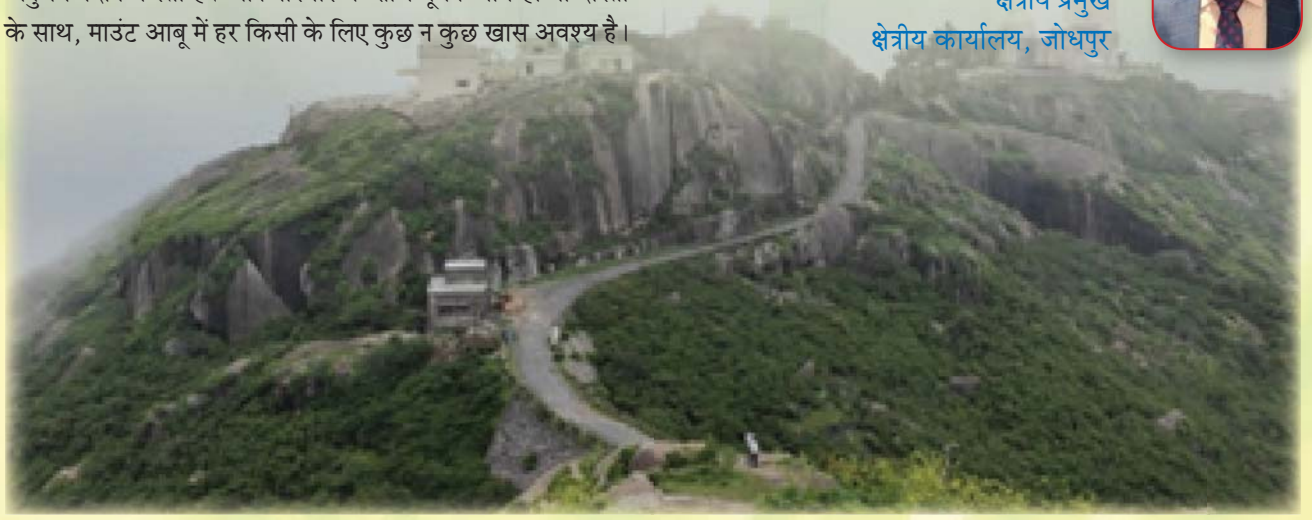

हिन्दी में प्रवीणता

यदि किसी कर्मचारी ने-

(क) मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है;या

(ख) स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या

(ग) यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है;

तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है .

ESG

ESG stands for ENIVERONMENT, SOCIAL, GOVERNANCE. These are called the three pillars in the ESG framework and they represent the three main subject areas on which companies are expected to report. ESG is a framework used to assess an organization's business practices and performance on various sustainability and ethical issues. It also provides a way to measure business risks and opportunities in those areas.

The goal of ESG is to include all non-financial risks and risks inherent in the day-to-day activities of a company. This is a kind of mutual fund through which good stocks of the company are represented. It is also called **socially responsible investing**. Here investments are made keeping in mind the interest of the environment, humans and the economy. In simple terms, suppose you want to invest in something so that it keeps growing over a defined period of time. In such a case, while investing in a company, you calculate all the financial parameters, but being a responsible citizen, you can also consider non-financial parameters such as environment, society and the world. ESG investing is an approach where you invest in companies that work towards making the world a better place.

The term ESG first came to prominence in a report called **"Who Cares Wins"** in 2004, which was a joint initiative of financial institutions at the invitation of the United Nations (UN). The term was coined by the United Nations Global Compact. The 2021 conference of Parties (CoP26) on climate change was held in Glasgow, Scotland, UK with the global community negotiating ways to manage climate change and mitigate its impact while ensuring that no adverse effect its felt on employment, food security, and living standards of the masses.

So far as our motherland India is considered, floods, droughts, hurricanes, rising temperatures and other climate change related events are frequently faced at different parts. It has become necessary to take immediate and consequential steps towards climate change adaptation and mitigation. Otherwise , the global community is set to lose trillions of dollars , millions of jobs and thousands of valuable lives.

India at CoP26 pledged to achieve net zero emissions by 2070. This is in line with the policies adopted by Indian regulators over the past few years.

ESG criteria includes:

Environment: This includes aspects that are related to the environmental impact of a company and how it protects /safeguards the environment. This can include a company's carbon footprint, carbon emissions, toxic chemicals involved in its manufacturing processes, energy use, water management and waste disposal. The corporate policies addressing climate change and sustainability efforts that make up its supply chain. Companies that are taking steps to protect the environment are being given more priority by investors.

Social: How does the company improve its social impact, both within the company/ financial institution and in the broader community? Social factors include every thing from LGBTQ+ equality, racial diversity in both the executive suite and staff over all and inclusion programs and hiring practices. The behavior of the company towards its employees, customers, suppliers and the communities where it operates. This includes workers' rights, workplace safety, consumer protection and community involvement. A company that fulfills social responsibility has a better image in the society.

Governance: How do the company's board and management drive positive change? Governance includes the company's management and leadership, board composition, executive pay and shareholders' rights. Companies with good governance policy give priority to transparency and ethics.

Why should a company/financial institution adopt ESG?

The ESG framework helps identify, organize, analyze, prioritize various business risks and make decisions accordingly. "ESG is primarily a risk management tool," says Andrew Poreda, vice president of Maze Advisory Services in Austin, Texas, and senior research analyst at EMG. "ESG assessments help corporations and investors better assess those risks."

helps in areas which were previously under-employed by various stakeholders. It can also be used as a way to identify opportunities in a constantly evolving landscape."

ESG investing refers to how companies score on these responsibility metrics and standards for potential investments. Environmental criteria measure how a company protects the environment. In today's global economy, companies are not only focused on making profits, but they are also emphasizing environmental, social and governance (ESG) factors.

Benefits of ESG:

1. **Attractive to investors:** Companies that adopt ESG standards are considered stable and safe investment options.

2. **Long-term benefits:** By following ESG policies, companies lead to sustainable growth by balancing the environment and society.

3. **Positive Image:** Companies that practice environmental and social responsibility have a positive image among consumers and the community.

Who opposes ESG investing?

ESG investing is often opposed by conservatives who feel that ESG investing favors a political ideology and puts pressure on companies to adopt 'conscious' policies they don't support.

What is the most important part of ESG?

The main purpose of ESG investing is to integrate green and socially responsible factors into portfolios to produce long-term positive impact. Again ESG provides investors with a tool to assess the potential performance and impact of their investments in an ethical and sustainable way. This type of investing benefits not only shareholders, but also other stakeholders such as the environment, customers, employees and local communities. By considering a company's environmental, social and governance practices, investors can make more informed decisions about where to invest their money. The most common environmental issues are the effects of climate change such as floods or fires.

Who supports ESG and why do they support it?

ESG is considered a progressive cause. Advocates argue that traditional shareholder capitalism is too focused on returns to shareholders while ignoring the negative impacts on non-shareholders. ESG is offered as an alternative that expands the scope of issues considered by fiduciaries.

Generally, the investment industry, investors, climate advocates, and Democrats support it, but potentially for different reasons. The investment industry supports it because integrating ESG factors into the investment process can lead to prudent risk management and potentially better retirement outcomes for millions of consumers. Investors are increasingly demanding ESG because they are asserting their right as consumers to put their investment dollars into companies they believe in. Climate advocates likely see it as an opportunity to leverage finance as a tool to accelerate the transition to a low-carbon economy and prevent climate disaster. Democrats likely support it for all of these reasons.

Who doesn't support ESG and why do they advocate against it?

A recent article published in the Harvard Business Review states that not only are ESG investors suffering in poor performance, but they are also not getting the ESG value they expected. ESG is seen as the tip of a larger culture war where climate activism is being pushed through various institutions (the education system is another example) to a naïve general public, basically bypassing the governing bodies in our country that should be shaping these issues through legislation. Banning 'ESG' in ERISA plans is a step towards eliminating this alleged power grab from the hands of asset managers. Another interesting argument against ESG is that it is an attempt to undermine 'free markets'and is against capitalism.

Finally, many companies, under pressure to adopt ESG policies they do not agree with, oppose the ESG classification because they feel the somewhat narrow scope of the ESG classification does not fairly represent their company's products or corporate practices. Those who are skeptical of ESG believe they can achieve greater investment success by ignoring it. In short, "Opponents of ESG argue that failing to consider the factors weakens corporate competitiveness and will result in lower returns for shareholders.

With these differing views and the fact that these opinions represent broad beliefs on both sides of the ESG issue, perhaps the market will be the ultimate arbiter of the ESG concept."

Which Indian companies have good ESG scores?

Indian companies with good ESG scores are Adani Ports & Special Economic Zone Ltd., Grasim Industries Ltd., Tata Consultancy Services Ltd. It has been observed that manufacturing companies, on average, score much better than service companies overall and across all criteria.

Why is ESG important in 2024?

ESG Regulation: A period of contemplation, uncertainty and increasing enforcement. In recent years, policymakers around the world have taken extensive steps to incorporate ESG into their economies to address climate and environmental challenges, make global trade more fair, and bring about a just transition.

Approximately Global ESG assets predicted to hit $40 trillion by 2030. Report says that , India's ESG investment will increase up to 30% within year 2030. Currently ESG investing for different countries is as below:

COUNTRY	% OF ESG INVESTING
INDIA	7%
JAPAN	18%
EUROPEAN UNION	49%
CANARA	51%
AUSTRALIA	63%

How does a company get an ESG rating?

Companies are assessed based on publicly available information such as media sources and annual reports, with each material assessed across 'E' (Environmental), 'M' (Social) and 'G' (Governance) topics. Scores are given for each of these factors, as well as an overall score. Investors use these unique scores as a proxy for ESG performance.

Guidelines issued by RBI on ESG for the regulated entities on 08th February 2023 is as below:

1. Broad framework for acceptance of Green deposits;
2. Disclosure framework on Climate related Financial Risks;
3. Guidelines on Climate Scenario Analysis and stress testing

Building Green finance

The intent is to support the development of green finance by assisting borrowers and financiers to take into account the environmental aspect and impacts or the environmental performance of the project, asset or activity for which funds are sought.

Instruments to Fund Green Financial Project:

Governments, Banks, Private investors and charities can finance "green" initiatives using a variety of methods. They can be broadly divided into four categories: loan, equity, bonds and risk-mitigation products.

Green loans and green bonds are two main categories of debt securities. Only banks offer green loans, but inveestors purchase green bonds which are otherly known ad climate bonds.

Benefits of Green Investment:

- Providing an additional source of financing for environment friendly projects.
- Making it possible to finance more environment friendly projects over the long term by reducing the maturity mismatch.
- Improving the issuer's reputation and offering potential cost advantages.
- Making newly developed environment friendly financial products accessible to investors who are committed to the long term.

Who assigns ESG ratings?

Some of the most common are ESG rating agencies & firms:

Bloomberg ESG Data Services, which provides ESG data for more than 11,700 companies in 102 countries.

Corporate Knights Global 100, an annual global ranking of corporate sustainability performance by Toronto-based magazine Corporate Knights. It measures how your business integrates environmental, social and governance practices into operations, as well as your business model, its impact and its sustainability.

Who runs ESG indices?

The ESG indices are run by the FTSE. The FTSE Global ESG Equal Weighted Index and the FTSE Global ESG High Dividend Low Volatility Equal Weighted Index are owned and administered by FTSE.

ESG and the Banking Industry:

The importance of ESG norms is rapidly growing across various industries, and the banking industry is no exception.

Importance of ESG in the Banking Industry:

The banking industry has a profound impact on society and the environment. Banks are financial institutions that provide financial assistance to businesses and individuals. Therefore, compliance with ESG norms in the banking industry is extremely important.

Environment: The banking industry plays an important role in promoting environmental sustainability. Banks can comply with environmental norms in the following ways:

1. **Green finance:** Providing financial assistance to environmental friendly projects.
2. **Reducing carbon footprint:** Reducing energy consumption in banking operations.
3. **Environmental risk assessment:** Assessing environmental risk before investing in projects.

Social: The social aspects of the banking industry are also gaining importance. These include:

1. **Financial inclusion:** Providing financial services to all sections of society.
2. **Community development:** Contributing to the development of local communities.
3. **Social responsibility:** Taking care of the rights and welfare of its employees and customers.

Governance: Governance norms promote sustainability and transparency of the banking industry. These include:

1. **Transparency:** Maintaining transparency in financial transactions and policies.
2. **Ethical practices:** Following ethical business practices.
3. **Risk management:** Implementing effective risk management strategies.

Benefits of ESG in the banking industry:

1. **Improved reputation:** Banks that follow ESG norms enjoy higher respect in society.
2. **Long-term sustainability:** Following ESG policies ensures the long-term sustainability and profitability of a bank.
3. **Corporate sustainability:** Governance norms begin with the banking industry's value system and principle-based way of doing business. This means operating in ways that meet at least basic human rights, labour, environment and anti-corruption responsibilities.
4. **Investor attractiveness:** Banks that follow ESG standards are more attractive to investors.

ESG investing is not just a financial strategy but it is a symbol of a responsible and sustainable business model. It has become a need of the hour for companies to adopt ESG standards which provides them long-term success and reputation in the society. Many political and non profit organizations support ESG investment principles with the belief that ESG advocacy efforts will motivate companies to adopt policies consistent with their organizational goals. Finally, many investors, especially younger generations, support ESG principles because it gives them the opportunity to do good and avoid harm with their investment dollars.

Following ESG norms in the banking industry is not only an act of ethical and social responsibility but also as a business strategy. It helps banks to fulfil their responsibilities towards the environment and society and leads them to long-term success.

Sabita Patra
Sr. Manager
ZCC Zonal Office Delhi

हमारे बैंक के माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम.वी. राव द्वारा दिनांक 27.04.2024 को आंचलिक कार्यालय, लखनऊ का दौरा किया गया. इस अवसर पर उन्होंनें स्थानीय शाखा प्रबंधकों एवं स्टाफ सदस्यों के साथ बैठक की और उपयोगी मार्गदर्शन प्रदान किया.

चंडीगढ़ अंचल के करनाल क्षेत्र की नई शाखा निसिंग का उद्घाटन करते हुये अंचल प्रमुख श्री शीशराम तुन्दवाल और क्षेत्र प्रमुख, करनाल श्री हरपाल सिंह तथा चंडीगढ़ क्षेत्र प्रमुख श्री सुधांशु शेखरएवं स्टाफ सदस्य।

दिनांक 02.05.2024 को इंडियन कोस्ट गार्ड के कर्मचारियों को रियायती दरों पर रिटेल ऋण प्रदान करने के लिए इंडियन कोस्ट गार्ड एवं सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के बीच एमओयू किया गया. इस अवसर पर श्री जे एस साहनी, अंचल प्रमुख एमओयू की कॉपी इंडियन कोस्ट गार्ड को प्रदान करते हुए. साथ में दिखाई दे रहे हैं श्री अनिल अग्निहोत्री, क्षेत्रीय प्रमुख दिल्ली दक्षिण.

दिनांक 07.08.2024 को पटना में आयोजित क्रेडिट आउटरिच कार्यक्रम में केन्द्रीय कार्यालय से महाप्रबंधक श्री डी पी खुराना, अंचल प्रमुख एस जय शंकर प्रसाद एवं क्षेत्रीय प्रमुख एल सी मीणा द्वारा 189 करोड़ की ऋण स्वीकृति पत्र वितरित की गई.

अशोका होटल स्थित शाखा को महिला शाखा नामित होने पर अंचल प्रमुख श्री जे एस साहनी एवं केन्द्रीय कार्यालय की महाप्रबंधक-मासंवि सुश्री पॉपी शर्मा उदघाटन करते हुए. साथ में दिखाई दे रहे हैं क्षेत्रीय प्रमुख श्री अनिल अग्निहोत्री, अशोका होटल शाखा की मुख्य प्रबंधक श्रीमती अुनभा सिंह एवं अन्य अधिकारीगण.

दिनांक 26.06.2024 को अंचल प्रमुख श्री धारासिंग नायक एवं क्षेत्रीय प्रमुख श्री कनक राजू ने हैदराबाद क्षेत्राधीन एक नई शाखा का उद्घाटन किया. इस अवसर पर कुछ विशिष्ट ग्राहक भी उपस्थित थे.

टीआईएफआर शाखा, दक्षिण मुंबई क्षेत्र, महिला शाखा के उदघाटन के अवसर पर केक काटते हुई सुश्री पॉपी शर्मा, महाप्रबंधक-मानव संपदा प्रबंधन, साथ में है बायी ओर श्री विरेन्द्र मेहता, क्षेत्रीय प्रमुख, दक्षिण मुंबई तथा दाई ओर श्री अश्वनी धींगडा, अंचल प्रमुख, मुम्बई अंचल.

आंचलिक कार्यालय चेन्नै में दिनांक 05 जुन, 2024 को पर्यावरण दिवस के अवसर वृक्षारोपन करते हुए अंचल प्रमुख श्री अरविंद कुमार, क्षेत्रीय प्रमुख श्री पीके अग्रवाल एवं अन्य कार्यपालकगण.

दिनांक 05.06.2024 को विश्व पर्यावरण दिवस के सुअवसर पर आंचलिक कार्यालय गुवाहाटी द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस अवसर पर उपस्थित थे श्री वी. के. श्रीवास्तव, अंचल प्रमुख; श्री कृष्ण कुमार, उप अंचल प्रमुख और अन्य स्टाफ सदस्यगण.

राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी आयोग के अध्यक्ष, श्री एम. वेंकटेसन जी ने आंचलिक कार्यालय रायपुर में सफाई कर्मचारियों की स्थिति की समीक्षा की. इस समीक्षा बैठक में श्री वी आर रामा कृष्णा नायक, अंचल प्रमुख भी उपस्थित रहें.

क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर में ग्राहक मिलन समारोह का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में सहभागिता के लिए केंद्रीय कार्यालय से श्री बी बी मुतरेजा, महाप्रबंधक, श्री तरसेम सिंह जीरा, अंचल प्रमुख एवं श्री आरके सिंह, क्षेत्रीय प्रमुख उपस्थित रहे.

कोलकाता अंचल द्वारा अनुपयोगी वस्त्रों को इकट्ठा करके एनजीओ संस्थानों को सुपुर्द करने के लिए एक अभियान का शुभारंभ करते हुए वस्त्र संग्रह बैंक की स्थापना की गई. इस शुभवसर पर अंचल प्रमुख श्री पी.सी.खुराना जी, उप अंचल प्रमुख श्री पी संपत कुमारन जी, क्षेत्रीय कार्यालय दक्षिण के प्रमुख श्री एम. पिचैया जी, उपस्थिति रहे.

दिनांक 06.06.2024 को अहमदाबाद अंचल के अंतर्गत अहमदाबाद क्षेत्र की प्रथम महिला शाखा मीठाखली का शुभारंभ माननीया सुश्री लवली सिन्हा, डीएसपी, अहमदाबाद द्वारा किया गया. इस अवसर पर अंचल प्रमुख श्रीमति कविता ठाकुर भी उपस्थित थी.

दिनांक 03 जुलाई, 2024 को नासिक क्षेत्र में अंचल प्रमुख श्री अजय कुमार सिंह जी की अध्यक्षता में आयोजित समीक्षा बैठक में अंचल प्रमुख के करकमलों द्वारा ग्राहकों को साख स्वीकृति पत्र प्रदान किये गए.

माउंट आबू में बैंक के नए

हॉलिडे होम का शुभारंभ

पता: माउंट आबू हॉलिडे होम, डॉक्टर कॉटेज, गुरु शिखर रोड, वैक्स म्यूजियम के पास,
ओरिया माउंट आबू, सिरोही, राजस्थान - 307501

राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2024-25 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र. सं.	कार्य विवरण	''क'' क्षेत्र	''ख'' क्षेत्र	''ग'' क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. 'क' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 100% 2. 'क' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 100% 3. 'क' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 65% 4. 'क' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 100%	1. 'ख' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 90% 2. 'ख' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 90% 3. 'ख' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55% 4. 'ख' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 90%	1. 'ग' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 55% 2. 'ग' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 55% 3. 'ग' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55% 4. 'ग' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/ उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों	40%	30%	20%
		(न्यूनतम अनुभाग) सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, ''क'' क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, ''ख'' क्षेत्र में 25% और ''ग'' क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए		

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "सेंट्रल" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911
Azadi Ka Amrit Mahotsav
G20
ओज़ोन की सुरक्षा,
जीवन की हिफ़ाज़त